दैनिक
नव प्रदेश
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्
प्रदेश के साथ पूरा देश...

अंदर के पृष्ठों पर ◆◆ 2 | छत्तीसगढ़ 4 | अभिव्यक्ति 11 | कारोबार/खेल

रायपुर, शुक्रवार, 20 मार्च 2026 | कृष्ण पक्ष-द्वितीय, | विक्रम संवत -2083 / वर्ष-15 अंक- 40 | पृष्ठ-12 मूल्य-4 रुपए | रायपुर, बिलासपुर, भोपाल, जबलपुर व रांची से एक साथ प्रकाशित

जमीनी स्तर पर केंद्रीय बलों का सराहनीय योगदान, प्रशासनिक और कैरियर लाभों में रखा जा रहा पीछे!

प्रसाद नायडू/जगदलपुर

नव प्रदेश विशेष

सीएपीएफ यानी केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में शामिल सीआरपीएफ, बीएसएफ, सीआईएसएफ, आईटीबीपी और एसएसबी में इन दिनों कैडर अधिकारियों और आईपीएस अधिकारियों का डेपुटेशन पर आकर बल पर काबिज होने का मामला गर्माया हुआ है। छत्तीसगढ़ में नक्सल क्षेत्रों में इन 5 सीएपीएफ के अफसर और कर्मचारी तैनात हैं। सुप्रीम कोर्ट के पहले आदेश के बाद इनमें प्रमोशन की उम्मीद जागी थी, लेकिन पदोन्नति में ठहराव से मायूस भी हैं।

सीएपीएफ बलों के अधिकारियों का कहना है कि सीएपीएफ में भर्ती होने वाले डायरेक्ट असिस्टेंट कमांडेंट अधिकारियों को पहला प्रमोशन मिलने में 16 साल से अधिक का वक्त लग रहा है। जबकि यहीं आईपीएस अधिकारी इतने सालों में डीआईजी ■ शेष पृष्ठ 8 पर

नक्सल क्षेत्र बस्तर में जमीनी हकीकत

- छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में नक्सल विरोधी अभियानों में जमीनी स्तर पर लड़ाई का नेतृत्व मुख्यतः सीआरपीएफ के अधिकारी और जवान ही करते हैं। अग्रिम मोर्चे पर तैनाती और ऑपरेशन केंद्रीय सुरक्षा बल द्वारा किया जाता है।
- जंगलों और दुर्गम इलाकों में वास्तविक जोखिम उठाने वाले भी यही बल हैं। केंद्रीय उपक्रमों की सुरक्षा का भार सीआईएसएफ और सरहदों पर केंद्रीय बल तैनात हैं। कई अभियानों में नेतृत्व, रणनीति और कार्रवाई का केंद्रीय बल के अधिकारी ही होते हैं
- सुकमा और दंतेवाड़ा जैसे क्षेत्रों में बड़े ऑपरेशनों के दौरान सीआरपीएफ ने अग्रिम पंक्ति में रहकर नक्सलियों का मुकाबला किया है। कई बार उच्च जोखिम वाले एम्बुश और सर्च ऑपरेशन केंद्रीय पुलिस बल की टीमों द्वारा संचालित किए जाते हैं।

- **जो मैदान में लड़ रहा है, वही ठहर गया है और जो नीति बना रहा है वह मैदान में ही नहीं**
- **सीएपीएफ अफसरों की पदोन्नति पर संकट, 16 साल बाद भी नहीं मिला पहला प्रमोशन**
- **केंद्रीय बलों के जवानों को ओल्ड पेंशन की बात भी कोर्ट तक पहुंची**

एआई इमेज

16 साल बाद भी पहला प्रमोशन नहीं

सीआरपीएफ के पूर्व सहायक कमांडेंट व सुप्रीम कोर्ट के वकील सर्वेश त्रिपाठी का कहना है कि यहां सीएपीएफ बलों में कैडर अधिकारियों के प्रमोशन की स्थिति बहुत खराब है। हालत यह है कि यहां 16 साल की सेवा पूरी करने के बाद भी असिस्टेंट कमांडेंट के रूप में भर्ती हुए अधिकारियों को उनका पहला प्रमोशन तक नहीं मिल सका है। जिससे की वह डिप्टी कमांडेंट बन सकें। जबकि, यहीं 2012 बैच के आईपीएस अधिकारी, जिनकी सेवा अवधि लगभग 14 वर्ष है। वह डीआईजी तक बन गए और सीएपीएफ में सीधे डीआईजी के पद पर तैनात किए जा रहे हैं। हाल यह हो रहा है कि सीएपीएफ के करीब 13 हजार कैडर अधिकारी विभिन्न रैंकों पर गंभीर पदोन्नति ठहराव का सामना कर रहे हैं। विशेषकर सीआरपीएफ और बीएसएफ में स्थिति और भी गंभीर है। यह स्थिति कैडर अधिकारियों के लिए अत्यंत निराशाजनक और मनोबल तोड़ने वाली है। सरकार को चाहिए कि वह सीएपीएफ को भी वही ऑरिजनल ग्रुप-ए सर्विस का दर्जा दे। जो की अन्य 57 समूह-'ए' सेवाओं को प्राप्त है, लेकिन इन 5 सीएपीएफ को यह अभी तक नहीं मिला है। केंद्रीय बलों के जवानों को ओल्ड पेंशन मिलना चाहिए। गृहमंत्री ने 2019 में जवानों को 100 दिन छुट्टी देने का आश्वासन दिया था, लेकिन आज तक पूरा नहीं हुआ है।

आज बेबाक

ये बढ़िया है। गधे पालो और लाखों में खेलो। वैसे हमारे देश में दो पैर वाले गधों की कमी नहीं है। एक ढूंढो हजार मिलते हैं, नगद ढूंढो उधार मिलते हैं। ऐसे गधे पालने वाले बड़े फक्र से गाते हैं - मेरा गधा गधों का लीडर कहता है दिल्ली जाकर अपनी मांगें मनवाऊंगा नहीं तो घास नहीं खाऊंगा..। इसके चलते चार पैर वाले गधों की पूछ परख कम होने से उनकी संख्या घट रही है। नतीजतन सरकार ने राष्ट्रीय पशुधन योजना अंतर्गत गधा पालने के लिए पचास लाख सब्सिडी देने का निर्णय लिया है। मतलब अब गधे भी जमकर खीर खाएंगे।

विधानसभा सत्र : छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंत्र्य विधेयक-2026 विधानसभा में पेश, विपक्ष ने किया कार्यवाही का बहिष्कार

छत्तीसगढ़ में अब धर्मांतरण कराने पर उम्रकैद 25 लाख लगेगा जुर्माना, मददगार जाएंगे जेल

रायपुर/नवप्रदेश। प्रदेश में लंबे समय से धर्मान्तरण को लेकर लगातार चल रहे आरोप-प्रत्यारोप, वाद-विवाद के बीच गुरुवार को साय सरकार ने विधानसभा में छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंर्त्र्य विधेयक- 2026 पेश कर दिया। संभावना है कि बजट सत्र के अंतिम दिन इसे सदन द्वारा पारित भी कर दिया जाएगा, इससे पहले लल्लूराम डॉट कॉम आपको विधेयक के संबंध में अहम जानकारी दे रहा है।

छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंर्त्र्य विधेयक 2026 छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में लागू छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंत्रय अधिनियम 1968 का स्थान लेगा। छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंत्रय अधिनियम 1968 में धर्मांतरण ■ शेष पृष्ठ 8 पर

31 बिंदुओं में धर्मांतरण को परिभाषित किया गया

छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंर्त्र्य विधेयक- 2026 में छह अध्यायों में 31 बिंदुओं में वैध-अवैध धर्मांतरण को परिभाषित करते हुए निहित सजा और जुर्माने का प्रावधान रखा गया है। विधेयक में अवैध तरीके से धर्मांतरण कराने पर 7 से 10 साल तक की जेल और कम से कम 5 लाख रुपये जुर्माने का प्रावधान है। यदि पीड़ित नाबालिग, महिला, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति या अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित है, तो सजा 10 से 20 साल तक की जेल और कम से कम 10 लाख रुपये जुर्माना का प्रावधान है।

विधेयक 20 साल तक लंबित क्यों रखा : दीपक

पीसीसी चीफ दीपक बैज ने रायपुर में मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि धर्म स्वातंर्त्र्य विधेयक को लेकर बैज ने सवाल उठाते हुए कहा कि यह बिल बीजेपी की सरकार ने 2006 में लाया था और 2006 से 2018 तक बीजेपी की सरकार रही। उन्होंने पूछा कि '20 साल तक बिल लंबित क्यों रखा गया और अब राज्यपाल द्वारा वापस भेजे जाने का क्या कारण है? सरकार को इसका जवाब देना चाहिए।'

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने सदन में रखा विधेयक

गुरुवार को डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने धर्म स्वातंर्त्य विधेयक विधेयक पेश किया। जिस पर नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने विधेयक पर आपत्ति जताते हुए कहा कि मध्यप्रदेश समेत 11 राज्यों में यह विधेयक सुप्रीम कोर्ट में है। इन मामलों में अब तक कोई फैसला नहीं हुआ है। इसलिए सदन में इस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए। नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत के जवाब पर विधायक अजय चंद्राकर ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष कन्फ्यूज हैं। बिना तथ्यों के आधार पर सुप्रीम कोर्ट को बीच में ला रहे हैं।

आसंदी ने विपक्ष की आपत्तियों को किया खारिज

विपक्ष की आपत्तियों पर डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने जवाब देते हुए कहा कि, सुप्रीम कोर्ट ने कोई स्टे नहीं दिया है और नए कानून बनाने पर भी कोई मनाही नहीं है। इस विषय पर सदन में चर्चा की जाएगी, जब सभी पक्ष आएंगे। डिप्टी सीएम के जवाब के बाद आसंदी ने विपक्ष की आपत्तियों को खारिज कर दिया। आसंदी की अनुमति के बाद विजय शर्मा ने विधेयक का पुन:स्थापन किया। जिसके बाद विपक्ष ने धर्म स्वातंर्त्र्य विधेयक पर चर्चा का बहिष्कार करते हुए दिनभर सदन की कार्यवाही का बहिष्कार कर दिया।

छत्तीसगढ़ के आईएएस रवि मित्तल को पीएमओ में मिली बड़ी जिम्मेदारी

- **डिप्टी सेक्रेटरी बनाए गए, अभी छत्तीसगढ़ में जनसंपर्क आयुक्त की जिम्मेदारी संभाल रहे**

रायपुर/नवप्रदेश। केंद्र सरकार ने छत्तीसगढ़ कैडर के 2016 बैच के आईएएस अधिकारी रवि मित्तल को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में डिप्टी सेक्रेटरी पद पर नियुक्त किया है। यह नियुक्ति कैबिनेट की नियुक्ति समिति की मंजूरी के बाद की गई है।

कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा जारी आदेश के मुताबिक, रवि मित्तल का कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तारीख से चार वर्ष का होगा या अगले आदेश तक प्रभावी रहेगा। प्रशासनिक हलकों में इस नियुक्ति को अहम माना जा रहा है, क्योंकि प्रधानमंत्री कार्यालय में डिप्टी सेक्रेटरी का पद नीतिगत समन्वय और उच्च स्तरीय निर्णय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रवि मित्तल वर्तमान में छत्तीसगढ़ जनसंपर्क आयुक्त की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। इससे पहले वे जशपुर जिला कलेक्टर के रूप में काम कर चुके हैं।

महिला ने निगम अफसर से ठगे 45 लाख

सरगुजा/नवप्रदेश। अंबिकापुर नगर निगम के रेवेन्यू इंस्पेक्टर से 45 लाख की ठगी हुई है। गुजरात की 1 महिला पिछले 7 सालों से उनके घर देशी घी बेचने आती थी। जिससे आरआई उन पर भरोसा करने लगे थे। इसी बात का फायदा उठाकर ठग महिला ने नकली सोने के बिस्किट देकर 20 तोला असली सोने के जेवर और 15 लाख कैश ले लिए। मामला सरगुजा थाना क्षेत्र का है। ठग ने घर में अपनी बेटी की शादी होने का झांसा ■ शेष पृष्ठ 8 पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 24 घंटे में पांच राष्ट्राध्यक्षों से बातचीत

नई दिल्ली/ए.। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 घंटे के दौरान 5 देशों के राष्ट्राध्यक्षों से फोन पर बात की। पीएम ने गुरुवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि उन्होंने फोन पर बातचीत के दौरान क्षेत्र में तनाव कम करने, संवाद बढ़ाने और शांति बहाली की जरूरत पर जोर दिया। पीएम ने बताया कि उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक, मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम और जॉर्डन के राजा किंग अब्दुल्ला से बातचीत की। इससे पहले विदेश मंत्रालय ने बताया कि पीएम ने कुवैत के क्राउन प्रिंस से भी बात की थी।

आरोपी छात्र को हाईकोर्ट ने दी सशर्त जमानत

- **40 लीटर महुआ शराब रखने के जुर्म में पुलिस ने किया था गिरफ्तार**

बिलासपुर/नवप्रदेश। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा ने 12वीं कक्षा के एक छात्र को सशर्त जमानत दी। 40 लीटर महुआ शराब रखने के जुर्म में पुलिस ने 12वीं कक्षा के एक छात्र के खिलाफ मामला बनाया और उसे जेल में डाल दिया। छात्र बीते 22 फरवरी से जेल में बंद था। स्टूडेंट ने अपने आपको निर्दोष बताने के साथ ही बोर्ड परीक्षा का हवाला देते हुए जमानत की गुहार हाई कोर्ट में लगाई थी।

जमानत याचिका की सुनवाई चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा के सिंगल बेंच में हुई। मामले की सुनवाई के बाद चीफ जस्टिस ने छात्र को सशर्त जमानत दे दी है। छत्तीसगढ़ सरायपाली क्षेत्र की पुलिस ने सूचना के आधार पर छात्र के घर छापामार कार्रवाई की। छापे के दौरान पुलिस ने छात्र से 40 लीटर महुआ शराब जब्त करने का दावा किया और छात्रा के खिलाफ छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के तहत मामला दर्ज कर जेल भेज दिया। आरोपी के अधिवक्ता ने हाईकोर्ट से कहा कि छात्र को झूठा फंसाया गया। जिस स्थान से शराब बरामद बताई गई वह घर के पीछे खुला क्षेत्र था, जहां से लोगों की आवाजाही होते रहती है। किसी ने शराब रख दी होगी, पुलिस ने उसे ■ शेष पृष्ठ 8 पर

ओडिशा अस्पताल अग्निकांड में चार अफसर सस्पेंड

कटक/ए.। कटक के श्रीराम चंद्र भंज मेडिकल कॉलेज अस्पताल में आग लगने की घटना के दो दिन बाद ओडिशा सरकार ने 4 अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। इनमें अग्निशमन सेवा के 3 और विद्युत विभाग का एक अफसर शामिल है। इस बीच, विपक्षी पार्टी बीजू जनता दल ने चार जूनियर अधिकारियों के निलंबन को सिर्फ दिखावा बताया। लेनिन मोहंती ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार का रवैया लापरवाही भरा है।

सीएम हिमंता 7वीं बार जालुकबारी से लड़ेंगे चुनाव

- **असम चुनाव के लिए एक दिन पहले कांग्रेस से आए सांसद बोरदोलोई को भाजपा ने दिया टिकट**

नई दिल्ली/ए.। असम विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने गुरुवार को अपने कैंडिडेट्स की पहली लिस्ट जारी की। इसमें सीएम हिमंता बिस्व सरमा सहित 88 नाम हैं। हिमंता अपनी परंपरागत सीट जालुकबारी से चुनाव लड़ेंगे। वे सातवीं बार इस सीट से चुनाव लड़ रहे हैं।

25 दिन पहले भाजपा में आए पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष भूपेन बोरा को भी टिकट दिया गया है। भाजपा ने एक दिन कांग्रेस छोड़कर पार्टी जॉइन करने वाले सांसद प्रद्युत बोरदोलोई को दिसपुर से उम्मीदवार बनाया गया है। इधर, प्रद्युत बोरदोलोई के भाजपा में शामिल होने के बाद उनके बेटे प्रतीक बोरदोलोई ने विधानसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार के तौर पर चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया है। प्रतीक ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को लिखे पत्र में कहा कि अब उनका कांग्रेस उम्मीदवार बने रहना सही नहीं होगा। प्रतीक ने कहा- मैं पूरी जिम्मेदारी और सम्मान के साथ मार्घेरिटा सीट से अपनी उम्मीदवारी वापस ले रहा हूं। यहां के लोगों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं को उम्मीदवार को लेकर स्पष्टता और भरोसा मिलना चाहिए। मैं पार्टी का सदस्य बना रहूंगा और ■ शेष पृष्ठ 8 पर

गरमा-गरम

चार कंधों पर सिस्टम : गरियाबंद जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं की खुली पोल, अफसर कह रहे जांच की बात

मरीज को अस्पताल पहुंचाने खाट पर लादकर 17 किमी चले परिजन

जीवन एस साहू

- **दुर्गम गांव भालूडिग्गी में नहीं पहुंचती एम्बुलेंस**
- **इलाज के लिए ग्रामीणों को उठाना पड़ रहा जोखिम**

गरियाबंद/नवप्रदेश। गरियाबंद जिले में एक बार फिर स्वास्थ्य व्यवस्था की जमीनी हकीकत सामने आई है, जिसने सरकारी दावों की पोल खोलकर रख दी है। मैनपुर क्षेत्र के दूरस्थ ग्राम भालूडिग्गी में स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव के चलते एक गंभीर मरीज को ग्रामीणों ने बांस की खाट पर करीब 17 किलोमीटर तक पहाड़ी और घने जंगलों के रास्ते ढोकर अस्पताल तक पहुंचाया।

जानकारी के मुताबिक, राजीव गांधी गोद ग्राम कुल्हाड़ीघाट के आश्रित ग्राम भालूडिग्गी निवासी मन्नू राम की तबीयत अचानक बिगड़ गई। गांव में स्वास्थ्य सुविधा नहीं होने के कारण ग्रामीणों ने मजबूरी में खाट को कांवर की तरह तैयार किया और दुर्गम रास्तों से पैदल चलते हुए उसे कुल्हाड़ीघाट तक लाए। आरोप है कि यहां भी समय पर सरकारी एम्बुलेंस की सुविधा नहीं मिलने पर इसके बाद निजी वाहन से पहले मैनपुर स्वास्थ्य केंद्र और फिर हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल गरियाबंद रेफर किया गया। अब सबसे ■ शेष पृष्ठ 8 पर

मूलभुत सुविधाएं मिलनी चाहिए

गरियाबंद जिले में सड़क, शिक्षा, पानी और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं को लेकर कई बार मांग और प्रदर्शन किए गए, लेकिन अब तक ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

– **जनकराम ध्रुव**, विधायक

वनांचल में सड़क और नेटवर्क की समस्या

संबंधित गांव बेहद दुर्गम क्षेत्र में स्थित है, जहां सड़क और नेटवर्क की समस्या है। यदि पीड़ितों ने 108 एम्बुलेंस को कॉल किया है और उन्हें किसी तरह से रिस्पांस नहीं देते हुए सेवा में लापरवाही बरती गई है, तो जांच कर कार्रवाई की जाएगी। स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए उच्च स्तर पर मांग भी की गई है।

– **यूएस नवरत्न**, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, गरियाबंद

शेयर बाजार में 22 महीने की सबसे बड़ी गिरावट

- **सेंसेक्स 2497 अंक गिरकर 74,207 पर आया, निफ्टी 776 अंक टूटा**
- **क्रूड की कीमतें 6% बढ़कर 114 डॉलर प्रति बैरल के पार**

मुंबई (ए.)। शेयर बाजार में आज यानी 19 मार्च को 22 महीने की सबसे बड़ी गिरावट रही। सेंसेक्स 2497 अंक (3.26%) गिरकर 74,207 पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी में भी 776 अंक (3.26%) की गिरावट रही, यह 23,002 पर आ गया है। बैंकिंग-ऑटो शेयर्स में आज सबसे ज्यादा ■ शेष पृष्ठ 8 पर

चांदी में 20 और सोने में 8 हजार की गिरावट

नई दिल्ली/ए.। सोने-चांदी की कीमतों में आज यानी 19 मार्च को गिरावट रही। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के मुताबिक, एक किलो चांदी की कीमत 20 हजार रुपए घटकर 2.30 लाख रुपए पर आ गई है। इससे पहले इसकी कीमत 2.50 लाख रुपए किलो थी।

संक्षिप्त खबरें

चैत्र नवरात्रि: देवी भक्तों में उत्साह और श्रद्धा का माहौल देखने को मिल रहा

कुरूद / नवप्रदेश। नगर सहित आसपास के ग्रामीण अंचलों में चैत्र नवरात्रि पर्व के प्रथम दिवस पर देवी भक्तों में विशेष उत्साह एवं श्रद्धा का माहौल देखने को मिला। नगर की अधिष्ठात्री देवी माँ चंडी, माँ काली एवं छत्तीसगढ़ महतारी के मंदिरों में शुभ मुहूर्त में दीप प्रज्वलित कर पूजा-अर्चना की तैयारी की गई है। चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर विभिन्न मंदिरों में सेवा, जस गीतों एवं भजन-कीर्तन की मधुर ध्वनि से वातावरण भक्तिमय बना हुआ। श्रद्धालु बड़ी संख्या में मंदिरों में पहुंचकर माता रानी के दर्शन कर सुख-समृद्धि की कामना करेंगे। नगर के प्रमुख देवी मंदिरों को आकर्षक लाइट डेकोरेशन से सजाया गया है, जिससे रात्रि में मंदिरों की छटा और भी मनमोहक दिखाई दे रही है। वहीं शीतला मंदिर में भी विधि-विधान से ज्योत प्रज्वलित कर माता की आराधना की गई। नवरात्रि के दौरान पूरे नगर में आस्था, भक्ति एवं उल्लास का वातावरण बना हुआ है, और आगामी दिनों में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा।

कुरूद में बन रहे एमपी थिएटर का काम रुका, लोगों में नाराजगी

कुरूद / नवप्रदेश। नगर में लंबे समय से बन रहे एमपी थिएटर का निर्माण कार्य इन दिनों पूरी तरह से रुका हुआ है। निर्माण कार्य ठप पड़ने से नगरवासियों में नाराज़गी और निराशा देखने को मिल रही है। बताया जा रहा है कि लगभग दो माह से अचानक काम बंद कर दिया गया है, जिसके कारण थिएटर का निर्माण अधूरा पड़ा हुआ है।स्थानीय लोगों का कहना है कि एमपी थिएटर बन जाने से क्षेत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, फिल्मों के प्रदर्शन और विभिन्न सामाजिक आयोजनों के लिए एक बेहतर मंच उपलब्ध होता। नगर के युवाओं और कलाकारों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता। लेकिन अचानक निर्माण कार्य रुक जाने से यह विषय नगर में चर्चा का केंद्र बना हुआ है। नगर व आसपास क्षेत्र के कलाकारों एवं नागरिकों ने संबंधित विभाग और प्रशासन से मांग की है कि निर्माण कार्य को जल्द से जल्द फिर से शुरू कराया जाए और अधूरे पड़े एमपी थिएटर को शीघ्र पूरा किया जाए, ताकि नगर वह क्षेत्र के साथ-साथ बाहर से आने वाले कलाकारों को भी इसकी सुविधा मिल सके।

मीना धुर्वे ने वेटलिफ्टिंग स्पर्धा में रजत पदक जीत कर विभाग को किया गौरवान्वित

कवर्धा/नवप्रदेश। वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, कवर्धा वनमंडल, जिला कबीरधाम में पदस्थ श्रीमती मीना धुर्वे, उप वनक्षेत्रपाल द्वारा रजत पदक प्राप्त कर न केवल वन विभाग अपितु पूरे प्रदेश को गौरवान्वित किया गया है।केन्द्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक एवं खेल बोर्ड, नई दिल्ली के तत्वाधान में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा वेटलिफ्टिंग (पुरुष एवं महिला) प्रतियोगिता 2025-26 का आयोजन खेल विभाग, चंडीगढ़ प्रशासन द्वारा दिनांक 05 से 07 मार्च 2026 तक किया गया। उक्त प्रतियोगिता में कवर्धा वनमंडल अंतर्गत कार्यरत श्रीमती मीना धुर्वे, उप वनक्षेत्रपाल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अर्जित किया।श्रीमती धुर्वे ने 77 किलोग्राम वर्ग में 42 किलोग्राम (स्नेच) एवं 55 किलोग्राम (क्लीन एंड जर्क) सहित कुल 97 किलोग्राम भार उठाकर प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इससे पूर्व भी उन्होंने वन विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त कर विभाग का गौरव बढ़ाया है।वनमंडलाधिकारी श्री निखिल अग्रवाल द्वारा श्रीमती धुर्वे को इस उपलब्धि हेतु बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई तथा भविष्य में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही, वनमंडल परिवार द्वारा भी उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गईं।

सिंधी समाज निकाली वाहन रैली निकाली

भाटापारा / नवप्रदेश। सिंधी समाज के इष्टदेव साईं झूलेलाल के जन्मोत्सव चेट्रीचंड्र महोत्सव पर शहर में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक गौरव का अनूठा संगम दिखा।चेट्रीचंड्र महोत्सव के अवसर पर सिंधी समाज की नारी शक्ति एवं पुरुष प्रधान ने शहर में भव्य बाइक रैली निकाली इस दौरान 'आयोलाल झूलेलालज जय जय झूलेलाल' के नारे लगातार लगते रहे। कुलदेवी हिंगलाज माता एवं भगवान झूलेलाल के समक्ष दीप प्रज्वलित करने के पश्चात बाइक रैली को नगर पालिका अध्यक्ष अश्वनी शर्मा एवं सिंधी पंचायत अध्यक्ष इंदरलाल थारानी द्वारा झंडी दिखाकर महासती वार्ड स्थित झूलेलाल मंदिर से रवाना किया।

गैस बुकिंग की अवधि अव्यवहारिक: उधोराम

धरसीवां / नवप्रदेश। ईरान -इजराईयल अमेरिका युद्ध से उत्पन्न पेट्रोलियम गैस एवं अन्य उत्पाद का दुष्प्रभाव भारत की नीतियों के कारण हो रहा है जिस प्रकार से भारत अमेरिकी दबाव में आकर युद्ध पर भारत की नीति स्पष्ट नहीं कर रहा है जिसके परिणाम स्वरूप भारत में आने वाले कच्चे पेट्रोलियम उत्पाद पर पड रहा है जिस होमुर्ज डमरू जलमध्य मार्ग के रास्ते से अधिकार जल मार्ग से परिवहन होता है जिसमें आवागमन लगभग बंद है। गैस नहीं मिलने से हाहाकार मचा हुआ है इसके आड़ में आपदा को अवसर में बदलने का काम कर रहे है गैस एजेंसियों में लंबी कतार लगने लगी है। ग्रामीण क्षेत्रों में 45दिनों बाद बुकिंग सरकार की तुगलकी फरमान है। पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष उधोराम वर्मा ने मांग की है कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 45दिनों के बाद गैस की बुकिंग का आदेश वापस ले साथ ही खाद्य विभाग का सघन निरीक्षण हो ताकि गैस उपभोक्ता लूट के शिकार से बच सके। कमी के कारण हो रहे कालाबजारी से बच सके कीमतों में भी वृद्धि को वापस ले ,खाद्य विभाग द्वारा लगातार निरीक्षण हो ताकि उपभोक्ता को राहत मिल सके।

हिंदू नववर्ष शोभायात्रा को लेकर समितियों की संयुक्त बैठक, पुलिस बल की रहेगी तैनाती

■ पुलिस प्रशासन ने की व्यापक तैयारियां, हर स्तर पर निगरानी

कवर्धा/नवप्रदेश। हिंदू नववर्ष के पावन अवसर पर कवर्धा शहर में भव्य झांकी एवं शोभायात्रा (रैली) का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन में कवर्धा शहर सहित पूरे जिले से बड़ी संख्या में नागरिकों की सहभागिता अपेक्षित है। कार्यक्रम की सुचारू एवं सुरक्षित व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु पुलिस और प्रशासन द्वारा व्यापक तैयारियाँ की जा रही हैं।इसी क्रम में पुलिस अधीक्षक श्री धर्मेंद्र सिंह के निर्देशानुसार तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पुष्पेंद्र बघेल एवं श्री अमित पटेल के मार्गदर्शन में सभी आयोजन समितियों की संयुक्त बैठक आयोजित की गई। बैठक में रैली के मार्ग (रूट) निर्धारण, यातायात व्यवस्था, सुरक्षा प्रबंधन, भीड़ नियंत्रण, पार्किंग व्यवस्था सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।

बैठक के दौरान नगर पालिका अध्यक्ष श्री चंद्र प्रकाश चंद्रवंशी, एसडीओपी श्री आशीष शुक्ला, तहसीलदार श्री परमेश्वर मांडवी, श्री विकास जैन एवं कोतवाली थाना प्रभारी श्री योगेश कश्यप ने आयोजन समिति के पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए आवश्यक सुझाव एवं दिशा-निर्देश साझा किए। आयोजन समिति के सदस्यों से भी सुझाव प्राप्त कर व्यवस्थाओं को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया गया।

पुलिस प्रशासन द्वारा आमजन से अपील की गई है कि वे रैली के दौरान यातायात नियमों का पालन करें, निर्धारित मार्गों का उपयोग करें तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का सहयोगपूर्वक पालन करें, जिससे कार्यक्रम शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित रूप से संपन्न हो सके।पुलिस प्रशासन ने यह भी आश्वस्त किया है कि सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था के लिए पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की जाएगी तथा हर स्तर पर निगरानी रखी जाएगी।

ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अथर्व शर्मा के सफल नेतृत्व में शिक्षा गुणवत्ता का परिणाम

80 में से 48 सीटें धमधा ब्लॉक के नाम नवोदय चयन में ग्रामीण प्रतिभा का जलवा

धमधा/नवप्रदेश। दुर्ग जिले के धमधा लिए गर्व का क्षण सामने आया है। जवाहर नवोदय विद्यालय नगपुरा बोराई में इस वर्ष 80 सीटों के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षा में से 48 सीटों पर केवल धमधा ब्लॉक के बच्चों ने सफलता हासिल की है। यानी कुल चयन का 60 प्रतिशत हिस्सा अकेले धमधा के नाम रहा।

ग्रामीण क्षेत्र होने के बावजूद धमधा के विद्यार्थियों ने एक बार फिर साबित कर दिया कि प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती। साधारण सरकारी स्कूलों में पढ़ाई करने वाले इन बच्चों ने कड़ी मेहनत और लगन के दम पर यह उपलब्धि हासिल की है। अक्सर यह धारणा बनाई जाती है कि सरकारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं होती, लेकिन इस परिणाम ने उन सभी धारणाओं को आईना दिखा दिया है।

चयनित विद्यार्थियों के अधिकांश माता-पिता कृषक हैं और सामान्य परिवारों से ताल्लुक रखते हैं। सीमित संसाधनों और चुनौतियों के बीच बच्चों ने अपने सपनों को पंख दिए और पूरे ब्लॉक का नाम रोशन किया। यह उपलब्धि न केवल उनके परिवारों के लिए, बल्कि पूरे धमधा क्षेत्र के लिए गौरव का विषय बन गई है।

धमधा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अथर्व शर्मा ने सभी चयनित विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि यह सफलता दर्शाती है कि यदि सही मार्गदर्शन और मेहनत हो तो सरकारी स्कूलों के बच्चे भी किसी से कम नहीं हैं।

इस ऐतिहासिक सफलता ने धमधा ब्लॉक को शिक्षा के क्षेत्र में नई पहचान दी है। एक बार फिर यह सिद्ध हो गया है कि सच्ची लगन, समर्पण और आत्मविश्वास के साथ लक्ष्य को जरूर हासिल किया जा सकता है चाहे मंच गांव का हो या शहर का।

समाधान योजना शिविर का आयोजन

धमतरी/नवप्रदेश। कुरूद संभाग के अंतर्गत कुरूद में समाधान योजना से सम्बन्धित शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में रायपुर ग्रामीण क्षेत्र के मुख्य अभियंता श्री संजीव सिंह , कार्यपालन अभियंता , सहायक अभियंता, कनिष्ठ अभियंता एवं सम्माननीय उपभोक्तागण उपस्थित हुए । कार्यक्रम में मुख्य अभियंता द्वारा योजना से सम्बन्धित उपभोक्ताओं को बकाया राशि में मूलधन तथा अधिभार राशि में मिलने वाली राहत के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। शिविर में लगभग 33 उपभोक्ता उपस्थित रहे जिनमें से 10 उपभोक्ताओं की 1,21,920 रुपए की बकाया राशि के विरुद्ध 82950 रूपये की राहत की जानकारी दी गई तथा मुख्य अभियंता द्वारा सभी को सम्मानित किया गया ।

बड़े बकायादारों की सूची जारी

राजनांदगांव /नवप्रदेश। वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर सत प्रतिशत वसूली के लिये नगर निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने कडा रूख अपनाते हुये लंबे समय से करों का भुगतान नहीं करने वाले 1 लाख रूपये से उपर के बड़े बकायादारों की सूची जारी कर नगर पालिक निगम अधिनियम की धारा 173 के अंतर्गत बिल प्रेषित करने के निर्देश दिये थे। निर्देश के परिपालन में राजस्व विभाग द्वारा धारा 173 के तहत बिल प्रेषित किया गया, किन्तु करदाताओं द्वारा करो का भुगतान नहीं करने पर 15 दिवस उपरांत अधिनियम की धारा 174 के अधीन मांग की सूचना पत्र 61 करदाताओं को प्रेषित किया गया। जिनके द्वारा बकाया करों का भुगतान नहीं करने पर कुर्की की कार्यवाही की जावेगी। पूर्व में भी इन्हें अनेको बार करो का भुगतान करने समझाईस देने के साथ साथ पत्र भी दिया गया था।

ग्रामीण साहू समाज ने धूमधाम से मनाई भक्त मां कर्मा की जयंती

कुरूद / नवप्रदेश। ग्राम खैरा में ग्रामीण साहू समाज द्वारा समाज की आराध्य देवी भक्त माता कर्मा की 1010वीं जयंती बड़े हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर साहू समाज भवन में समाज के सभी स्वजातीय जन एकत्रित हुए और भक्त मां कर्मा एवं भगवान जगन्नाथ स्वामी की विधिवत पूजा-अर्चना कर आरती की गई। जयंती के अवसर पर भव्य कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग सहित समाज के लोग पारंपरिक वेशभूषा में शामिल हुए। बाजे-गाजे के साथ निकली यह कलश यात्रा गांव की प्रमुख गलियों में भ्रमण किया। जिससे पूरे गांव का वातावरण भक्तिमय हो गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथियों का समाज के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत एवं सम्मान किया गया। इसके पश्चात भक्त मां कर्मा एवं भगवान जगन्नाथ को भोग अर्पित किया गया। कार्यक्रम के अतिथि बानगर परिक्षेत्र अध्यक्ष प्रेमचंद साहू, सचिव दीपेश साहू, मनोज साहू, पत्रकार गणेश साहू, देवल राम, प्रेमा साहू, गिरधर साहू, चिंता राम, बिसहत राम, गणेश साहू के आतिथ्य में किया गया।

प्रेमचंद साहू ने भक्त माता कर्मा त्याग, सेवा और भक्ति की अद्भुत मिसाल हैं। उनका जीवन हमें समाज सेवा, सद्भाव और मानवता का संदेश देता है। कर्मा माता की प्रेरणा से साहू समाज आज भी एकता और संस्कारों के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। हमें उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

गणगौर महोत्सव पर बुजुर्ग दंपत्तियों का सम्मान

भाटापारा / नवप्रदेश। विप्र फाउंडेशन जिला अध्यक्षा श्रीमती उमा रेखू शर्मा के नेतृत्व में कुंदन भवन में गणगौर महोत्सव का आयोजन किया गया,जिसमें विवाह के 50 वर्ष पूर्ण कर चुके दंपतियों को सम्मान कर उनका आशीर्वचन लिया गया।

राजस्थानी त्योहारों में प्रमुख अखंड सौभाग्य का पर्व गणगौर का अपना अलग महत्व है।जिसे सभी सुहागिनें अपने सुहाग की रक्षा हेतु एवम् कुंवारी कन्या मनपसंद सुयोग्य वर प्राप्ति हेतु पूजती है । इसी परिप्रेक्ष्य में जिला बलौदाबाजार भाटापारा विप्र फाउन्डेशन महिला प्रकोष्ठ द्वारा अखंड सौभाग्यवती सम्मान का आयोजन किया गया। जिसमें अपनी पचासवीं विवाह वर्षगांठ पूरे कर चुके समाज के तेरह जोड़ों कार्तिक लाल श्रीमती कृष्णा शर्मा, घनश्याम सरोज शर्मा, श्री श्रीलाल प्रमिला शर्मा, ओमप्रकाश श्रीमती उमा शर्मा,सीताराम श्रीमती चंपा पटाक,ओमप्रकाश श्रीमती शकुंतला ओझा , तोलाराम जी कमला देवी तिवारी, छगनलाल कांता शर्मा, मुरारी लाल कृष्णादेवी शर्मा, रमेश सुशीला तिवारी, पुरूषोत्तम द्वारिका देवी तिवारी, मोहनलाल विमला देवी शर्मा का सम्मान बड़ी आत्मीयता से करते हुए उन्हें शॉल, श्रीफल ,माला पहनाकर एवं महिलाओं को चुनरी ओढ़ाकर सुहाग सामग्री भेंट की गयी। इस अवसर पर लालसोट समाज अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी,डॉ बसंत भृगु,आदिगौड़ ब्राह्मण समाज अध्यक्ष शरद भृगु ,तथा विप्र फाउन्डेशन जिला अध्यक्ष सोनू पटाक,समाजसेवी राजकुमार शर्मा, धनजी जोशी,नंदकिशोर सेवाका, प्रमेन्द्र तिवारी,बिहारी जोशी, आशीष पुरोहित सहित अन्य पदाधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अंजू भृगु,सीमा शिवरतन शर्मा , शिवानी शर्मा,किरण जोशी,मोहिनी चौबे,ऊषा भृगु ,किरण तिवारी ,मणि शर्मा,सुशीला तिवारी,लता शर्मा,बबिता भृगु,आशा पुरोहित,उमा पटाक,मीता शर्मा,वंदना शर्मा,चंद्रकिरण शर्मा,सुलेखा शर्मा ,सुनिता हट्टीका ,रीता चौबे ,साक्षी शर्मा,शशि पांडे,ज्योति शर्मा,पिंकी शर्मा,ममता मादु,योगिता शर्मा,प्रियंका शर्मा चंदा शर्मा, स्नेहिल ओझा सहित विप्र समाज की महिलाएं उपस्थित थी। जिला अध्यक्षा उमा रेखू शर्मा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी को बधाई व शुभकामनाएं देकर आभार व्यक्त किया है।

संलग्नीकरण खत्म करने की मांग तेज

कवर्धा/नवप्रदेश। स्वास्थ्य संयोजक कर्मचारी संघ छत्तीसगढ़ (कबीरधाम) ने जिले में स्वास्थ्य विभाग में संलग्नीकरण को समाप्त करने की मांग को लेकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा है।जिला अध्यक्ष गोलू सोनवानी के नेतृत्व में सौंपे गए ज्ञापन में बताया गया है कि छत्तीसगढ़ शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के अंतर्गत स्वास्थ्य मंत्री द्वारा 12 मार्च 2026 को विधानसभा में यह घोषणा की गई थी कि संचालनालय स्वास्थ्य सेवाओं के तहत मूल पदस्थ संस्थाओं से अन्यत्र संलग्न एवं कार्य व्यवस्था पर कार्यरत चिकित्सकों एवं चिकित्सा कर्मियों का संलग्नीकरण समाप्त किया जाएगा।

शिशु संरक्षण माह का विकासखंड स्तरीय शुभारंभ

धरसीवां / कूंरा/नवप्रदेश। 17 मार्च 2026 को, जिला कलेक्टर डॉक्टर गौरव कुमार सिंह एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मिथिलेश चौधरी जी के निर्देशन में, सामुदायिक स्वास्थय केंद्र धरसींवा में , शिशु संरक्षण माह का विकासखंड स्तरीय शुभारंभ माननीय जनपद अध्यक्षशकुंतला ढिलेंद्र सेन के द्वारा विटामिन ए की सिरप पिलाकर किया गया साथ में जनपद उपाध्यक्ष दिनेश खूंटे , पूजा अश्वनी वर्मा जनपद सदस्य व साहिल खान जी सरपंच ग्राम पंचायत धरसींवा उपस्थित रहे ! इस अवसर पर प्रभारी चिकित्सा अधिकारी , डॉ. विजय कुमार एक्का , डॉक्टर मंजुला भारती चिकित्सा अधिकारी धरसींवा बी के वर्मा , पर्यवेक्षक ,इला सरकार , शकुंतला यादव सेक्टर पर्यवेक्षक सेक्टर धरसींवा व सी एच सी धरसींवा से सभी स्टाफ उपस्थित रहे । शिशु संरक्षण माह का आयोजन 17 मार्च से 21 अप्रैल 2026 तक किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य बच्चों में कुपोषण, एनीमिया और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को रोकना है। इस दौरान 9 माह से 59 माह तक के 20529 बच्चों को विटामिन-ए सिरप और 6 माह से 59 माह तक के 21737 बच्चों को आयरन-फोलिक एसिड सिरप पिलाया जाएगा। इस अभियान के तहत स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं शिक्षा विभाग के समन्वय से विस्तृत माइक्रोप्लान तैयार किया गया है।

महासमुंद पुलिस ने शुरू किया संवाद व्हाट्सऐप हेल्प

■ अब घर बैठे दर्ज करें शिकायत, गुप्त सूचना भी सीधे एसपी तक

महासमुंद/नवप्रदेश। पुलिस और आम जनता के बीच संवाद को सरल और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से महासमुंद जिला पुलिस ने संवाद नाम से एक नई पहल शुरू की है। यह पहल कांकेर पुलिस के शिकायत हेल्प डेस्क अभियान की तर्ज पर लागू की गई है।अब जिले के नागरिक व्हाट्सऐप के माध्यम से अपनी शिकायत दर्ज कर सकेंगे या किसी भी अवैध गतिविधि की गुप्त सूचना सीधे पुलिस अधीक्षक कार्यालय तक पहुंचा सकेंगे। इसके लिए महासमुंद पुलिस ने मोबाइल नंबर 9479229939 जारी किया है। इस नंबर पर Hi, Hello, नमस्ते या Help लिखकर भेजने पर स्वत: एक मैसेज प्राप्त होगा, जिसमें दो विकल्प मिलेंगे। शिकायत दर्ज करें

अवैध गतिविधियों की गुप्त सूचना दें शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया यदि शिकायतकर्ता 2 विकल्प चुनता है, तो उसे अपनी शिकायत की फोटो, पीडीएफ या टाइप करके भेजने का विकल्प दिया जाएगा। शिकायत पूरी होने पर उसे एक शिकायत क्रमांक प्रदान किया जाएगा, जिससे वह अपनी शिकायत की स्थिति भी व्हाट्सऐप पर ट्रैक कर सकेगा।

गुप्त सूचना देने की सुविधा

1 विकल्प चुनने पर उपयोगकर्ता अवैध शराब, गांजा, जुआ, नशे के कारोबार या अन्य आपराधिक गतिविधियों से संबंधित जानकारी साझा कर सकता है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि सूचना देने वाले की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

एआई आधारित चैटबॉट की खासियत

संवाद व्हाट्सऐप हेल्प डेस्क पूरी तरह AI आधारित ऑटोमैटिक सिस्टम पर काम करेगा। शिकायतों को स्वत: 10 श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाएगा। संबंधित थानों को स्वत: भेजा जाएगा। डैशबोर्ड के माध्यम से रियल-टाइम मॉनिटरिंग होगी।

स्टेशन रोड सौंदर्यीकरण के लिए नगर निगम ने हटाया अतिक्रमण

राजनांदगांव/नवप्रदेश। शहर को साफ, सुंदर एवं व्यवस्थित रखने अतिक्रमण मुक्त करने एवं सुगम आवागमन के लिए नगर निगम द्वारा शहर में निरीक्षण कर अवैध रूप से कब्जा करने तथा अतिक्रमण कर ठेला खोमचा व पसरा लगाने, नाली के उपर अतिक्रमण करने तथा मलमा रखने वालो को स्वयं अतिक्रमण हटाने समझाईस देने व हटाने निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा द्वारा गठित दस्ता शहर में सुनियोजित अभियान चलाकर कार्यवाही कर रही है। आज की कार्यवाही में स्टेशन रोड सौदर्यीकरण के लिए अभियान चलाकर चबूतरा, शेड, जेसीबी से तोड ठेला गुमटी हटाया गया। आगामी स्वच्छता सर्वेक्षण के लिए शहर को स्वच्छ, साफ एवं सुंदर रखने तथा सौदर्यीकरण करने निगम का अतिक्रमण दस्ता शहर के विभिन्न स्थानों में निरीक्षण कर एवं शिकायत के आधार पर अतिक्रमण स्थल मे जाकर हटाने समझाईस देने के साथ साथ नही हटाने पर कार्यवाही कर रही है।

झारखंड के जनसंपर्क टीम ने छत्तीसगढ़ संवाद के 'रोजगार और नियोजन' की ली जानकारी

रायपुर/नप्रदेश। युवाओं को रोजगार संबंधी जानकारी सुलभ कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सामने आई है। आज झारखंड के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की टीम ने छत्तीसगढ जनसंपर्क की सहयोगी संस्था छत्तीसगढ़ संवाद द्वारा प्रकाशित लोकप्रिय पत्रिका 'रोजगार और नियोजन' का अवलोकन कर जानकारी ली। टीम को साप्ताहिक पत्रिकारोजगार और नियोजन पत्रिका के संबंध में सहायक संपादक श्रीमती गीतांजली नेताम ने रोजगार और नियोजन पत्रिका की पाठ्य सामग्री, स्वरूप और युवाओं के लिए उपयोगी जानकारी दी।

झारखंड की टीम ने रोजगार और नियोजन पत्रिका की सराहना की द्य टीम में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग झारखंड के डिप्टी डायरेक्टर आनंद कुमार, विभाग की प्रतिनिधि श्रीमती सुनीता धान तथा विधि सलाहकार अमन कुमार शामिल रहे।

झारखण्ड की टीम के अधिकारियों ने बताया कि झारखंड के युवाओं को भी इसी प्रकार की विश्वसनीय और संगठित रोजगार संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य में 'रोजगार और नियोजन' जैसी पत्रिका प्रकाशित करने की योजना पर विचार किया जा रहा है। इसके लिए वे इस प्रकाशन की प्रति लेकर झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी प्रस्तुत करेंगे। टीम के सदस्यों ने कहा कि इस प्रकार की पत्रिका प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकती है, क्योंकि इसमें सरकारी नौकरियों, योजनाओं और कैरियर मार्गदर्शन से जुड़ी जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध होती है।

इस पहल को लेकर टीम ने उम्मीद जताई जा रही है कि यदि यह योजना साकार होती है, तो झारखंड के हजारों युवाओं को रोजगार संबंधी सटीक और समय पर जानकारी मिल सकेगी, जिससे उनके भविष्य निर्माण में सकारात्मक योगदान मिलेगा। झारखण्ड की टीम के छत्तीसगढ संवाद भ्रमण के अवसर पर रोजगार और नियोजन से संबद्ध अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

न्यूज गैलरी

गर्डर डीलॉन्चिंग कार्य के चलते कई ट्रेनें रद्द, 4 घंटे का ब्लॉक

रायपुर/नप्रदेश। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर रेल मंडल के अंतर्गत हथबंद-भाटापारा सेक्शन में रोड अंडर ब्रिज निर्माण कार्य के लिए गर्डर डीलॉन्चिंग किया जाएगा। इस कार्य के चलते 21 मार्च की रात 11 बजे से 22 मार्च की सुबह 3 बजे तक कुल 4 घंटे का ब्लॉक लिया जाएगा, जिससे कई यात्री गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। रेलवे प्रशासन के अनुसार अधोसंरचना विकास कार्यों को शीघ्र पूरा करने के उद्देश्य से किमी 774/13-15 पर स्थित लेवल क्रॉसिंग क्रमांक 389 में यह कार्य किया जा रहा है। 22 मार्च 2026 को 68728 रायपुर-बिलासपुर मेमू पैसेंजर, 68734 बिलासपुर-गेवरा रोड मेमू पैसेंजर, 68733 गेवरा रोड-बिलासपुर मेमू पैसेंजर, 68719 बिलासपुर-रायपुर मेमू पैसेंजर, 58203 कोरबा-रायपुर पैसेंजर, 58205 रायपुर-नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) पैसेंजर रद्द रहेगी। इसी प्रकार 23 मार्च 2026 को 58206 नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी)-रायपुर पैसेंजर और 58202 रायपुर-बिलासपुर पैसेंजर रद्द रहेगी।

आबकारी आरक्षक के 200 पदों पर भर्ती हेतु अंतिम चयन परिणाम जारी

रायपुररायपुर/नप्रदेश। आबकारी विभाग के अंतर्गत आबकारी आरक्षक के रिक्त 200 पदों की पूर्ति हेतु सीधी भर्ती के माध्यम से छत्तीसगढ़ व्यवसायिक परीक्षा मण्डल रायपुर (व्यापम) द्वारा 27 जुलाई 2025 को लिखित परीक्षा आयोजित की गई थी। उक्त भर्ती परीक्षा का अंतिम उत्तर तथा परीक्षा परिणाम व्यापम की वेबसाइट पर 19 सितम्बर 2025 को प्रदर्शित किया गया। आबकारी विभाग के अधिकारियों ने बताया कि विभाग को उपलब्ध कराये गये परीक्षा परिणाम की प्राप्तांक सूची एवं परीक्षा से संबंधित अन्य अभिलेखों के आधार पर विज्ञापन में उल्लेखित वर्गवार, प्रवर्गवार रिक्तियों की संख्या के लगभग तीन गुना अभ्यर्थियों को मेरिट क्रम में चिन्हांकित किया गया। उनके मूल प्रमाण पत्रों (दस्तावेजों) का सत्यापन एवं शारीरिक मापदण्ड की जॉच के लिए बुलाया गया, किन्तु पर्याप्त अवसर दिये जाने के बाद भी सत्यापन में अनुपस्थित एवं शारीरिक मापदण्ड में अपात्र पाये गये कुल 128 अभ्यर्थियों के नामों पर चयन प्रक्रिया में विचार नहीं करने संबंधी 12 मार्च 2026 को पत्र जारी किया गया। शेष पात्र अभ्यर्थियों में से व्यापम द्वारा जारी मेरिट क्रम के आधार पर वर्गवार, प्रवर्गवार आबकारी आरक्षक पद के कुल 200 पदों के विरूद्ध 200 पदों पर अभ्यर्थियों की उपलब्धता अनुसार चयन सूची तथा 43 अनुपूरक (प्रतीक्षा) सूची जारी गई है।

एक साल से फरार चोरी का आरोपी गिरफ्तार, माना पुलिस की कार्रवाई

रायपुर/नप्रदेश। राजधानी रायपुर के थाना माना क्षेत्र में दर्ज चोरी के एक मामले में लंबे समय से फरार चल रहे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पिछले एक वर्ष से फरार था और उसके खिलाफ न्यायालय से स्थायी वारंट भी जारी था। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, प्रार्थी अनिल बघेल ने 22 सितंबर 2025 को थाना माना में शिकायत दर्ज कराई थी कि धरमपुरा स्थित उसके सूने मकान का दरवाजा तोड़कर अज्ञात चोर अंदर घुस गया और आलमारी व लॉकर तोड़कर नगदी, सोने-चांदी के जेवरात एवं चांदी की मूर्ति चोरी कर ले गया। इस पर थाना माना में अपराध क्रमांक 303/25 के तहत धारा 331(3) एवं 305 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया था। जांच के दौरान पूर्व में एक आरोपी चंदन चेलक को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब 75 ग्राम सोने के जेवर, लगभग 2 किलो 893 ग्राम चांदी के जेवर व मूर्ति सहित करीब 10 लाख रुपये की मशरूका बरामद की जा चुकी थी। मामले में शामिल दूसरा आरोपी विजय जांगड़े घटना के बाद से फरार था। उसकी लगातार तलाश की जा रही थी। इसी दौरान एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट एवं थाना माना पुलिस को आरोपी के ठिकाने की सूचना मिली, जिसके आधार पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने धरती माता, सूर्य देव और साल वृक्ष की विधि-विधान से की पूजा-अर्चना

सरहुल उत्सव जनजातीय संस्कृति की विशिष्ट धरोहर: साय

रायपुर/नप्रदेश। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज जशपुर के दीपू बगीचा में आयोजित पारंपरिक सरहुल महोत्सव में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने धरती माता, सूर्य देव एवं साल वृक्ष की विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर प्रदेश की सुख-समृद्धि, उत्तम वर्षा और समृद्ध फसल की कामना की। सरहुल की पारंपरिक रस्म के तहत पूजा कराने वाले बैगा द्वारा मुख्यमंत्री के कान में सरई (साल) फूल खोंचकर शुभ आशीष प्रदान किया गया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने जिलेवासियों को सरहुल उत्सव एवं हिंदू नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सरहुल महोत्सव सदियों से प्रकृति, धरती और जीवन के संतुलन का प्रतीक रहा है। बैगा, पाहन एवं पुजारी द्वारा की जाने वाली पूजा-अर्चना केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सामूहिक जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि यह पर्व जनजातीय समाज की समृद्ध सभ्यता और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है, जिसे सहेजकर रखना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि राज्य सरकार जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश की जनता से किए गए वादों को तेजी से पूरा कर रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से लाखों परिवारों को आवास उपलब्ध कराए जा रहे हैं। महतारी वंदन योजना के तहत अब तक 25 किश्तों में 16 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि जारी किए जा चुके हैं, जिससे महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को नई दिशा मिली है। वहीं 3100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी कर किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विधानसभा में प्रस्तुत धर्म स्वातंर्त्य विधेयक भी सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो अवैध धर्मांतरण पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करेगा।

उल्लेखनीय है कि सरहुल परब चैत्र माह में मनाया जाने वाला उरांव समुदाय का प्रमुख पर्व है, जो प्रकृति के नवजीवन और ऋतु परिवर्तन का प्रतीक है। इस पर्व में धरती माता और सूर्य देव के प्रतीकात्मक विवाह के साथ सामूहिक पूजा की जाती है। सरना स्थल पर पारंपरिक विधि से पूजा-अर्चना, प्रसाद वितरण और लोकनृत्य-गीतों के माध्यम से सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ किया जाता है। घर-घर सरई फूल और पवित्र जल का वितरण कर सुख-समृद्धि की कामना की जाती है।

मुख्यमंत्री ने लोकतंत्र सेनानी स्वर्गीय महावीर प्रसाद जैन को दी श्रद्धांजलि

रायपुर/नप्रदेश। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज जशपुरनगर के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं लोकतंत्र सेनानी स्वर्गीय श्री महावीर प्रसाद जैन के निवास पहुंचकर उनके छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने शोक संतप्त परिजनों से भेंट कर उन्हें ढांढस बंधाया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय श्री महावीर प्रसाद जैन का जीवन समाज सेवा और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण रहा है। उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा और समाज को प्रेरणा देता रहेगा। इस अवसर पर विधायक गोमती साय, अध्यक्ष डॉ. रामप्रताप सिंह, जिला पंचायत उपाध्यक्ष शौर्य प्रताप सिंह जूदेव, यश प्रताप सिंह जूदेव उपस्थित रहे।

जशपुर को विकास की नई सौगात

मुख्यमंत्री साय ने 19.51 करोड़ के 6 विकास कार्यों का किया भूमिपूजन

रायपुर/नप्रदेश। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज जशपुरनगर में पुलिस लाइन हेलीपैड के समीप कुल 19 करोड़ 51 लाख 78 हजार रुपए की लागत से 6 महत्वपूर्ण विकास कार्यों का भूमिपूजन कर क्षेत्र को विकास की नई सौगात दी। इस अवसर पर उन्होंने शहरी एवं ग्रामीण बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने की दिशा में राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने नगर पालिका जशपुर के वार्ड क्रमांक 18 भागलपुर में 35.46 लाख रुपए की लागत से मुक्तिधाम निर्माण कार्य तथा वार्ड क्रमांक 16 में 6.76 करोड़ रुपए की लागत से आधुनिक ऑडिटोरियम निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। इन परियोजनाओं से शहरवासियों को बेहतर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने जशपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन को सुगम एवं सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से चार प्रमुख सड़कों के निर्माण कार्यों का भी भूमिपूजन किया।

इनमें 2.89 करोड़ रुपए लागत से चटकपुर-रेंगारबहार मार्ग, 3.01 करोड़ रुपए लागत से कुनकुरी-औंरीजोर-मतलूटोली-पटेल पारा मार्ग, 3.29 करोड़ रुपए लागत से रानीबंध-चिड़ाटांगर-उपरकछार मार्ग तथा 3.18 करोड़ रुपए लागत से धुरीअम्बा-कटुखोसा मार्ग का निर्माण शामिल है। इन सड़कों के निर्माण से ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी बेहतर होगी और आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

अंतर्राज्यीय आरोपी से 2.26 किलो गांजा जब्त

रायपुर/नप्रदेश। रायपुर जिले के तिल्दा-नेवरा थाना पुलिस ने 'ऑपरेशन निश्चय' के तहत अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए एक अंतर्राज्यीय आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 2 किलो 267 ग्राम गांजा जब्त किया है, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 1.13 लाख रुपये बताई जा रही है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, 18 मार्च को तिल्दा क्षेत्र स्थित रेलवे ओवरब्रिज के नीचे एक व्यक्ति द्वारा गांजा छिपाकर बेचने की सूचना मुखबिर से प्राप्त हुई थी। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी कर संदिग्ध युवक को पकड़ा। पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम प्रज्वल किसन हुके (22 वर्ष), निवासी वार्ड क्रमांक 27, फुलफेल आनंद नगर, जिला वर्धा (महाराष्ट्र) बताया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक सफेद झोले में रखा 2 किलो 267 ग्राम गांजा बरामद हुआ। आरोपी ने गांजा को सिलाई कर पेट के ऊपर बांधकर कपड़ों में छिपा रखा था, ताकि पुलिस से बच सके। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ थाना तिल्दा-नेवरा में अपराध क्रमांक 120/2026, धारा 20(बी) एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसे न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक रिमांड पर केंद्रीय जेल रायपुर भेज दिया गया।

यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) श्वेता श्रीवास्तव सिन्हा के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रशांत शुक्ला एवं एसडीओपी वीरेन्द्र चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में की गई। थाना प्रभारी निरीक्षक रमाकांत तिवारी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने इस कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

आज ही जुड़ें, भुगतान कम करें	आयु	पेंशन स्लैब (₹)	भुगतान राशि (₹)	पेंशन स्लैब (₹)	भुगतान राशि (₹)
	18	1000	42 प्रति माह	5000	210 प्रति माह
	40	1000	291 प्रति माह	5000	1454 प्रति माह

आज ही अपने नजदीकी डाकघर/बैंक में संपर्क करें या 1800 110 069 पर कॉल करें या www.pfrda.org.in पर जाएं।

CBC 15113/13/0002/2526

धान से मक्का की ओर बढ़ते कदम: फसलचक्र परिवर्तन से धमतरी के किसानों की बढ़ी आय

रायपुर/नप्रदेश। कभी धान की पारंपरिक खेती के लिए पहचाने जाने वाला धमतरी जिला अब कृषि नवाचार की नई मिसाल बनता जा रहा है। यहां के किसान फसलचक्र परिवर्तन अपनाकर कम पानी में अधिक लाभ देने वाली फसलों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। इस बदलाव ने न केवल खेती की तस्वीर बदली है, बल्कि किसानों की सोच और संसाधनों के उपयोग में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया है।

जिला प्रशासन की दूरदर्शी पहल में फसलचक्र परिवर्तन को एक जन-अभियान का रूप दिया गया है। किसानों को जागरूक करने, प्रशिक्षण देने और निरंतर मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के प्रयासों ने इस पहल को सफल बनाया है। कृषि विभाग की टीम ने गांव-गांव पहुंचकर किसानों से संवाद स्थापित किया, जिससे उनमें नई फसलों के प्रति विश्वास मजबूत हुआ।

ग्राम गट्टासिल्ली तालपारा के किसान रामप्रकाश नेताम इस परिवर्तन के प्रेरक उदाहरण हैं। पहले वे केवल धान की खेती करते थे, लेकिन अब 3.5 एकड़ में मक्का की खेती कर बेहतर उत्पादन और आय अर्जित कर रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों के मार्गदर्शन से उन्होंने उन्नत तकनीकों, कीट प्रबंधन और फसल देखरेख के बेहतर तरीकों को अपनाया है, जिससे उनकी खेती अधिक लाभकारी बन गई है। रामप्रकाश जैसे सैकड़ों किसानों ने मक्का सहित अन्य वैकल्पिक फसलों को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। खेतों में लहराती मक्का की फसल इस सकारात्मक बदलाव की सजीव तस्वीर प्रस्तुत कर रही है। इससे न केवल किसानों की आय बढ़ी है, बल्कि खेती का जोखिम भी कम हुआ है। फसलचक्र परिवर्तन का पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। कम पानी की आवश्यकता वाली फसलों के कारण सिंचाई पर दबाव घटा है, जिससे जल संसाधनों का संरक्षण हो रहा है और भूजल स्तर को बनाए रखने में मदद मिल रही है। साथ ही, विविध फसलों की खेती से भूमि की उर्वरता में भी सुधार हुआ है।

सुविचार

खुशी उन्हें नहीं मिलती जो अपनी शर्तों पर जीते हैं, खुशी उन्हें मिलती है जो दूसरों की खुशी के लिए अपनी शर्तें बदल लेते हैं।

दो पाटों के बीच फंसा पाकिस्तान

अमेरिका और इजराइल ने मिलकर ईरान के खिलाफ जो जंग छेड़ रखी है उसका दुष्परिणाम खाड़ी देशों को भी भुगतना पड़ रहा है। जिसे ईरान अब निशाना बनाना लगा है। सउदी अरब सहित इन खाड़ी देशों मे अमेरिका ने अपने सैनिक अड्डे बना रखे है। जिन्हें ईरान एक एक करके तबाह कर रहा है और मिडिल ईस्ट से अमेरिका के सैन्य अड्डो को नेस्तनाबूत करने के लिए कसम खाये बैठा है किन्तु अभी तक ईरान ने पाकिस्तान को बख्श रखा है जो अमेरिका का सबसे बड़ा पिट्ठू है। इसके बावजूद ईरान ने अब तक पाकिस्तान के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की है। किन्तु देर सवेर पाकिस्तान को भी ईरान के कहर का सामना करना पड़ सकता है। इसकी वजह यह है कि पाकिस्तान ने दो नावों पर सवारी कर रखी है। वह अमेरिका के हाथों की भी कठपुतली बना हुआ है और खाड़ी देशों का भी हमदर्द बनने का नाटक कर रहा है। पाकिस्तान ने हाल ही में सउदी अरब के साथ एक रक्षा समझौता किया था जिसके मुताबिक यदि सउदी अरब पर कोई देश हमला करता है तो उसे पाकिस्तान पर भी हमला माना जाएगा और यदि कोई देश पाकिस्तान पर आक्रमण करता है तो उसे सउदी अरब पर भी आक्रमण माना जाएगा और ये दोनों देश मिलका उसका मुकाबला करेंगे। ईरान ने अब सउदी अरब पर भी बमबारी शुरू कर दी है लेकिन पाकिस्तान उस रक्षा समझौते को रद्दी की टोकरी के हवाले कर चुका है और उसने ईरान के हमले से सउदी अरब को बचाने के लिए कुछ भी नहीं किया। इस बीच अब सउदी अरब ने पाकिस्तान का नाम लेकर ईरान को धमकी दे दी है कि यदि ईरान ने सउदी अरब पर हमले बंद नहीं किये तो वह पाकिस्तान के परमाणु बम का इस्तेमाल करने पर बाध्य हो जाएगा। सउदी अरब के इस बयान से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और आर्मी चीफ असीम मुनीर के होश उड़ गये हैं। उन्हें लग रहा है कि सउदी अरब के इस बयान के बाद ईरान कहीं पाकिस्तान को भी निशाने पर न ले ले। वैसे भी पाकिस्तान और ईरान के बीच सीमा विवाद को लेकर पुरानी तनातनी चलती आ रही है। कुछ माह पहले जब अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर हमला किया था तब अमेरिका ने पाकिस्तान के एयरबेस का इस्तेमाल किया था। यह बात भी ईरान भूला नहीं है। पाकिस्तान के खिलाफ यदि ईरान ने अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की है तो इसकी सबसे बड़ी वजह चीन है क्योंकि चीन का अरबों डॉलर रूपये पाकिस्तान में लगा हुआ है और यदि ईरान पाकिस्तान पर बम बरसाएगा तो चीन को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। यही नहीं बल्कि चीन ईरान को जो सैन्य मदद दे रहा है वही भी पाकिस्तान के रास्ते ही ईरान तक पहुंच रहा है। इसलिए भी ईरान पाकिस्तान के प्रति नरम रूख अपनाए हुए है लेकिन कभी भी उसका प्रकोप पाकिस्तान पर भी टूट सकता है और पाकिस्तान दो पाटों के बीच पीस सकता है।

राज्यसभा में एनडीए की बढ़ गई ताकत

राज्यसभा की रिक्त हुई 37 सीटों की चुनाव में एनडीए ने 22 सीटें जीतर राज्यसभा में अपनी ताकत बढ़ा ली है। 245 सदस्यों वाली राज्यसभा में 233 सदस्य चुनकर आते हैं जबकि 12 सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनित करते हैं। राज्यसभा में सबसे ज्यादा 103 सदस्य भाजपा के हैं और वह राज्यसभा में सबसे बड़ी पार्टी बनी हुई है। राज्यसभा के चुनाव होने के बाद उसके सदस्यों की संख्या और बढ़ गई है वहीं एनडीए के सदस्यों की संख्या बढ़कर 135 हो गई है। इस तरह अब राज्यसभा में एनडीए को पूर्ण बहुमत मिल गया है। अभी बंगाल और असम सहित पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव होने है उसमें भी यदि भाजपा को सफलता मिलती है तो निकट भविष्य में राज्यसभा की जो सीटें खाली होंगे उसमें भी भाजपा के ज्यादा राज्यसभा सदस्य बनेंगे और कोई बड़ी बात नहीं कि भाजपा अकेले अपने दम पर राज्यसभा में बहुमत प्राप्त कर ले। बहरहाल एनडीए को अब राज्यसभा में स्पष्ट बहुमत मिल जाने के बाद सरकार को अपने उन सभी लंबित बिलों को पास कराने में असानी हो जाएगा जो लंबे समय से लटके हुए थे। लोकसभा में तो एनडीए को पूर्ण बहुमत प्राप्त है किन्तु राज्यसभा में किसी विधेयक को पारित कराने के लिए उसे आईएनडीआईए से बाहर के अन्य दलों का सहयोग लेना पड़ता था। लेकिन अब एनडीए अपने बलबूते पर ही राज्यसभा में ऐसे बिलों को पास कराने में सक्षम हो जाएगा।

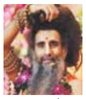

सद्गुरू बोधामृतम्

सदगुरू ऋतेश्वर

◆ तुम जब तक दूसरों के मन को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न करते रहोगे तब तक तुम भिखारी की तरह दु:खी रहोगे और जिस दिन तुम्हें यह समझ में आ गया मैं अपने मन की बात करता हूं, लोग अपने मन की बात करते हैं, मुझे मौज में रहना है, उन्हें अपनी मौज में रहना है, तो आप सु:खी हो जाओगे।

आज का इतिहास

नई दिल्ली वार्ता। 1739 नादिरशाह ने दिल्ली सल्तनत पर कब्ज़ा किया। मयूर सिंहासन के गहने चोरी किये और उन्होंने दो महीने तक दिल्ली में लूटमार की थी। 1800 : अलेसांद्रों वोल्टा ने इलेक्ट्रिक बैटरी की खोज के बारे में सूचना दी। 1970 संविधान सभा के सदस्य और प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी जयपाल सिंह मुंडा का निधन। 1990 अर्धरात्रि में नामीबिया की स्वतंत्रता की घोषणा। 1991 बेगम ख़ालिदा जिया बांग्लादेश की राष्ट्रपति निर्वाचित। 1999 प्रख्यात ब्रिटिश अमूर्त चित्रकार पैट्रिक हेरोन का निधन। 2002 नेपाल के प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा 6 दिवसीय यात्रा पर भारत पहुँचे, जिम्बाब्वे राष्ट्रमंडल से निलम्बित। 2003 इराक पर अमेरिकी हमला शुरू। 2006 - अफ़ग़ानिस्तान के विदेश मंत्री ने दावा किया कि ओसामा बिन लादेन पाकिस्तान में है। 2009 न्यायमूर्ति चन्द्रमौली कुमार प्रसाद इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मूख्य न्यायधीश नियुक्त हुए। 1966 अलका याग्निक, भारतीय गायक। 2006 अफ़ग़ानिस्तान के विदेश मंत्री ने दावा किया कि ओसामा बिन लादेन पाकिस्तान में है।

एलओपी विरुद्ध एलपीजी: देश में घमासान 'कौन' मचा रहा है?

16 मार्च 2026 को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी विभिन्न मुद्दों को लेकर हंगामा मचाते रहे। भारत अमेरिका व्यापार समझौता, संवैधानिक संस्थाओं पर बार-बार हमले एलपीजी संकट पर आदि मुद्दों पर राहुल के रवैया को अराजक बतलाया है। निश्चित रूप से उनके कुछ मुद्दे विचारणीय हैं जिन पर देशव्यापी विचार-विमर्श व चर्चा होनी चाहिए। राहुल द्वारा लगाए गए आरोपों पर निष्पक्ष जांच की जरूरत है, भले ही राहुल के तरीकों से असहमति क्यों न हो। लेकिन लोकतंत्र की खूबसूरती यही है कि ''असहमति'' को ''सहमति'' के साथ ''संतुलित'' किया जाए, न कि कुतर्क, व्यक्तिगत हमले या ''इतिहास'' के सहारे दबाया जाए।

राजीव खंडेलवाल

दुर्भाग्यवश वर्तमान राजनीति में ''गुण-दोष'' और ''तर्क'' का स्थान ''कुतर्क'' ने ले लिया है।इसी बीच अचानक एक नया 'घमासान' शुरू हो गया। मीडिया में बहस का केंद्र ''एलओपी'' की जगह ''एलपीजी'' ने ले ली।

''वैश्विक संकट का असर: ईरान-अमेरिका-इजराइल''

ईरान-अमेरिका-इजराइल युद्ध के कारण खाड़ी क्षेत्र में तेल और गैस आपूर्ति निश्चित रूप से बाधित हुई है। ''स्ट्रेट ऑफ होर्मुज'' प्रभावित होने से भारत की एलपीजी आयात पर गंभीर असर पड़ा है। भारत अपनी कुल एलपीजी खपत का लगभग 60त्न आयात करता है, जिसमें 85-90 प्रतिशत मध्य पूर्व से आता है। युद्ध के चलते शिपमेंट्स प्रभावित हुईं, जिससे कीमतों में बढ़ोतरी हुई और कुछ क्षेत्रों में वितरण में देरी की खबरें भी आईं। एटीएफका बेस प्राइस बढ़ा है। विमानन कंपनियों ने फ्यूल सरचार्ज लगा दिया है।

'' सरकार की त्वरित प्रतिक्रिया और उपाय''

यद्यपि सरकार ने त्वरित कदम उठाए। पेट्रोलियम मंत्रालय ने 8 मार्च 2026 को एलपीजी कंट्रोल ऑर्डर जारी किया, जिसमें सभी रिफाइनरियों को अधिकतम एलपीजी उत्पादन के निर्देश दिए गए। परिणामस्वरूप घरेलू उत्पादन में 30त्न से 35त्न तक की वृद्धि हुई। घरेलू उपभोक्ताओं को प्राथमिकता दी गई, जबकि व्यावसायिक उपयोगकर्ताओं के लिए पाइप्ड नेचुरल गैस की ओर बदलने की अपील की गई। सरकार ने स्पष्ट कहा घरेलू स्तर पर कोई कमी नहीं है। आपूर्ति वैकल्पिक स्रोतो से बढ़ाई जा रही है और काला बाजारी-होर्डिंग पर सख्ती से नकेल कसी जा रही है।

'' ई-केवाईसी संशोधन: बुकिंग में नई व्यवस्था ''

सरकार ने एलपीजी बुकिंग को और पारदर्शी बनाने के लिए ई-केवाईसी को अनिवार्य किया है। पेट्रोलियम मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि यह केवल उन उपभोक्ताओं के लिए है जिन्होंने पहले ई-केवाईसी नहीं किया है। यदि आप पहले कर चुके हैं, तो दोबारा नहीं करना है। जिन उपभोक्ताओं का अंतिम रिफिल जून 2025 से पहले का है, उन्हें ई-केवाईसी पूरा करने तक सिलेंडर नहीं मिलेगा। ये उपाय डुप्लिकेट कनेक्शन रोकने, सब्सिडी लीकेज रोकने और ब्लैक मार्केटिंग पर अंकुश लगाने के लिए है। ऑनलाइन बुकिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है, और डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड कवरेज 53% से बढ़ाकर 72% किया गया है।

'' होर्डिंग पर सख्त कार्रवाई ''

प्रशासन एवं गैस एजेंसी कंपनियों ने देश के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर छापेमारी की। 16 मार्च 2026 तक 12,000 से अधिक छापे मारे गए और 15,000 से ज्यादा एलपीजी सिलेंडर जब्त किए गए। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, केरल, गोवा, जम्मू-कश्मीर, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में प्रमुख कार्रवाई हुई। ये कार्रवाईयां आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत हो रही है, ताकि पैनिक बाइंग और ब्लैक मार्केटिंग रोकी जा सके।

'' संकट की वास्तविकता: अफ्वाहें या पैनिक बाइंग' '?

मुख्यधारा का मीडिया जो अब तथाकथित 'गोदी मीडिया' के नाम से जाना जाता है, आश्चर्यजनक रूप से लंबी-चौड़ी लाइनों की तस्वीरें दिखा रहा है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, पुणे, बेंगलुरु और गोवा जैसे शहरों में गैस एजेंसियों के बाहर भीड़ दिखाई दे रही है। परंतु सवाल उठता है, यह संकट कितना वास्तविक है? या अफ्वाहों और पैनिक बाइंग का? सामान्य प्रक्रिया यही है कि जब सिलेंडर खाली होता है, तभी रिफिल कराया जाता है। दो-तीन सिलेंडर रखने वाले उपभोक्ता भी तभी जाते हैं जब जरूरत पड़ती है। इसलिए लंबी लाइनों के बावजूद 'संकट' को ''अफ्वाह'' बताना तथ्यों से ''अनाचार'' है। सरकार का सूचना तंत्र लगातार आश्वासन दे रहा है कि निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। सवाल यह है कि आपूर्ति श्रृंखला टूट कहां रही है? सरकार को स्थानीय वितरण नेटवर्क, ट्रांसपोर्ट और एजेंटों की भूमिका की जांच करनी चाहिए।

एलपीजी संकट वि. एलओपी मुद्दे: मीडिया और संसद में बदलाव

''एलपीजी'' का यह संकट ''एलओपी'' के मुद्दों से कहीं बड़ा घमासान मचा रहा है। राहुल गांधी और विपक्ष के अन्य मुद्दे मीडिया से ''गायब'' होकर ''नैपथत्य'' मे चले गए हैं। अब संसद में भी एलपीजी मूल्यवृद्धि और आपूर्ति पर ही हंगामा हो रहा है। लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन जब वैश्विक संकट रसोई तक पहुंच जाता है, तो प्राथमिकता बदल जाती है।

'' निष्कर्ष और सुझाव' '

देश के 33 करोड़ से अधिक घरेलू उपभोक्ताओं की रसोई को कोई संकट नहीं पहुंचना चाहिए यह सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। पैनिक बाइंग रोकने, काला बाजारी पर अंकुश लगाने और वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा देने की जरूरत है। मीडिया को जिम्मेदारी दिखानी चाहिए। तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग करनी चाहिए। आखिर भाजपा के लाखों कार्यकर्ता आज हैं कहां? वे क्यों नहीं जनता के बीच जाकर समस्या का समाधान निकालने में सहायक हो रहे हैं? सरकार को आपूर्ति श्रृंखला मजबूत करने के साथ-साथ जनता को सही जानकारी देकर भ्रम दूर करना चाहिए। तभी ''एलपीजी बनाम एलओपी'' का यह घमासान शांत होगा और देश की प्रगति पर ध्यान केंद्रित रहेगा।

रियाद बैठक के बाद के सवाल और मध्य-पूर्व का भू-राजनीतिक परिदृश्य

महेन्द्र तिवारी

मध्य-पूर्व का भू-राजनीतिक परिदृश्य आज एक ऐसे नाजुक मोड़ पर खड़ा है, जहाँ शांति की आशाएँ धुंधली पड़ती जा रही हैं और बारूद की गंध हवाओं में घुलने लगी है। 18 और 19 मार्च 2026 को रियाद की धरती पर आयोजित अरब और इस्लामी देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक केवल एक औपचारिक राजनयिक आयोजन नहीं थी, बल्कि यह उस गहरे असंतोष और आसन्न खतरे की गूँज थी, जिसने पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया है। इस बैठक का आयोजन उस समय हुआ जब खाड़ी के आसमान में मिसाइलों की गर्जना और ड्रोन की सायरन जैसी आवाजें सामान्य होती जा रही हैं। सऊदी अरब के विदेश मंत्री द्वारा दिया गया यह बयान कि अब ईरान पर भरोसा करने का समय समाप्त हो चुका है, वैश्विक राजनीति में एक बड़े बदलाव का संकेत है।

यह केवल एक कड़ा शब्द नहीं था, बल्कि दशकों से चली आ रही उस छद्म कूटनीति के अंत की घोषणा थी, जिसमें ऊपर से सुलह के प्रयास होते थे और भीतर ही भीतर अविश्वास की खाई गहरी होती जा रही थी। सऊदी नेतृत्व का अब यह खुलकर कहना कि वे सैन्य विकल्प अपनाने से पीछे नहीं हटेंगे, यह दर्शाता है कि अब धैर्य की सीमाएँ टूट चुकी हैं और मध्य-पूर्व एक ऐसे सक्रिय ज्वालामुखी के मुहाने पर है, जिसका विस्फोट पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा को तहस-नहस कर सकता है।

इस तनाव की तात्कालिक जड़ें 28 फरवरी 2026 की उस घटना में निहित हैं, जिसने आधुनिक विश्व इतिहास के एक नए और भयावह अध्याय की शुरुआत की। जब अमेरिका और इजरायल ने ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई का मोर्चा खोला, तो उसके प्रतिघात में ईरान ने जिस आक्रामकता का परिचय दिया, उसने सुरक्षा के तमाम दावों को खोखला साबित कर दिया। ईरान की जवाबी कार्रवाई केवल सैन्य ठिकानों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और कतर जैसे देशों को भी अपनी चपेट में ले लिया। 18 मार्च की शाम रियाद की ओर दागी गई चार बैलिस्टिक मिसाइलें, जिन्हें सऊदी एयर डिफेंस ने सफलतापूर्वक नष्ट तो कर दिया, इस बात का जीवंत प्रमाण थीं कि अब युद्ध किसी दूर देश की सीमा पर नहीं, बल्कि राजधानी के दरवाजे पर खड़ा है। यह घटना कोई संयोग मात्र नहीं थी, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा थी, जिसका उद्देश्य खाड़ी देशों की सुरक्षा संप्रभुता को चुनौती देना और वैश्विक ऊर्जा बाजार में डर का माहौल पैदा करना था। रियाद में जुटी 12 से अधिक देशों की मंडली ने जिस तरह से एक सुर में ईरान की निंदा की, वह इस बात का संकेत है कि अब क्षेत्रीय समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। अब यह संघर्ष केवल दो देशों के बीच का नहीं रह गया है, बल्कि यह एक सामूहिक क्षेत्रीय संकट में तब्दील हो चुका है। ईरान द्वारा कतर के रास लाफन जैसे महत्वपूर्ण ऊर्जा संयंत्रों और अन्य नागरिक क्षेत्रों को निशाना बनाना एक ऐसा कृत्य है, जिसे न केवल सैन्य हमला माना

जा रहा है, बल्कि इसे एक 'आर्थिक आतंकवाद' के रूप में देखा जा रहा है। खाड़ी क्षेत्र दुनिया की ऊर्जा की जीवन रेखा है और इस जीवन रेखा पर किया गया हर प्रहार वैश्विक अर्थव्यवस्था के हृदय की धड़कन को अस्थिर कर देता है। ब्रेंट क्रूड की कीमतों का 110 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुँच जाना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि दुनिया अब एक भीषण महंगाई और आर्थिक मंदी के दौर की ओर बढ़ रही है। विकासशील देशों के लिए यह स्थिति और भी चिंताजनक है, क्योंकि उनकी पूरी अर्थव्यवस्था तेल के आयात और ऊर्जा की स्थिरता पर टिकी होती है। सबसे खतरनाक पहलू यह है कि यह संकट अब केवल स्थल और आकाश तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समुद्र की लहरों पर भी इसका गहरा साया है। होर्मुज जलडमरूमध्य, जिसे दुनिया के तेल परिवहन का गला माना जाता है, अब युद्ध का मुख्य केंद्र बनता जा रहा है। दुनिया के कुल तेल परिवहन का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा इसी संकरे मार्ग से होकर गुजरता है। यहाँ जहाजों की आवाजाही में आई भारी गिरावट और जहाजों को हटाने के देशों के फैसलों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वैश्विक व्यापारिक सुरक्षा अब दांव पर है। यदि यह मार्ग लंबे समय तक बाधित रहता है, तो इसकी परिणति केवल ऊँची कीमतों में नहीं, बल्कि आपूर्ति श्रृंखला के पूरी तरह से टूट जाने में होगी, जिसका प्रभाव दवाओं से लेकर खाद्य पदार्थों तक हर जरूरी वस्तु पर पड़ेगा। यह एक ऐसा मानवीय संकट पैदा कर सकता है, जिसकी कल्पना भी डरावनी है। सऊदी अरब का बदलता रुख इस पूरे परिदृश्य का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक मोड़ है। पिछले कुछ वर्षों में, विशेषकर चीन की मध्यस्थता के बाद, सऊदी अरब और ईरान के बीच संबंधों में सुधार की जो धीमी बयार चली थी, वह अब तूफानी अविश्वास में बदल चुकी है। सऊदी नेतृत्व, जो कभी रक्षात्मक रुख अपनाने और कूटनीति के माध्यम से मुद्दों को सुलझाने का पक्षधर था, अब आक्रामक रणनीति की बात कर रहा है। यह बदलाव केवल नेतृत्व की इच्छाशक्ति का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उन सुरक्षा चुनौतियों का जवाब है जो सीधे तौर पर उनकी संप्रभुता को चुनौती दे रही हैं। दूसरी ओर, ईरान की रहस्यमयी चुप्पी भी कम खतरनाक नहीं है। कूटनीति में 'मौन' का अर्थ अक्सर अगले बड़े प्रहार की तैयारी माना जाता है। क्या ईरान अंतरराष्ट्रीय दबाव के सामने झुकने को तैयार है, या वह अपनी 'प्रॉक्सि' सेनाओं के माध्यम से इस युद्ध को और अधिक विस्तृत करने की योजना बना रहा है, यह आने वाले कुछ ही दिनों में स्पष्ट हो जाएगा।

वैश्विक शक्तियों की भूमिका ने इस स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया है। अमेरिका में ट्रंप प्रशासन का स्पष्ट रूप से इजरायल के पक्ष में खड़ा होना और सऊदी अरब के साथ रक्षा सहयोग को नया विस्तार देना, एक ओर जहाँ क्षेत्रीय देशों को सुरक्षा का आश्वासन देता है, वहीं दूसरी ओर संघर्ष के दायरे को और अधिक खींच देता है। अमेरिका की यह नीति कि वह संघर्ष को नियंत्रित करने के बजाय रणनीतिक रूप से संतुलित करने की कोशिश कर रहा है, आग को बुझाने के बजाय उसे एक निश्चित दिशा में मोड़ने जैसा है।

पाठकों की बात | पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

हमारे अयोध्या धाम में इस वक्त खाने की चीजें मंहगी कर दी हैं कोई बीस रुपए में चार पानी के बतासे दे रहा है वो भी छोटे छोटे आटे वाले, कोई समोसे पंद्रह रुपए में तो गुझिया तीस रुपए में।थाली भोजन में भी क्वालिटी नहीं और मात्रा भी कम।ऊपर से आटो वालों का मनमाना किराया अलग। आज आते समय कुछ यात्रियों को ऐसे बातें करते सुना, परेशान देखा।दुख हुआ। बहुत दूर दूर से लोग आते हैं ध्यान रखना चाहिए। प्रशासन ध्यान दें। सादर निवेदन। **- रिता पांडेय**

ज़िन्दगी हँसे किसी पे, किसी पे रोती है, विश्वास हो तो हर बाज़ी भी होती है सोच में उलझे रहो तो ये छलावा लगे, हर मोड़ पे बस एक नया बहाना लगे, जो दिल से इसे छू ले, वही जान पाए- ये कभी हँसी, तो कभी ज़ख्मों का साया लगे पर जो थामे रहे भरोसे का हाथ, उसी के लिए ये जीत की होती है ज़िन्दगी हँसे किसी पे, किसी पे रोती है।

- चिन्मय शुक्ल

कई कई बार मुझे वो आश्चर्यचकित कर जाता है चुप रहकर ,खामोशी से शिद्दत से प्यार निभाता है कभी मल्लिका तो कभी मुझे शहजादी समझता है मेरे कदम रखने से पहले रास्ता फूलों से भर जाता है। **- मीता खुराना**

खोया अपना रंग है, बनी नही पहचान। दूजों की करके नकल, ढूंढ रहा था मान। ढूंढ रहा था मान, दिखावा तुझको भाया। मौलिकता को छोड़, रंग अपना बिसराया। माया में फंस नील, रहा हरदम ही सोया। अंदर जाना छोड़, रहा बाहर ही खोया।। **- सुनिल शर्मा नील**

बात बिगड़ी सँवारता है कोई बीते कल को बुहारता है कोई आजकल हैं सुकून की नींदें ख़्वाब में आ दुलारता है कोई बिन कहे ही समझ वो जाते हैं दो दिलों की जो वार्ता है कोई कैसे कब ठेस दिल को लगती है कब कहाँ ये विचारता है कोई जिसके बूते चढ़ा था सर पे ये इश्क़ वो ही उतारता है कोई ये हुनर है मेरी क़लम का नहीं मेरा लिक्खा सँवारता है कोई पूछिये मत सबब इबादत का 'पुष्प' को क्यों निहारता है कोई।
- पुष्प सैनी 'पुष्प'

थक गई मैं खुद को बदलते बदलते। मायके ने चाहा चंचल और जिम्मेवार हो बिटिया, ससुराल ने चाहा चुप सहनशील कामवाली बहुरिया ,बच्चों ने चाहा लविंग केयरिंग और स्मार्ट हो मम्मा, सहेलियों ने मुझे दबंग,मुखर, हंसमुख ही अपनाया नहीं होती वो तो भुला देती क्या हूं सच में मैं।

- इंदु वत्स

उम्र भर की बेबसी से थक गया है ज़िन्दगी से कौन अपना है पराया पूछ लो तुम भी खुदी से उसके मन पर क्या है गुजरी तुमने पूछा आदमी से फीस बेटे की गयी थी ब्याज पर लाया किसी से अपना उसको कहके देखो मर वो जाएगा खुशी से। **- मित्र ग़ाज़ियाबादी**

राशि फल

पं. देवव्रत शर्मा

मेष : आज के दिन आपके साथ किसी अन्य के भरोसे रहने के कारण धोखा हो सकता है। आवश्यक कार्यो में ही लापरवाही करने से हानि होगी। घर एवं बाहर का वातावरण विपरीत रहेगा।

वृष: आपका आज का दिन भी शुभफलदायक रहेगा। सेहत उत्तम बनी रहेगी। कार्यो को पूर्ण निष्ठा से करेंगे थोडी बहुत लापरवाही भी कर सकते है फिर भी लाभ के अवसर हाथ से नहीं निकलने देंगे।

मिथुन: आज का दिन आपके लिये सफलता दायक रहेगा। नौकरी अथवा व्यवसाय में आशा के अनुकूल कार्य होने से अन्य लोगो से बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

कर्क: आज का दिन बीते कुछ समय से बेहतर रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल बने रहने से कार्यो के प्रति अधिक गंभीर रहेंगे। प्रातः काल से ही अधूरे पड़े कार्यो को पूर्ण करने में जुट जाएंगे। आर्थिक रूप से भी आज का दिन सहायक रहेगा।

सिंह: स्वास्थ्य सम्बंधित विषयो को छोड़ आज का दिन सामान्य रहेगा। शारीरिक रूप से शिथिल रहने के कारण कार्य व्यवसाय में मन कम ही लगेगा फिर भी मध्यान के आस-पास आकस्मिक धन आगम होने से खुशी मिलेगी।

कन्या: आज का दिन कार्य व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा फिर भी उधारी के व्यवहार यथा संभव ना ही करे अन्यथा धन निश्चित रूप से फंसेगा। परिजनों का सहयोग मिलेगा।

तुला: आज का दिन उतार चढ़ाव वाला रहेगा। स्वभाव में थोड़ा क्रोध रह सकता है फिर भी दैनिक कार्यो में इसका असर नहीं पड़ेगा। आज आप यथार्थ पर कम अमल करेंगे।

वृश्चिक: आज परिस्थितियां बदलने से दिनचर्या में भाग-दौड़ लगी रहेगी। पूर्वनियोजित कार्यक्रमो में भी बदलाव करना पड़ सकता है। विवेक से कार्य करें।

धनु: आपका आज का दिन सामान्य रहेगा। प्रातः काल के समय किसी प्रियजन से विवाद होने के कारण दिन भर की क्रियाएं अस्त-व्यस्त रहेंगी। मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। मन की दुविधा कार्यो में बाधा डालेगी।

मकर: आज के दिन भी आपकी इच्छाओ के विपरीत कार्य होने से निराश रहेंगे। घर एवं कार्य क्षेत्र के अंदरूनी मामलो को लेकर दुविधा में फंस सकते है। व्यर्थ की बहस से बचें।

कुंभ: आज के दिन आप धैर्य धारण करेंगे। संतोषी वृति रहने के कारण भाग-दौड़ से दूर रहेंगे। आपके विचार उच्च कोटि के रहेंगे परन्तु स्वयं के ऊपर इन्हें लागू करने में असमर्थ होंगे।

मीन: आज के दिन आपके मस्तिष्क में विचारो की भरमार रहेगी स्वभाव में भी पल पल में परिवर्तन आएगा जिस कारण अन्य व्यक्ति आपके बारे में गलत धारणा रख सकते है।

QUIZ TIME

1) कर्नाटक के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने का रिकॉर्ड डी. देवराज उर्स को पीछे छोड़कर किसने बनाया?

2) रौलाने उत्सव मुख्य रूप से किस राज्य में मनाया जाता है?

3) किस राज्य सरकार ने हाथियों की निगरानी और मानव-हाथी संघर्ष रोकने के लिए गज रक्षक ऐप लॉन्च किया है?

4) किस राज्य ने पहला नॉर्थईस्ट इंडिया ऑर्गेनिक वीक आयोजित किया था?

5) भारतीय सेना की पहली महिला पायलट कौन बनीं जिन्हें रुद्र सशस्त्र हेलीकॉप्टर उड़ाने की योग्यता मिली?

Ramaquiz

उत्तरमाला- (1) सिद्धारमैया (2) हिमाचल प्रदेश (3) मध्य प्रदेश (4) मेघालय (5) हंसा शर्मा

पहेली

शब्द सामर्थ्य -347

नक्सल ऑपरेशन को समझने भिलाई पहुंचा सैन्य अधिकारियों का डेलीगेट्स

■ बीएसपी-मेडिकल कॉलेज के साथ पुलिस थानों के कामकाज को देखा

भिलाई/नवप्रदेश। नक्सल ऑपरेशन और विकास कार्यों को करीब से समझने के लिए नई दिल्ली स्थित नेशनल डिफेंस के 16 वरिष्ठ अधिकारियों का दल इन दिनों राज्य के दौरे पर है। गुरुवार को यह दल भिलाई पहुंचा, जहां उन्होंने अलग-अलग जगहों का भ्रमण कर यहां की व्यवस्था और कामकाज को देखा और समझा। भ्रमण के बाद सभी अधिकारी पुलिस ऑफिसर्स मेस पहुंचे, जहां उनका स्वागत किया गया।

इस मौके पर दुर्ग संभाग के आयुक्त, कलेक्टर, रेंज आईजी, डीआईजी समेत कई वरिष्ठ प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। अधिकारियों ने सबसे पहले भिलाई इस्पात संयंत्र (बीएसपी प्लांट) का दौरा किया। यहां उन्होंने स्टील उत्पादन की प्रक्रिया को देखा और जाना कि किस तरह यहां बना लोहा देश के विकास में अहम भूमिका निभा रहा है। इसके बाद अधिकारियों ने भिलाई के मेडिकल कॉलेज और भिलाई नगर थाना का भी निरीक्षण किया। थाने में उन्होंने पुलिस की कार्यप्रणाली, केस सुलझाने के तरीके और सुरक्षा व्यवस्था को समझा। इस दौरान अधिकारियों ने शहर में लगे कैमरा सिस्टम, निगरानी व्यवस्था और अपराध

नियंत्रण के तरीकों की भी जानकारी ली। उन्होंने यह जानने की कोशिश की कि यहां पुलिस किस तरह टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर अपराध पर नजर रखती है और मामलों को जल्दी सुलझाती है।

नक्सल ऑपरेशन को देखने गए थे बस्तर

2007 बैच राजस्थान कैडर के आईपीएस और आईजी अमनदीप सिंह कपूर ने बताया कि यह दौरा कोर्स का ही एक हिस्सा है। उन्होंने कहा कि यह एक साल का नेशनल स्ट्रैटेजी और सिक्योरिटी स्टडीज का कोर्स होता है। जिसमें देश और दुनिया की सुरक्षा से जुड़े अलग-अलग पहलुओं को समझाया जाता है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के खिलाफ जो काम हुआ है, वह काफी अहम है और इसे जानना उनके लिए एक सीख की तरह है। नक्सलियों ने का सफाया जिस तरह से प्रदेश में हुआ है और कई नक्सली हथियार छोड़कर मुख्यधारा में लौटे हैं, यह काफी बेहतर कार्य है, जिसे देखने और समझने दल यहां पहुंचा है।

आदिवासी संस्कृति और उनके लाइफस्टाइल को भी देखा

अधिकारियों ने बस्तर क्षेत्र का भी भ्रमण किया। वे जगदलपुर, कांकेर और कोंडागांव जैसे इलाकों में गए, जहां उन्होंने आदिवासी जीवन, उनकी संस्कृति और खेती से जुड़ी गतिविधियों को देखा। अधिकारियों ने यहां के पारंपरिक कला और रहन-सहन के बारे में जानकारी ली। उन्होंने छत्तीसगढ़ के स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया और यहां की सांस्कृतिक परंपराओं को करीब से समझा।

नेशनल स्ट्रैटेजी और सिक्योरिटी पर फोकस

आईजी ने बताया कि इस दौरे का मकसद छत्तीसगढ़ की आर्थिक सुरक्षा, यहां की मुख्य गतिविधियों और खास तौर पर नक्सल ऑपरेशन को समझना है। अमनदीप सिंह कपूर ने यह भी बताया कि इस दल में सेना के अधिकारी भी शामिल हैं, साथ ही कुछ विदेशी अधिकारी भी इस भ्रमण का हिस्सा हैं। सभी लोग यहां के अनुभव से सीख लेकर अपने-अपने क्षेत्र में इसका उपयोग कर सकेंगे।

सुरक्षा के साथ छत्तीसगढ़ ने विकास भी किया: आईजी

अमनदीप सिंह कपूर ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने जिस तरह विकास के साथ सुरक्षा के क्षेत्र में काम किया है, वह काबिले तारीफहै। उन्होंने कहा कि यहां की व्यवस्था और अनुभव उनके लिए काफी मददगार साबित होंगे। उन्होंने बताया कि भिलाई में बीएसपी प्लांट का दौरा करना उनके कार्यक्रम का अहम हिस्सा था, क्योंकि यहां की औद्योगिक गतिविधियों को समझना जरूरी था। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिली कि राज्य की अर्थव्यवस्था किस तरह आगे बढ़ रही है। दौरे के अंतिम दिन यह दल मुख्यमंत्री और राज्यपाल से मुलाकात करेगा। इसके बाद सभी अधिकारी वापस लौट जाएंगे।

न्यूज गैलरी

चेटीचंड पर्व पर आज मांस बिक्री बंद

दुर्ग। नगर पालिक निगम दुर्ग सीमा क्षेत्र अंतर्गत संचालित समस्त पशु वध गृह एवं मांस बिक्री की दुकानों को 20 मार्च को चेटीचंड पर्व के उपलक्ष्य में पूर्णतः बंद रखा जाना अनिवार्य है। आयुक्त सुमित अग्रवाल द्वारा इस संबंध में स्वास्थ्य अधिकारी दुर्गेश गुप्ता को सख्त निर्देश जारी करते हुए कहा गया है कि आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए। निगम की टीम द्वारा नियमित निरीक्षण किया जाएगा। यदि किसी भी क्षेत्र में उक्त तिथि को मांस बिक्री की दुकान या पशु वध गृह संचालित पाया जाता है, तो संबंधित संचालक के विरुद्ध नियमानुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी। निगम प्रशासन ने सभी संबंधित व्यवसायियों से अपील की है कि वे शासन के निर्देशों का पालन करते हुए निर्धारित दिवस पर अपने प्रतिष्ठान बंद रखें एवं सहयोग प्रदान करें।

बकाया किराया पर निगम सख्त, अग्रसेन चौक की 6 दुकानें सीलबंद

दुर्ग। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत बकाया किराया वसूली को लेकर आयुक्त सुमित अग्रवाल के निर्देश पर निगम प्रशासन द्वारा सख्त कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में आज अग्रसेन चौक स्थित निगम द्वारा आबंटित दुकानों में लंबे समय से किराया जमा नहीं करने वाले दुकानदारों के विरुद्ध बाजार विभाग की टीम ने सीलबंदी की कार्रवाई की। निगम अधिकारियों द्वारा पूर्व में संबंधित दुकानदारों को कई बार नोटिस जारी कर किराया जमा करने के निर्देश दिए गए थे, इसके बावजूद किराया जमा नहीं किए जाने पर आज सख्त कदम उठाते हुए दुकानों को सील कर दिया गया। इस कार्रवाई के तहत उमाशंकर चौबे, गोमती बाई, जयसिंह गुरु, दीप्ति सिंह सहित कुल 6 दुकानों को सीलबंद किया गया। कार्रवाई के दौरान निगम के बाजार अधिकारी अभ्युदय मिश्रा, ईश्वर वर्मा, शशिकान्त यादव की टीम मौके पर उपस्थित रही और नियमानुसार पूरी प्रक्रिया अपनाई गई।

संयुक्त कलेक्टर थामस और राजपूत को मिला अतिरिक्त प्रभार

दुर्ग। कलेक्टर अभिजीत सिंह ने जिले में प्रशासनिक कार्यों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से नवीनतम आदेश के अनुसार, संयुक्त कलेक्टर शिल्पी थामस (रा.प्र.से.) को महत्वपूर्ण अतिरिक्त जिम्मेदारियां सौंपी हैं। नए प्रभार के तहत थामस अब जिले की उप जिला निर्वाचन अधिकारी (सामान्य एवं स्थानीय निर्वाचन) के रूप में कार्यभार संभालेंगी। इसके अतिरिक्त, उन्हें पंचायत एवं नगरीय निकाय के परिसीमन कार्य की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी प्रदान की गई है। यह आदेश तत्काल प्रभावशील हो गया है। वह संयुक्त कलेक्टर महेश सिंह राजपूत (रा.प्र.से.) को महत्वपूर्ण अतिरिक्त जिम्मेदारियां सौंपी हैं। नए प्रभार के तहत राजपूत अब अनुविभागीय अधिकारी (रा.) भिलाई-3 के साथ-साथ अनुविभागीय दण्डाधिकारी (स्थरू) भिलाई नगर एवं छावनी का कार्यभार भी संभालेंगे। इसके अतिरिक्त, उन्हें कलेक्टर द्वारा समय-समय पर सौंपे गए अन्य दायित्वों का निर्वहन भी करना होगा। यह आदेश तत्काल प्रभावशील हो गया है।

वैभव ग्लास एंड एल्युमिनियम में चोरी

दुर्ग। जीई रोड गैरेज लाईन में चोरी की बड़ी घटना सामने आई है। जिससे क्षेत्र के व्यवसायियों में दहशत का माहौल व्याप्त है। यहां मालवा होटल के पास स्थित वैभव ग्लास एंड एल्युमिनियम की दुकान में चोरों ने धावा बोलकर गल्ला में रखे 50 हजार से अधिक नगद रकम पर हाथ साफकर फरार हो गए। यह घटना 16 और 17 मार्च की दरम्यानी रात की बताई गई है। चोर दुकान के वेंटिलेशन के रास्ते प्रवेश किए। इसके लिए चोरों द्वारा वेंटिलेशन में लगे एक्जास्ट फैन को तोड़ा गया और चोरी की घटना को अंजाम दी। चोरों का फिलहाल कुछ पता नहीं चल पाया है,लेकिन चोरों की यह करतुत दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। सीसीटीवी कैमरे से मिले फुटेज के आधार पर चोरी की घटना में तीन युवकों के शामिल होने का पता चला है। उनकी उम्र 17 से 20 वर्ष की बताई गई है। चोरों तक पहुंचने पुलिस सीसीटीवी कैमरे की फुटेज खंगाल रही है। इस मामले में दुकान संचालक दर्शन रतनानी की रिपोर्ट पर मोहननगर पुलिस द्वारा अज्ञात चोर के विरुद्ध बीएनएस की धारा 331(4) व 305 के तहत जुर्म दर्ज कर जांच कर रही है।

अग्निवीर भर्ती: ऑनलाइन नि:शुल्क कोचिंग

दुर्ग। भारतीय थल सेना में अग्निवीर भर्ती हेतु 13 फरवरी से 1 अप्रैल तक वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किया गया है। सेना भर्ती कार्यालय रायपुर द्वारा माह जून में पंजीकृत अभ्यर्थियों के लिए ऑनलाइन परीक्षा लिया जाना संभावित है। वेबसाइट पर आवेदन करने वाले दुर्ग जिले के अभ्यर्थियों को जिला रोजगार कार्यालय दुर्ग द्वारा निःशुल्क कोचिंग सुविधा दी जाएगी। निःशुल्क ऑनलाइन कोचिंग सुविधा के लिए आवेदक भारतीय थल सेना में अग्निवीर भर्ती हेतु पंजीयन के बाद 20 अप्रैल 2026 तक आवेदन कर सकते है। आवेदक को सेना भर्ती कार्यालय द्वारा जारी पंजीयन क्रमांक व व्हाट्सअप मोबाईल नम्बर का उल्लेखित करना अनिवार्य होगा।

निधन: भैय्याराम साहू

दुर्ग। कसारीडीह आजाद चौक निवासी बीएसपी के सेवानिवृत्त कर्मचारी भैय्याराम साहू 90 वर्ष का निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार बोरसी मुक्तिधाम में किया गया। वे चेतनलाल साहू, तामेश्वर साहू, सुरेश साहू व दीपक साहू के पिताजी थे।

केबिनेट मंत्री गजेन्द्र की पहल: दुर्ग में 2 करोड़ से 4 नये उद्यानों का होगा निर्माण

दुर्ग/नवप्रदेश। विधानसभा क्षेत्र में 4 नये उद्यान निर्माण किया जाएगा। केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव के पहल से यह संभव हो सका है। मंत्री के वार्ड भ्रमण दुर्ग के नागरिकों ने बच्चों के खेलने और सुबह शाम टहलने के लिए व्यवस्थित उद्यान की मांग किये थे पर उन्होंने तत्काल विभागीय अधिकारीयों से इस्टीमेट बनाकर शासन को प्रस्ताव भेजे जिस पर उद्यान बनाने की सहमति मिलने के साथ ही राशि भी स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। मंत्री यादव ने अपने वार्ड भ्रमण के दौरान नागरिकों से संवाद किया था, जिसमें लोगों ने बच्चों के खेलने और सुबह-शाम टहलने के लिए बेहतर और व्यवस्थित उद्यान की आवश्यकता जताई थी। इस मांग

को गंभीरता से लेते हुए मंत्री ने तुरंत संबंधित विभाग के अधिकारियों को प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए। इसके बाद शासन को प्रस्ताव भेजा गया, जिसे स्वीकृति मिलते ही राशि भी मंजूर कर दी गई। मंत्री यादव ने कहा कि दुर्ग शहर के प्रत्येक वार्ड में नागरिकों की आवश्यकताओं के अनुरूप विकास कार्य लगातार किए जा रहे हैं। प्रदेश की भाजपा सरकार के नेतृत्व में दुर्ग को एक विकसित और सुव्यवस्थित शहर बनाने की दिशा में तेजी से काम हो रहा है। विकास कार्यों के लिए धन की कोई कमी नहीं है और लगातार नई-नई योजनाओं की स्वीकृति मिल रही है। उन्होंने बताया कि इन उद्यानों के निर्माण से बच्चों को सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण में खेलने का अवसर मिलेगा, वहीं बुजुर्गों और अन्य नागरिकों को सुबह-शाम टहलने, व्यायाम करने और समय बिताने के लिए बेहतर स्थान उपलब्ध होगा। यह उद्यान शहर के सामाजिक माहौल को भी बेहतर बनाने में सहयोगी होगा। इन उद्यानों में साफ-सफाई, बैठने की व्यवस्था, बच्चों के लिए झूले, ओपन जिम जैसी सुविधाएं विकसित करने का भी प्रयास किया जाएगा, ताकि हर आयु वर्ग के लोग इसका लाभ उठा सकें।

इन वार्डों में होगा उद्यान का निर्माण

वार्ड 45 पद्मनाभपुर (पूर्व) 64.98 लाख, वार्ड 46 पद्मनाभपुर (पश्चिम) 15.54 लाख, वार्ड 49 विद्युत नगर 57.48 लाख, वार्ड 51 बोरसी (उत्तर) 62.47 लाख।

मां महामाया में 2216 ज्योति कलश प्रज्वलित

कुम्हारी/नवप्रदेश। चैत्र नवरात्र का शुभारंभ हो चुका है। मंदिरों में ज्योति कलशों की स्थापना के साथ ज्योति प्रज्ज्वलित की गई है। मां महामाया मंदिर में भक्तों द्वारा मनोकामना के 2216 ज्योति प्रज्ज्वलित किये गए है। वहीं शीतला मंदिर में 1505 प्रथम दिन मंदिर प्रांगण में सुबह से ही भक्तों का रेला लगा रहा लोग मां महामाया माता के दर्शन के लिए लंबी लाइनों में खड़े रहे वहीं मंदिर के पुजारी एवं समिति के सदस्यों द्वारा अभिजीत मुहूर्त में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ ज्योत प्रज्ज्वलित किये गए। मां महामाया माता मंदिर में अनेक भक्तों की आस्था है स्थानीय ही नहीं बल्कि देश विदेश में रह रहे प्रवासी लोग भी माता के मंदिर में ज्योति प्रज्ज्वलित करवाते है। यही नही नवरात्र के नौ दिनों तक बड़ी संख्या में भक्त माता के दर्शन के लिए आते है। मां महामाया ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष नारायण वर्मा ने समस्त भक्तों को चैत्र नवरात्र की बधाई देते हुए बताया कि मां महामाया मंदिर बहुत पुरातन है एवं बड़ी संख्या में भक्तों की आस्था का केंद्र है। ट्रस्ट बनने के बाद इस मंदिर में लगातार नए निर्माण एवं मंदिर के उत्थान के लिए कार्य किए जा रहे हैं।

संयंत्र में सुरक्षा जागरुकता सप्ताह का समापन

भिलाई/नवप्रदेश। बीएसपी के सीएमएम विभाग में सुरक्षा जागरूकता सप्ताह 2026 का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी (एम एंड यू) एसके बेहेरा रहे। विशिष्ट अतिथि मुख्य महाप्रबंधक (मेकैनिकल) प्रमोद कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (शॉप्स) एचके सचदेव, महाप्रबंधक (सेफ्टी इंजीनियरिंग विभाग) एसके अग्रवाल, महाप्रबंधक (सीएमएम) सुनील कुमार, महाप्रबंधक वर्गीस पी जॉन, महाप्रबंधक ज्ञानेश त्रिपाठी और महाप्रबंधक जीएस राव उपस्थित रहे। समापन समारोह में संयंत्र के वरिष्ठ अधिकारियों सहित प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारी व संविदा कार्मिक भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर विभाग में विभिन्न सुरक्षा संबंधी कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन कर कर्मचारियों व संविदा कर्मियों को कार्यस्थल पर सुरक्षित कार्य पद्धतियों के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत सुरक्षा कविता, सुरक्षा पोस्टर और टूल बॉक्स टॉक (कार्य से पूर्व सुरक्षा चर्चा) प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान पंचायत से कारखाना शीर्षक से एक सुरक्षा नाटिका का मंचन किया गया, जिसकी अतिथियों ने सराहना की।

रुंगटा यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने किया हाईकोर्ट का शैक्षणिक भ्रमण

भिलाई/नवप्रदेश। रुंगटा इंटरनेशनल स्किल्स यूनिवर्सिटी के फॉरेंसिक साइंस विभाग के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक भ्रमण के अंतर्गत छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय का दौरा किया।

इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को न्यायिक व्यवस्था की वास्तविक कार्यप्रणाली, अदालत की संरचना और फॉरेंसिक साक्ष्यों की न्यायालयीन प्रक्रिया में भूमिका से प्रत्यक्ष रूप से परिचित कराना था। निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप आयोजित इस भ्रमण में विद्यार्थियों को न्यायालय की विभिन्न पीठों की कार्यप्रणाली, न्यायाधीशों की

जिम्मेदारियों और वादों की सुनवाई की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। अधिकारियों ने बताया कि किस प्रकार याचिकाओं पर विचार किया जाता है और संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अंतर्गत न्याय सुनिश्चित किया जाता है। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को न्यायालय कक्ष में चल रही सुनवाई को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला। इससे उन्होंने समझा कि वकील किस प्रकार अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं और न्यायाधीश तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर निर्णय प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। साथ ही, आपराधिक मामलों की पूरी प्रक्रिया प्राथमिक जांच से लेकर अंतिम निर्णय तक, पर विशेष चर्चा की गई। फॉरेंसिक विशेषज्ञों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए अधिकारियों ने बताया कि न्यायालय में वैज्ञानिक साक्ष्य किस प्रकार प्रस्तुत किए जाते हैं और उनकी विश्वसनीयता कैसे परखी जाती है।

इससे विद्यार्थियों को अपने विषय, जैसे साक्ष्य के सिद्धांत, अपराध के तत्व और आपराधिक प्रक्रिया, की व्यावहारिक समझ प्राप्त हुई। इस भ्रमण में स्कूल ऑफ़ लाइफ साइंस की डायरेक्टर डॉ नीमा एस बालन का विशेष योगदान रहा। फॉरेंसिक साइंस की एचओडी निशा पटेल और फैकल्टी हिमानी कुमारी ने ऑर्गनाइजर की भूमिका निभाई।

दुनिया को युद्ध की नहीं बुद्ध की जरूरत: मेश्राम

■ ईरान के साथ इजराइल और अमेरिका के युद्ध से विश्वव्यापी विपरीत प्रभाव, डोनाल्ड ट्रंप शांति का मार्ग अपनाएं

भिलाई/नवप्रदेश। दि बुद्धिस्ट सोसायटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय संगठक व छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष अनिल मेश्राम ने ईरान के साथ अमेरिका व इजराइल के जारी युद्ध पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इस युद्ध से किसी का भला नहीं होगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर नुकसान ही होगा। युद्ध की शुरुआत से ही नुकसान हो रहा है। इस युद्ध से पूरी दुनिया में कच्चे तेल, एलपीजी गैस, पेट्रोल व डीजल जैसी रोजमर्रा की जरूरी चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। भारत सहित अन्य देशों के नागरिक मंहगाई सहित भविष्य में उत्पन्न होने वाले अन्य प्रतिकूल प्रभावों को लेकर सशंकित व चिंताग्रस्त हो गए हैं। वर्तमान में यह स्थिति किसी भी दृष्टिकोण से दुनिया के लिए श्रेष्ठ व अनुकूल नहीं मानी जा सकती। युद्ध में संलिप्त देशों के प्रमुखों को भगवान गौतम बुद्ध के शांति के संदेशो को स्मरण कर उसका पालन करना चाहिए। तथागत गौतम बुद्ध ने मानव कल्याण हेतु दुनिया को शांति, मैत्री, प्रेम, करुणा और सद्भावना का संदेश दिया है। युद्ध से किसी भी देश और मानव का कल्याण संभव नहीं है। इससे पूरी दुनिया मे संशय व अराजकता का वातावरण बनेगा, जो किसी भी

दृष्टिकोण से दुनिया के किसी भी देश के लिए सहज नहीं होगा। युद्ध की शुरुआत करने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को ईरान के साथ शांति का मार्ग अपनाते हुए समझौता वार्ता कर हल निकालना चाहिये। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप व अन्य देशों के प्रमुखों को भगवान बुद्ध के शांति, मैत्री, प्रेम, करुणा के साथ मध्यम मार्ग अपनाकर पूरी दुनिया में फैल रहे अशांतिपूर्ण वातावरण को शांत व सहज बनाए।

स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के खिलाफ शहर कांग्रेस अध्यक्ष ने कलेक्टर सौंपा ज्ञापन

दुर्ग/नवप्रदेश। शहर के स्वास्थ्य विभाग में लगातार सामने आ रही लापरवाही एवं अनियमितताओं के खिलाफशहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल ने कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर त्वरित जांच एवं कड़ी कार्यवाही की मांग की। ज्ञापन में बताया कि नसबंदी ऑपरेशन के दौरान हुई महिलाओं की मृत्यु के मामले में आज तक न तो वास्तविक कारणों का खुलासा हो पाया है और न ही कोई जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की गई है। शासन द्वारा निर्धारित 2 लाख की मुआवजा राशि आज तक पीड़ित परिवारों को नहीं दी गई है, साथ ही यह भी सवाल

उठाया गया कि ऑपरेशन में प्रयुक्त दवाइयों की खरीदी सीजीएमएससी के माध्यम से न होकर अन्य स्रोतों से किए जाने की जानकारी सामने आई है। यदि दवाइयाँ अमानक थीं, तो अब तक दोषियों पर क्या कार्रवाई हुई, यह भी स्पष्ट नहीं किया गया है। धीरज बाकलीवाल ने कहा कि जिला चिकित्सालय में डॉक्टरों की कमी के बावजूद चिकित्सकों को सीएमएचओ कार्यालय में अटैच किया जाना गंभीर लापरवाही है, जिससे आम मरीजों को उपचार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बाकलीवाल ने प्रशासन से सभी मामलों की निष्पक्ष एवं उच्च स्तरीय जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की मांग की।

11 सूत्रीय मांग: दुर्ग संभाग प्रभारी राजेश चटर्जी के मार्गदर्शन और जिला संयोजक विजय लहरे के नेतृत्व में हुआ आंदोलन

आधार-आधारित अटेंडेंस, डीए-एरियर्स और संविदा नियुक्ति के मुद्दे पर फेडरेशन का प्रदर्शन

दुर्ग/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ कर्मचारी-अधिकारी फेडरेशन के आव्हान पर जिले भर के सरकारी कर्मचारियों ने आंदोलन किया। भोजन अवकाश के दौरान जिला व ब्लॉक मुख्यालय में कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। कर्मचारियों ने सड़क पर उतरकर 11 सूत्रीय मांगों के समर्थन में नारेबाजी की। अब नई सहिबो, मोदी के गारंटी लेकर रहिबो जैसे नारों के साथ प्रदर्शन किया गया। दुर्ग संभाग में संभाग प्रभारी राजेश चटर्जी के मार्गदर्शन और जिला संयोजक विजय लहरे के नेतृत्व में आंदोलन किया गया। फेडरेशन ने 11 सूत्रीय मांगों को लेकर कहा है कि सरकार ने मांगों के संबंध में उचित निर्णय नहीं लिया तो फेडरेशन उग्र करने के लिए बाध्य होगा। फेडरेशन की प्रमुख मांगों में मोदी की गारंटी के अनुसार जुलाई 2016 से लंबित महंगाई भत्ता एरियर्स की राशि कर्मचारियों के जीपीएफ खाते में समायोजित करने, प्रदेश में चार स्तरीय पदोन्नत समयमान वेतनमान क्रमशः 8, 16, 24 व 32 वर्ष में प्रदान करने, मध्यप्रदेश की भांति अर्जित अवकाश नगदीकरण 300 दिवस करने की मांग प्रमुख रूप से शामिल है। फेडरेशन ने लिपिकों, शिक्षकों, स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग सहित

विभिन्न संवर्गों की वेतन विसंगतियों को दूर करने हेतु पिंगुआ कमेटी की रिपोर्ट सार्वजनिक करने, शिक्षकों की प्रथम नियुक्ति तिथि से सेवा गणना कर समस्त सेवा लाभ देने, सहायक शिक्षकों व सहायक पशु चिकित्सा अधिकारियों को त्रिस्तरीय समयमान वेतनमान प्रदान करने की मांग भी की है।

फेडरेशन ने अनुकंपा नियुक्ति को निःशर्त लागू करने, 10 प्रतिशत की वर्तमान सीमा समाप्त कर सीधी भर्ती के समस्त पदों पर अनुकंपा नियुक्ति देने, पंचायत सचिवों का शासकीयकरण करने, नगरीय निकाय के कर्मचारियों को नियमित मासिक वेतन और समयबद्ध पदोन्नति देने की भी मांग की है।

रैली निकाली, कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

छत्तीसगढ़ कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन के प्रमुख सलाहकार एवं संभागीय संयोजक राजेश चटर्जी, जिला संयोजक विजय लहरे, महासचिव अनुरूप साहू, छत्तीसगढ प्रदेश तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष व जिला मीडिया प्रभारी भानु प्रताप यादव, पशु चिकित्सा अधिकारी संघ संयोजक सुरेश साहू, संयोजक रोजगार विभाग शिवदयाल धृतलहरे, संयोजक शिक्षा विभाग सुखेन्द्र देवांगन व धर्मेन्द्र देशमुख, नगर निगम कर्मचारी संघ संयोजक संजय शर्मा, श्रवण ठाकुर, लघु वेतन कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष मोतीराम वामेन्द्र अमृत, राजस्व विभाग जिला कार्यालय से हेमसिंग ठाकुर, अनीता ब्रम्हभट्ट, कीर्ति रामटेके, धन्शुराम देशमुख, टहल साहू, राजेश यादव, पंकज अहीर, पवन मरकाम, लता देशलहरे व अन्य संगठन के कर्मचारियों ने रैली निकालकर मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। उक्त जानकारी जिला मीडिया प्रभारी भानु प्रताप यादव द्वारा दिया गया।

जर्जर सड़क को लेकर ग्रामीणों ने किया सत्याग्रह, निर्माण की मांग, सीएम के नाम सौंपा ज्ञापन

महासमुंद/नवप्रदेश। खल्लारी की जर्जर व बदहाल सड़क का चौड़ीकरण व सौंदर्यीकरण के साथ गौरव पथ निर्माण की मांग को लेकर ग्रामीण व क्षेत्रवासियों ने सामाजिक कार्यकर्ता व खल्लारी के उपसरपंच तारेश साहू के नेतृत्व में सड़क सत्याग्रह किया।

इस दौरान पदयात्रा व धरना प्रदर्शन किया गया। खल्लारी मातेश्वरी मंदिर में पूजा -अर्चना पश्चात खल्लारी से नेशनल हाईवे-353 तक दो किलोमीटर पदयात्रा की गई। समापन पश्चात सभा स्थल में प्रशासन की ओर से पहुंचे बागबाहरा नायब तहसीलदार नंदनी वर्मा को राज्यपाल व मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। पदयात्रियों ने नेशनल हाईवे में खल्लारी प्रवेश द्वार के समीप सड़क किनारे धरना-प्रदर्शन किया। सड़क सत्याग्रह के तहत आयोजित धरना - प्रदर्शन को उपसरपंच तारेश साहू, भंडारा समिति के अध्यक्ष रमेश तिवारी, सिंघी परिक्षेत्र साहू समाज के पूर्व अध्यक्ष खेमराज साहू, भीमखोज के पूर्व सरपंच प्रमोद चंद्राकर, वरिष्ठ ग्रामीण बैसाखू चक्रधारी, महेंद्र बंजारे, मीडिया एसोसिएशन के सदस्य गिरवर साहू,

मनहरण गुप्ता, मनोज साहू, राजेन्द्र सेन, तुलस सेन, पंच मोगेश पांडेय, वैष्णव समाज के जिला कोषाध्यक्ष रमनदास वैष्णव, पंच ममता यादव, पूर्व पंच भारती यादव आदि उपस्थितजनों ने सभा को संबोधित किया। सभा का संचालन मामाभांचा के उपसरपंच कोमल महानंद व आभार प्रदर्शन तारेश साहू ने किया। इस अवसर पर खल्लारी सरपंच पुष्पेंद्र साहू, सेवक राम साहू, करण निर्मलकर, महेंद्र बंजारे, प्रमोद चंद्राकर, देवक साहू, राजू साहू, गोकुल साहू, खेमराज साहू, इन्द्रकुमार चौहान, माखन यादव, मनहरण गुप्ता, बैसाखू चक्रधारी, मिल्लूराम साहू, रमेश तिवारी, गिरवर साहू, कैलाश चंद्राकर, भोजराम यादव, चमन गुप्ता, उदय साहू, नीलकंठ यादव, नईम खान, रामभजन साहू, रमनदास वैष्णव, रामकुमार साहू, पवन पटेल, मनोज साहू, नोहर साहू, खिलेश साहू, चोखे सिन्हा, रेशम चक्रधारी, राजेन्द्र सेन, विजय साहू, तुलस सेन, फूलसिंग यादव, गयाराम साहू, रूपराम साहू, राजेश सोनी, देवेंद्र दीवान, बसंत निषाद, दीनबंधु साहू, सोनू यादव, कमल सिन्हा, भूपेंद्र ध्रुव, बरूण यादव, यादराम पटेल, कामता यादव, घना निर्मलकर, लुकेश्वर साहू, राजेश मानिकपुरी, डोमेंद्र दिवान, भुनेश्वर सिन्हा, हरिशचंद्र विश्वकर्मा, मोगेश पांडेय, तोषण चक्रधारी, लूलकरण साहू, अवध साहू, आशुतोष मिश्रा, असवंत चौहान, भेखलाल पटेल, नीरज वैष्णव, कुंजलाल निर्मलकर, पुन्नी ठाकुर, ममता यादव, गौरी साहू, रूपेश्वरी चौहान, प्रतिभा यादव, नंदबाई यादव, भारती यादव, रेणुका सोनी, वंदना यादव, निर्मला चक्रधारी, छाया विश्वकर्मा, किरण चौहान, संतोषी बाई सिन्हा, सावित्री बाई सिन्हा, देवकी गुप्ता, राधाबाई दिवान, टोमिन दीवान, माया दीवान, निराबाई दीवान, केशरी विश्वकर्मा, बिंदिया विश्वकर्मा, पार्वती ध्रुव, डेरहिन सावित्री यादव, अहिमन यादव, रेखाबाई यादव, बिमला यादव, पूनम यादव, दुर्गेश्वरी यादव आदि मौजूद रहे।

न्यूज गैलरी

बुनियादी साक्षरता के तहत 22 को महापरीक्षा

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के आकलन हेतु राष्ट्रव्यापी 'महापरीक्षा अभियान' का आयोजन 22 मार्च (रविवार) को किया जाएगा। यह परीक्षा जिले के सभी विकासखंडों में सुबह 10 से शाम 5 बजे तक 170 केंद्रों में आयोजित होगी, जिसमें लगभग 2 हजार नवसाक्षरों के शामिल होने का लक्ष्य है। 15 वर्ष से अधिक उमर के वे शिक्षार्थी, जिन्होंने उल्लास साक्षरता केंद्रों में अध्ययन किया है, इस परीक्षा में शामिल होंगे। सफल प्रतिभागियों को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय एवं राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत संचालित उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के माध्यम से जिले को शत-प्रतिशत साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। अभियान की सफलता के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन, स्वयंसेवी शिक्षक तथा शिक्षा विभाग की टीम सक्रिय भूमिका निभा रही है। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह ने जिलेवासियों से अपील की है कि वे नवसाक्षरों को परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रेरित करें, ताकि वे शिक्षा से जुड़कर आत्मनिर्भर बनें।

अंतिम चयन सूची घोषित

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में कक्षा 6वीं में प्रवेश हेतु आयोजित जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा 2026 का परिणाम नवोदय विद्यालय समिति, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा आधिकारिक रूप से घोषित कर दिया गया है। अभ्यर्थी अपना परिणाम जवाहर नवोदय विद्यालय के सूचना पटल एवं समिति की आधिकारिक वेबसाइट पर देख सकते हैं। परीक्षा की प्रावधिक चयन सूची जारी कर दी गई थी, जिसके परीक्षण उपरांत अब अंतिम चयन सूची भी प्रकाशित कर दी गई है। समिति ने स्पष्ट किया है कि कक्षा 6वीं में प्रवेश की संपूर्ण प्रक्रिया ऑनलाइन माध्यम से ही संपन्न होगी।

सहकारी समितियों में उर्वरकों का भंडारण जारी

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में रबी मौसम अब अंतिम चरण में है और खरीफ की तैयारी जोर पकड़ने लगी है। सहकारी समितियों में उर्वरकों का भंडारण जारी है। वर्तमान स्थिति के अनुसार जिले की समितियों में 7282 टन यूरिया, 6196 टन एसेसपी, 2527 टन डीएपी, 1119 टन एमोपी, 1437 टन एनपीके उपलब्ध है। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे भीड़ और संभावित कमी से बचने के लिए समय रहते उर्वरकों का अग्रिम उठाव कर लें। विभाग ने विशेष रूप से जुलाई से सितंबर के बीच यूरिया की बढ़ती मांग को देखते हुए अभी से तैयारी करने की सलाह दी है। उपसंचालक कृषि एफआर कश्यप ने निजी विक्रेताओं को सख्त चेतावनी देते हुए कहा है कि बिना लाइसेंस बीज, खाद और कीटनाशक का व्यापार करने पर कड़ी वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। नए लाइसेंस के लिए बीज 1000 रुपए, उर्वरक 1250 रुपए, कीटनाशी 1500 रुपए ग्रामीण एवं 7500 रुपए शहरी के लिए शुल्क निर्धारित है । इच्छुक व्यापारी संबंधित विकासखण्ड के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारियों से संपर्क कर आवेदन जमा कर सकते हैं।

घर के परछी में बैठी महिला से मारपीट

महासमुंद/नवप्रदेश। पटेवा पुलिस ने ग्राम भावा में एक महिला के साथ मारपीट के मामले में अपराध दर्ज किया है। पुलिस को हीराबाई ध्रुव ने बताया कि 17 मार्च को 11 बजे वह अपने घर के सामने लेखू ध्रुव के घर के बाहर परछी में बैठी थी। उसी समय लेखू राम ध्रुव नशे में आया और मेरे घर की परछी पर क्यों बैठी है कहते हुए मारपीट और गाली गलौज करने लगा। पुलिस ने रिपोर्ट पर आरोपी के खिलाफबीएनएस की धारा 115(2), 296 के तहत अपराध दर्ज किया गया है।

बाइक खड़ी कर खेत देखने गया, हो गई चोरी

महासमुंद/नवप्रदेश। ग्राम सोनदादर के खेत से एक बाइक चोरी हो गई। मामले की रिपोर्ट पर बागबाहरा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। पुलिस को वार्ड -06 लालपुर बागबाहरा निवासी कोमल सिंह साहू ने बताया कि 15 मार्च को 08.30 बजे वह अपने पुत्र संजय साहू के साथ बाइक होंडा शाईन क्रमांक सीजी-06-एचजी-1270 में ग्राम सोनदादर खेत गया था, बाइक को अपने प्लाट के गेट के सामने लॉक कर खड़ी की थी। लगभग 08.45 बजे देखा तो बाइक गायब थी । पुलिस ने मामले बीएनएस की धारा 303(2) के तहत अपराध दर्ज किया गया है।

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से मंडी उपनिरीक्षक की मौत, एक अन्य गंभीर

महासमुंद/नवप्रदेश। खरोरा- साराडीह मोड़ पर बुधवार शाम अज्ञात वाहन ने एक बाइक चालक को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में मौके पर ही एक बुजुर्ग की मौत हो गई । वहीं एक को गंभीर अवस्था में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें रायपुर रिफर कर दिया गया। जानकारी के अनुसार अछरीडीह तुमगांव निवासी कृषि उपज मंडी महासमुंद में उपनिरीक्षक कमलनारायण साहू (60) बुधवार को भाई पोषण साहू के साथ बाइक पर सवार होकर अछरीडीह से महासमुंद आ रहे थे। देर शाम करीब 7:30 बजे खरोरा-साराडीह मोड़ पर अज्ञात वाहन ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया और फरार हो गया। इस हादसे में कमलनारायण साहू की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद राहगीरों ने इसकी सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी । मौके पर पहुंची पुलिस ने हादसे में घायल पोषण साहू को जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां डाक्टरों ने उनका प्राथमिक उपचार कर उनकी गंभीर अवस्था को देखते हुए रायपुर रिफर कर दिया। वहीं मृतक के शव को पीएम पश्चात उनके परिजनों को सौंप दिया। पुलिस मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है।

हथखोज रेत खदान पर पहुंची टीम बैरंग लौटी, कार्रवाई के दावों की खुली पोल

माफियाओं के आगे नतमस्तक विभाग?

राजिम/नवप्रदेश। गरियाबंद जिले में अवैध रेत उत्खनन को रोकने के सरकारी दावे एक बार फिर खोखले साबित होते नजर आ रहे हैं। मिली जानकारी के अनुसार दो दिन पहले खनिज विभाग की टीम फिंगेश्वर ब्लॉक के हथखोज रेत खदान में बड़ी कार्रवाई करने पहुंची थी लेकिन टीम बिना किसी जब्ती या ठोस कार्रवाई के ही वापस लौट आई।

विभाग की इस कार्यशैली ने प्रशासनिक मुस्तैदी पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सूत्रों के अनुसार विभाग को लगातार शिकायतें मिल रही थीं कि हथखोज खदान में बड़े पैमाने पर अवैध उत्खनन हो रहा है। इस कार्रवाई को गुप्त रखने के लिए टीम के अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपने मोबाइल फोन भी बंद कर रखे थे ताकि खनन माफियाओं को भनक न लगे। इसके बावजूद चर्चा है कि टीम के पहुंचने से पहले ही खदान संचालकों को जानकारी मिल गई थी।

मौके पर मौजूद थीं गाड़ियां और मशीनें : विश्वस्त सूत्रों के हवाले से खबर है कि जब टीम हथखोज पहुंची तो वहां 10 हाइवा और 3 चैन माउंटेन मशीनें अवैध रूप से रेत निकालते पाई गई थी। नियमानुसार इन सभी वाहनों को जब्त कर पुलिस विभाग या खनिज कार्यालय में खड़ा किया जाना था लेकिन टीम के अधिकारी बिना किसी कार्रवाई के वहां से बैरंग लौट आए।

रेत माफियाओं की तगड़ी सेटिंग

अवैध रूप से रेत खनन और परिवहन करने वालों की इतनी तगड़ी सेटिंग है कि कब कहां क्या कार्रवाई होनी है इसका पता पहले ही चल जाता है, क्योंकि विभाग के ही कुछ कर्मचारी छापे की सूचना माफियाओं तक पहुंचा देते हैं। जिससे माफिया छापे के पूर्व ही मशीन, गाड़ियां आदि ठिकाने लगा देते हैं।

टीम ने उच्च अधिकारियों को किया गुमराह : इस मामले में जिले के वरिष्ठ अधिकारियों को यह कहकर गुमराह करने की कोशिश की गई कि वहां महासमुंद की टीम ने कार्रवाई की है जबकि महासमुंद के खनिज विभाग के अधिकारी फगुलाल नागेश ने ऐसी किसी भी प्रकार की कार्रवाई की जानकारी होने से इनकार किया है।

> हथखोज मामले में ऐसी कोई कार्यवाही हुई है उसकी मुझे जानकारी नहीं है, इस मामले की जांच करवाता हूं। जांच में जो भी बात सामने आती है उसके आधार पर कार्यवाही की जाएगी। अवैध खनन करने वालों को छोड़ा नहीं जाएगा और अगर विभाग की मिली भगत की बात सामने आती है तो अधिकारियों को भी नहीं बक्शा जाएगा।
>
> **भगवान सिंह उइके,**
> **कलेक्टर, गरियाबंद**

रात 1 से 4 बजे के बीच चलता है अवैध खेल

जिले भर में रेत के अवैध कारोबार का एक नया पैटर्न सामने आया है। चौबेबांधा, नागझर और पितइबन्ध जैसी खदानों में विभाग की टीम रात 12 बजे तक जांच का औपचारिक दिखावा करती है और उसके बाद इतिश्री कर ली जाती है। असली खेल रात 1 बजे से तड़के 4 बजे के बीच शुरू होता है जब दर्जनों गाड़ियां रेत भरकर सड़कों पर दौड़ती है।

कार से 25 लाख नकद बरामद, जवाब नहीं दे सका युवक, हिरासत में लिया

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान बड़ी कार्रवाई करते हुए एक कार से 25 लाख रुपये नगद बरामद किए हैं। यह कार्रवाई थाना पटेवा पुलिस द्वारा नेशनल हाईवे 53 स्थित ग्राम जोगीडीपा के पास की गई।

पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक वाहन में भारी मात्रा में नगदी रकम ले जाई जा रही है। सूचना के आधार पर चेकिंग के दौरान पिथौरा की ओर से आ रही काले रंग की मारुति ग्रैंड विटारा (क्रमांक ओडी 15 एए 5080) को रोका गया। वाहन चालक ने अपना नाम मोहित आनंद (26), निवासी बुधाराजा, संबलपुर (ओडिशा) बताया।

तलाशी के दौरान कार की बीच वाली सीट पर रखे एक चेकदार बैग से 500-500 रुपये के नोटों के 50 बंडल, कुल 25 लाख रुपये नगद बरामद हुए। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह रायपुर में फ्लैट खरीदने के लिए यह रकम ले जा रहा था, लेकिन मौके पर कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सका।

पुलिस ने धारा 94 बीएनएस के तहत नोटिस जारी करते हुए नगदी, वाहन और दो मोबाइल फोन समेत कुल 40 लाख 45 हजार 840 रुपये की संपत्ति जब्त कर ली है।

फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है और नगदी के स्रोत की पड़ताल की जा रही है।

अवैध महुआ शराब पर पुलिस का एक्शन 110 किलो लाहन नष्ट किया, दो गिरफ्तार

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में अवैध महुआ शराब के निर्माण, बिक्री और परिवहन के खिलाफ पुलिस द्वारा चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत गुरुवार को व्यापक कार्रवाई की गई। थाना पिथौरा, पटेवा, खल्लारी, सरायपाली और तेंदुकोना क्षेत्र की पुलिस टीमों ने संयुक्त रूप से कई गांवों, होटल-ढाबों और संदिग्ध ठिकानों पर दबिश दी।

कार्रवाई के दौरान पिथौरा थाना क्षेत्र के जंघोरा, बरतुंगा, पटेवा के कोलपदर, खल्लारी के जोरातराई, सरायपाली के बारडोली और तेंदुकोना क्षेत्र के बुंदेली में छापेमारी की गई। इस दौरान अवैध देशी एवं विदेशी शराब जब्त की गई, वहीं बड़ी मात्रा में महुआ लाहन जब्त किया। पुलिस ने कुल 12 लीटर 290 एमएल अवैध देशी शराब तथा 540 एमएल अंग्रेजी व्हिस्की जब्त की है। इसके अलावा शराब बनाने में प्रयुक्त बर्तन और अन्य सामग्री भी जब्त की गई। करीब 110 किलो महुआ लाहन को मौके पर नष्ट किया गया। कार्रवाई के दौरान दो प्रकरणों में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि एक मामले में आरोपी फरार है, जिसकी तलाश जारी है। सभी के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की जा रही है। थाना पिथौरा पुलिस ने ढाबों में भी दबिश देकर अवैध शराब बिक्री पर रोक लगाने के लिए संचालकों के खिलाफ कार्रवाई की।

छत्तीसगढ़ में लईका घर के दो साल पूरे

- **राज्यभर में चाइल्ड केयर बढ़ाने के लिए 'केयर सर्कल' बनाने की अपील**

नगरी/नवप्रदेश। लईका घर कार्यक्रम की दूसरी वर्षगांठ के मौके पर, मोबाइल क्रेचेस ने छोटे बच्चों की देखभाल करने वाले केयरगिवर्स और स्थानीय समुदाय के लोगों को एक साथ जोड़ा। छत्तीसगढ़ में लगभग 46ल महिलाएँ काम-काज से जुड़ी हैं, जिनमें से ज्यादातर खेती-किसानी, वनोपज इकट्ठा करने और दिहाड़ी मजदूरी जैसे असंगठित क्षेत्रों में मेहनत करती हैं। वहीं दूसरी ओर, राज्य में 3 साल से कम उम्र के 17 लाख से ज्यादा बच्चे हैं, जिनमें से कई बच्चों के पास माता-पिता के काम पर जाने के बाद सुरक्षित देखभाल का कोई ज़रिया नहीं है।ज़रूरत इतनी ज़्यादा होने के बावजूद, क्रेच सुविधाएं बहुत कम जगहों पर ही उपलब्ध हैं, जिससे कामकाजी और कमजोर वर्ग के परिवारों के बच्चों की देखभाल में एक बड़ा अंतर बना हुआ है।

छत्तीसगढ़ में महिलाओं की कामकाजी भागीदारी देश में सबसे ज्यादा दरों में से एक है, लेकिन इसके बावजूद सुरक्षित बच्चों की देखभाल की सुविधा आज भी हजारों कामकाजी परिवारों के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। पिछले दो सालों मेंनगरी के 'लइका घर' क्रैच समाज के लिए एक ऐसे जरूरी ठिकाने के रूप में उभरे हैं, जो 7 महीने से 3 साल तक के बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद कर रहे हैं। ये केंद्र बच्चों को एक साथ कई सुविधाएं देते हैं।

10 लाख की रंगदारी नहीं दी तो जेल भेजने की धमकी

- **पुलिस कर्मी के भाई पर ट्रांसपोर्टरों का संगीन आरोप, उग्र आंदोलन की चेतावनी**

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले में ट्रांसपोर्टरों के साथ मारपीट, धमकी और कथित अवैध वसूली का गंभीर मामला सामने आया है, जिससे परिवहन व्यवसाय से जुड़े लोगों में भारी आक्रोश है। छत्तीसगढ़ हाईवा परिवहन कल्याण संघ ने इस पूरे मामले को लेकर पुलिस अधीक्षक को लिखित शिकायत सौंपते हुए सख्त कार्रवाई की मांग की है। संघ द्वारा दिए गए

आवेदन के अनुसार, 15 मार्च 2026 को ग्राम पंचायत नांदगांव में सड़क निर्माण कार्य के दौरान ट्रांसपोर्टरों के वाहन चालक और ऑपरेटर मौके पर कार्यरत थे। इसी दौरान गुलशन जांगड़े नामक व्यक्ति वहां पहुंचा और कथित रूप से गाली-गलौज करते हुए ड्राइवरों को जान से मारने की धमकी देने लगा। आरोप है कि उसने खुद को प्रभावशाली बताते हुए अपने भाई अजय जांगड़े के पुलिस विभाग में पदस्थ होने का हवाला दिया और राजनीतिक पहुंच का भय दिखाया। संघ के प्रदेश अध्यक्ष विनोद कुमार अग्रवाल, सचिव प्रदीप चंद्राकर सहित पदाधिकारियों हेमंत चोपड़ा, शैलेंद्र चंद्राकर, ओमकार ठाकुर, हनिफ निजामी और राधेलाल निषाद ने पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार से मुलाकात कर बताया कि गुलशन जांगड़े ने ट्रांसपोर्टरों से 10 लाख रुपए की मांग की। रकम नहीं देने पर झूठे मामलों में फंसाने और जेल भिजवाने की धमकी दी गई। आरोपों के मुताबिक, कुछ देर बाद सिटी कोतवाली में पदस्थ आरक्षक 304 अजय जांगड़े भी मौके पर पहुंच गया। दोनों भाइयों ने मिलकर कथित रूप से गुंडागर्दी करते हुए गंदी गालियां दीं और हाईवा मालिक पुरन निर्मलकर, कमल साहू और तुषार साहू को थाना ले जाकर लॉकअप में बंद कर दिया।

नवरात्रि पर शीतला माता मंदिर सेम्हरतरा में 17 मनोकामना ज्योतियां प्रज्वलित

राजिम/नवप्रदेश। चैत नवरात्रि के पावन पर्व पर राजिम क्षेत्र के ग्राम सेम्हरतरा में स्थित शीतला माता मंदिर आस्था, भक्ति और विश्वास का जीवंत केंद्र बन गया। माता शीतला की कृपा पाने की भावना से ओतप्रोत होकर ग्रामवासियों ने पूरे विधि-विधान के साथ 17 मनोकामना ज्योतियों का प्रज्वलन किया। दीपों की लौ के साथ जब जय माता दी के जयकारे गूंजे, तो वातावरण भावनाओं से भर उठा। माता के चरणों में दीप अर्पित करते हुए ग्रामवासियों की आंखों में

विश्वास, होंठों पर प्रार्थना और हृदय में अपने परिवार, ग्राम और समाज के उज्ज्वल भविष्य की कामना स्पष्ट झलक रही थी। यह आयोजन ग्राम की एकजुटता, संस्कार और परंपरा का सजीव उदाहरण बना। नवरात्रि का यह पर्व हर व्यक्ति को आत्मिक शांति, धैर्य और सकारात्मक ऊर्जा से भरता हुआ दिखाई दिया।

सांकरा के माई दंतेश्वरी मंदिर में जली आस्था की ज्योति, 89 दीप प्रज्ज्वलित

नगरी/नवप्रदेश। ग्राम सांकरा स्थित मां दंतेश्वरी मंदिर में चैत्र नवरात्र के पावन अवसर पर श्रद्धा और भक्ति का अनुपम संगम देखने को मिला। इस वर्ष मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं द्वारा कुल 89 ज्योत प्रज्ज्वलित की गई, जो आस्था, विश्वास और मनोकामनाओं की पूर्ति का प्रतीक बनी। ज्योति प्रज्ज्वलन से पूर्व मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया, जिसे पंडित आचार्य उदेभानू दीवान द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न कराया गया। पूजा के दौरान पूरे मंदिर परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा और माता के जयकारों से माहौल गूंज उठा। इस अवसर पर मंदिर के पुजारी यतीन पटेल सहित देव

समिति के सदस्य गिरवर भंडारी, बिशेष बोरझा, बंशीलाल ध्रुव, छगन साहू, पवन साहू, पतिराम साहू, महेश साहू, बलदाऊ यादव, मोहन साहू, गोपी राम पटेल, राजू पटेल, कृष्णा गोसाईं, खेदू राम पटेल, शंकर पटेल सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। नवरात्र के दौरान मंदिर में प्रतिदिन पूजा-अर्चना, आरती एवं विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है, जिससे पूरे क्षेत्र में भक्ति और उत्साह का माहौल बना हुआ है।

200 साल पुराना माता धाम, दो पहाड़ों के बीच स्थित दरार में स्वतः जलती है जोत, हजारों श्रद्धालु आते हैं मन्नत मांगने

भक्तों को सिर्फ 5 घंटे दर्शन देती है निरई माता

गरियाबंद/नवप्रदेश। चैत्र नवरात्र में मुहेरा के निरई माता पर लोगो की मान्यता और आस्था का खुमार देखते ही बनता है । गरियाबंद से 12 किलोमीटर दूर स्थित निराई माता धाम जहां हजारों श्रद्धालु अपनी मन्नत पूरी करने के लिए मुराद मांगते है । चैत्र नवरात्र के समय पड़ने वाले पहले रविवार को ही यहां केवल पांच घंटे के लिए भक्त दर्शन कर पाते है 200 साल पुराने भक्ति के आस्था केंद्र निरई माता धाम जहां न मूर्ति है और न ही कोई मंदिर फिर भी हजारों श्रद्धालुगण यहां अपनी मन्नत लेकर आते है । और उसके पूरा होने पर बकरे की बलि देकर माता के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते है । इस देव

स्थल की खास बात ये है कि यह मंदिर साल में सिर्फ पांच घंटे के लिए ही खुलता है। आमतौर पर मंदिरों में जहां दिन भर देवी.देवताओं की पूजा होती हैए तो वहीं निरई माता के मंदिर में चैत्र नवरात्रि में केवल एक विशेष दिन ही 5 घंटे यानी सुबह 4 बजे से 9 बजे तक माता के दर्शन किए जा सकते हैं। बाकी दिनों में यहां आना प्रतिबंधित होता है। जब भी यह मंदिर खुलता हैए यहां माता के दर्शन के लिए हजारों लोग पहुंचते हैं। निरई माता की उंची पहाड़ी में नवरात्र के एक सप्ताह पूर्व प्रकाश पुंज ज्योति के समान चमकता हैं। और चैत नवरात्रि के प्रथम सप्ताह रविवार को जात्रा मनाया जाता हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यह मां निरई देवी का ही चमत्कार है कि बिना तेल के ज्योति नौ दिनों तक जलती रहती है।

महिलाओं का जाना है वर्जित

निरई माता मंदिर में महिलाओं को प्रवेश और पूजा.पाठ की इजाजत नहीं है। यहां सिर्फपुरुष ही पूजा.पाठ की रीतियों को निभाते हैं। आपको बता दें कि महिलाओं के लिए इस मंदिर का प्रसाद खाना भी वर्जित है। कहते हैं कि महिलाएं अगर मंदिर का प्रसाद खा लेंए तो उनके साथ कुछ न कुछ अनहोनी हो जाती है। ग्रामीण बताते है कि इसके पीछे 200 साल पुरानी मान्यता है। आज से दो सौ वर्ष पूर्व मोहेरा ग्राम के मालगुजार जयराम गिरी गोस्वामी ने निरई माता की पूजा करने बहुरसिंग ध्रुव के पूर्वजों को छरू एकड़ जमीन दान में दिए थे। जमीन में कृषि कर आमदनी से माता की पूजा पाठ और जात्रा संपन्न हो रहा है।

अफीम तस्करी की जड़ें कबीरधाम तक, पालक के ढाबे पर रेड, राजस्थान का आरोपी गिरफ्तार

■ **42 हजार नकद बरामद, अब तक 7 आरोपी दबोचे गए, दुर्ग से जुड़े तार**

बोड़ला /नवप्रदेश। दुर्ग जिले में उजागर हुई अवैध अफीम खेती और तस्करी का नेटवर्क अब कबीरधाम जिले तक फैलने की पुष्टि होने से इलाके में सनसनी फैल गई है। जांच की परतें खुलने के साथ पुलिस की कार्रवाई चिल्फी मार्ग के ग्राम पालक तक पहुंची, जहां एक ढाबे से अफीम डोडा चोरी की बिक्री किए जाने का खुलासा हुआ। पुलिस ने छापा मारकर राजस्थान के एक आरोपी को गिरफ्तार किया और काउंटर से 42 हजार रुपये नकद बरामद किए। अब तक इस पूरे प्रकरण में 7 आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जबकि पुलिस अफीम की अवैध खेती से लेकर उसकी बिक्री और परिवहन तक फैले नेटवर्क की कड़ियों को जोड़ने में जुटी है। जांच में यह भी सामने आया है कि ढाबों को तस्करी के सुरक्षित ठिकानों की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था, जहां से अलग-अलग इलाकों में अफीम डोडा की सप्लाई की जा रही थी।

दुर्ग जिले के पुलगांव थाना क्षेत्र के समोदा-झेनझरी गांव में अवैध अफीम खेती का मामला सामने आने के बाद पुलिस ने लगातार कार्रवाई शुरू की थी। प्रारंभिक जांच में ही स्पष्ट हो गया था कि यह मामला केवल खेती तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे संगठित तस्करी का पूरा नेटवर्क सक्रिय है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए विकास बिश्नोई, विनायक ताम्रकार, मनीष उर्फ गोलू ठाकुर और छोटूराम सहित कई आरोपियों को गिरफ्तार किया। इसके बाद 15 मार्च को हुई कार्रवाई में रणछोड़ राम उर्फ रणजीत और सुनील देवासी को भी पकड़ा गया।

पूछताछ में खुला पालक ढाबे का राज–पुलिस रिमांड पर लिए गए विकास बिश्नोई से पूछताछ के दौरान कबीरधाम जिले के बोड़ला क्षेत्र के ग्राम पालक का नाम सामने आया।

ढाबा को बनाया था तस्करी का सुरक्षित ठिकाना

जांच के दौरान यह भी सामने आया है कि अफीम तस्करी का यह नेटवर्क कई जिलों तक फैला हुआ था। दो दिन पहले ही धमधाझ्बेमेतरा मार्ग के दो ढाबों पर भी पुलिस ने कार्रवाई की थी। वहां से भी नशीले पदार्थों की बिक्री से जुड़ी रकम बरामद होने के बाद आरोपियों पर एनडीपीएस अधिनियम की धारा 27(ए) जोड़ी गई, जिसमें कठोर सजा का प्रावधान है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार ढाबों का चयन इसलिए किया गया था क्योंकि यहां लगातार वाहनों और लोगों की आवाजाही रहती है, जिससे अवैध कारोबार को छिपाना आसान हो जाता है।

कबीरधाम कनेक्शन की गहराई से जांच-दुर्ग जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल ने बताया कि अवैध अफीम खेती के इस मामले में अब तक 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है और पूछताछ के दौरान कई महत्वपूर्ण सुराग मिले हैं। उन्होंने कहा कि जांच के दौरान कबीरधाम जिले के बोड़ला क्षेत्र के ग्राम पालक स्थित ढाबे का कनेक्शन भी सामने आया है, जहां अफीम डोडा चोरी की बिक्री होने के प्रमाण मिले हैं।

न्यूज गैलरी

छुरिया में विशेष बाल स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

राजनांदगांव/नवप्रदेश। मुख्यमंत्री बाल संदर्भ योजना अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) छुरिया में हमर स्वस्थ लइका कार्यक्रम के तहत विशेष बाल स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन महिला एवं बाल विकास विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। विशेष बाल स्वास्थ्य शिविर में अति गंभीर कुपोषित एवं मध्यम कुपोषित बच्चों की जांच, स्क्रीनिंग एवं स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति का आंकलन कर आवश्यक उपचार की सलाह दी गई। शिविर में 200 बच्चों को मेडिसिन किट वितरित की गई। मेडिसिन किट के माध्यम से प्रोटीन पाउडर, मल्टीविटामिन, जिंक, एलबेंडाजोल, अमॉक्सिसिलिन सहित अन्य आवश्यक दवाइयां एवं पोषण सामग्री वितरित की गई। शिविर के दौरान बच्चों के अभिभावकों को पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से संबंधित महत्वपूर्ण परामर्श प्रदान किया गया, जिससे बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देने एवं कुपोषण की रोकथाम में सहायता मिल सके। शिविर में महिला एवं बाल विकास विभाग की विकासखंड स्तरीय टीम तथा स्वास्थ्य विभाग की ब्लॉक मेडिकल टीम, एएनएम एवं फार्मासिस्ट उपस्थित थे।

वीरेन्द्र चंद्राकर ने दिया जिला कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग अध्यक्ष पद से इस्तीफा

राजनांदगांव/नवप्रदेश। कांग्रेस संगठन से जुड़ी एक अहम खबर सामने आई है जहां जिला कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग के अध्यक्ष पद पर लंबे समय से कार्यरत वीरेन्द्र चन्द्राकर ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने यह फैसला संगठन में नए नेतृत्व को अवसर देने के उद्देश्य से लिया है। जिले की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले वीरेन्द्र चन्द्राकर ने जिला कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर सभी को चौंका दिया है। श्री चन्द्राकर विगत कई वर्षों से इस पद पर रहते हुए संगठन को मजबूत करने और पिछड़ा वर्ग के मुद्दों को उठाने में सक्रिय रहे हैं। अपने त्यागपत्र में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे लंबे समय से अपनी जिम्मेदारी निभाते आ रहे हैं लेकिन अब समय आ गया है कि किसी अन्य कार्यकर्ता को भी इस पद पर कार्य करने का अवसर मिले। उनका मानना है कि संगठन में नए चेहरों और विचारों को जगह मिलना आवश्यक है जिससे पार्टी और अधिक सशक्त बन सके। वीरेन्द्र चन्द्राकर ने अपने कार्यकाल के दौरान संगठन के प्रति समर्पण और निष्ठा के साथ काम किया। उन्होंने कई सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाई और पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। त्यागपत्र देते हुए उन्होंने पार्टी नेतृत्व और कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी संगठन के लिए सक्रिय रूप से कार्य करते रहने की बात कही। उनके इस फैसले को संगठन के अंदर एक सकारात्मक और लोकतांत्रिक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

मगरलोटा में जल जीवन मिशन से आई खुशहाली

राजनांदगांव/नवप्रदेश। विकासखंड राजनांदगांव के ग्राम पंचायत मगरलोटा में जल प्रबंधन एवं शुद्ध पेयजल आपूर्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिला है। शासन की महत्वाकांक्षी जल जीवन मिशन योजना के प्रभावी क्रियान्वयन से अब ग्राम के प्रत्येक घर तक नल के माध्यम से स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हो गई है। योजना के लागू होने से पहले ग्राम की महिलाएं पेयजल के लिए हैंडपंपों एवं दूर-दराज के जल स्त्रोतों पर निर्भर थीं। विशेषकर गर्मी के दिनों में पानी की समस्या और अधिक बढ़ जाती थी। जल जीवन मिशन के तहत पाइपलाइन विस्तार एवं घरेलू नल कनेक्शन प्रदान किए जाने के बाद अब ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं को पेयजल की व्यवस्था हेतु कठिन परिश्रम से मुक्ति मिली है।

बालोद में चिया सीड से कृषि क्रांति

बालोद/नवप्रदेश। जिले में कृषि के क्षेत्र में एक नई क्रांति की शुरुआत हो चुकी है। चिया सीड की खेती अब बालोद में तेजी से लोकप्रिय हो रही है, और इस परिवर्तन के केंद्र में हैं जगन्नाथपुर निवासी योगेश्वर देशमुख (मार्गदर्शक), जिनके मार्गदर्शन में किसानों ने इस नई फसल को अपनाकर आय बढ़ाने की दिशा में ठोस कदम उठाया है।इस पूरी पहल की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी योगेश्वर देशमुख हैं, जिनके तकनीकी मार्गदर्शन और प्रेरणा से बालोद जिले में चिया सीड की खेती की शुरुआत हुई। उन्होंने किसानों को इस फसल के उत्पादन, तकनीक और बाजार की जानकारी देते हुए इसे अपनाने के लिए प्रेरित किया। उनके मार्गदर्शन में ही जिले में चिया सीड उत्पादन की नींव रखी गई, जो अब धीरे-धीरे विस्तार ले रही है।

बीते वर्षों में 10 से अधिक मौतें, हत्या या आत्महत्या जांच कर रही पुलिस

रानीदहरा फिर बना मौत का जलप्रपात युवती का शव मिला, सुरक्षा पर सवाल

बोड़ला/नवप्रदेश। बोड़ला क्षेत्र का प्रसिद्ध रानीदहरा जलप्रपात एक बार फिर सनसनीखेज घटना का केंद्र बन गया है। गुरुवार सुबह यहां झरने के नीचे पानी में एक अज्ञात युवती का शव मिलने से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। यह वही स्थल है, जहां बीते कई वर्षों में 10 से अधिक लोगों की डूबने और हादसों में जान जा चुकी है, लेकिन सुरक्षा के ठोस इंतजाम अब तक नहीं हो सके हैं। लगातार सामने आ रही घटनाएं इस जलप्रपात को खतरनाक क्षेत्र के रूप में स्थापित कर रही हैं और ताजा घटना ने एक बार फिर प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

स्थानीय लोगों और वन विभाग की टीम ने सुबह झरने के नीचे पानी में शव तैरते देखा, जिसके बाद तत्काल पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को बाहर निकालकर कब्जे में लिया। मृतका की उम्र लगभग 25 से 30 वर्ष के बीच बताई जा रही है, लेकिन अब तक उसकी पहचान नहीं हो सकी है। शव को पोस्टमार्टम और शिनाख्त के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बोड़ला के फ्रीजर में सुरक्षित रखा गया है।

थाना प्रभारी रूपक शर्मा ने बताया कि अज्ञात युवती का शव झरने में तैरते हुए मिला है। पुलिस द्वारा अज्ञात मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी गई है। मृतका की पहचान के लिए प्रयास किए जा रहे हैं और आसपास के क्षेत्रों में भी जानकारी जुटाई जा रही है।

घटनास्थल तक पहुंचना आसान नहीं था। पुलिस को लगभग एक किलोमीटर नदी के रास्ते पैदल चलकर झरने तक पहुंचना पड़ा। कठिन परिस्थितियों में पंचनामा कार्रवाई पूरी कर जवानों ने शव को बाहर निकालकर सड़क तक पहुंचाया।

72 घंटे पुराना हो सकता है मामला: स्थानीय जानकारों के अनुसार पानी में डूबने के मामलों में शव अक्सर 48 से 72 घंटे बाद ऊपर आता है। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि यह घटना करीब तीन दिन पुरानी हो सकती है। हालांकि मौत के कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही हो सकेगा।

पुलिस की कार्रवाई

घटना की सूचना मिलते ही एसडीओपी अखिलेश कौशिक के नेतृत्व में पुलिस टीम मौके पर पहुंची। थाना प्रभारी रूपक शर्मा व टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। अज्ञात मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी गई है। प्रारंभिक जांच में मामला संदिग्ध प्रतीत हो रहा है और सभी पहलुओं से जांच की जा रही है।

हादसों का केंद्र बना रानीदहरा

रानीदहरा जलप्रपात बीते वर्षों में कई हादसों का गवाह बन चुका है। यहां डूबने, फिसलने और तेज बहाव में बहने से 10 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। सुरक्षा व्यवस्था, बैरिकेडिंग और निगरानी के अभाव में हर साल जोखिम बना रहता है, जिससे स्थानीय लोग चिंतित हैं।

स्थानीयों की मांग—स्थायी सुरक्षा व्यवस्था हो-लगातार हो रही घटनाओं से स्थानीय लोगों में भय का माहौल है। उन्होंने प्रशासन से स्थायी पुलिस तैनाती, नियमित पेट्रोलिंग और खतरनाक क्षेत्रों में बैरिकेडिंग की मांग की है। फिलहाल पुलिस मृतका की पहचान और मौत के कारणों का पता लगाने में जुटी हुई है।

भगवान झूलेलाल आस्था, संस्कृति और एकता के अमर प्रतीक

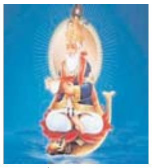

राजनांदगांव/नवप्रदेश। सिंधी समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर में भगवान झूलेलाल का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और श्रद्धेय है। वे केवल एक देवता नहीं, बल्कि पूरे समुदाय की आस्था, पहचान और एकता के प्रतीक हैं। उन्हें जल के देवता वरुण देव का अवतार माना जाता है। झूलेलाल ने अपने दिव्य अवतार से न केवल अत्याचार का अंत किया, बल्कि मानवता को प्रेम, शांति और भाईचारे का संदेश भी दिया। प्राचीन सिंध प्रदेश में मीरख शाह नामक शासक के अत्याचारों से हिंदू समाज अत्यंत पीड़ित था। जब उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाने लगा, तब निराश और भयभीत लोगों ने सिंधु नदी (दरिया) के तट पर एकत्र होकर ईश्वर से रक्षा की प्रार्थना की। उनकी अटूट श्रद्धा और विश्वास से प्रसन्न होकर भगवान ने झूलेलाल के रूप में अवतार लिया। यह अवतरण केवल एक चमत्कार नहीं बल्कि अन्याय के विरुद्ध धर्म और सत्य की विजय का प्रतीक था। भगवान झूलेलाल का जन्म नसरपुर (सिंध) में माता देवकी और पिता रतनचंद लोहानो के घर चैत्र शुक्ल द्वितीया को हुआ जिसे आज चेटीचंड के रूप में मनाया जाता है। उनका बाल्यकाल का नाम उदयचंद था लेकिन पालने में झूलने की उनकी अद्भुत लीला के कारण वे झूलेलाल कहलाए। बचपन से ही उनके भीतर दिव्य शक्तियों के संकेत दिखाई देने लगे थे कहा जाता है कि उनके मुख में सिंधु नदी की धारा दिखाई देती थी। झूलेलाल ने अपने चमत्कारों से मीरख शाह को सत्य का मार्ग दिखाया और उसके अत्याचारों का अंत किया। उन्होंने यह अमूल्य संदेश दिया ईश्वर एक है और सभी धर्म उसी तक पहुँचने के अलग-अलग मार्ग हैं। उनकी यही शिक्षा उन्हें हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बीच पूजनीय बनाती है।

यात्री प्रतीक्षालय की बदहाल स्थिति पर कांग्रेस का अल्टीमेटम

■ **सुधार नहीं तो 22 मार्च को होगा धरना प्रदर्शन**

खैरागढ़/नवप्रदेश। शहर कांग्रेस द्वारा नगर की मूलभूत सुविधाओं को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन की घोषणा की गई । शहर कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अरुण भारद्वाज, विधायक प्रतिनिधि मनराखन देवांगन, नेता प्रतिपक्ष दीपक देवांगन, शेखर दास वैष्णव ने कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल से मिलकर नगर की मुलभुत सुविधा वाले बस स्टैण्ड के यात्री प्रतीक्षालय मे रूकने वाले यात्रियों को हो रही परेशानी को लेकर चर्चा कर पत्र देते हुए कहा की 22 फ़रवरी को शहर कांग्रेस पदाधिकारियों द्वारा यात्री प्रतीक्षालय का निरीक्षण करने के बादे शहर के एक मात्र बस स्टैंड मे स्थित यात्री प्रतीक्षालय मे यात्रियों के लिए पीने के पानी के साथ बैठने की भी व्यवस्था नहीं होने, पुरे परिसर मे गंदगी के साथ साथ शराब की खाली बोतले,डिस्पोजल ,पानी पाउच, शराब की बोतले टूटी पड़ी मिली थी। प्रतीक्षालय यात्रियों के ठहरने की बजाय पूरी तरह नशेडियों का अड्डा बना हुआ है। नगर पालिका और पुलिस प्रशासन को जमीनी हकीकत जानने मौके पर बुलाया गया तो उन्होने एक सप्ताह के अंदर व्यवस्था दुरुस्त करने की बात कही थी. परन्तु एक माह बीतने के बाद भी प्रतीक्षालय की व्यवस्था सुधारने कोई पहल नही हो पाई। जिससे नाराज होकर कोंग्रेसियो ने कलेक्टर से मिलकर कहा कि 22 मार्च व्यवस्था दुरुस्त नहीं की गई तो शहर कांग्रेस नया बस स्टैंड यात्री प्रतीक्षालय के सामने धरना प्रदर्शन करेगी।

बालोद में अतिक्रमण कार्रवाई पर उठा सवाल विधायक संगीता ने कलेक्टर को लिखा पत्र

■ **प्रभावित गरीब परिवारों के पुनर्वास की मांग**

बालोद/नवप्रदेश। जिला मुख्यालय बालोद में हाल ही में चलाए गए अतिक्रमण हटाओ अभियान के बाद यह मुद्दा अब व्यापक चर्चा का विषय बन गया है। बालोद विधायक संगीता सिन्हा ने कलेक्टर बालोद को पत्र लिखकर इस कार्रवाई पर चिंता जताई है और प्रभावित गरीब परिवारों के पुनर्वास की मांग उठाई है। विधायक संगीता सिन्हा ने अपने पत्र में कहा है कि प्रशासन द्वारा ग्राम झलमला और बालोद शहर में सड़कों व सार्वजनिक स्थलों पर किए गए अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई एक सराहनीय पहल है, लेकिन इस दौरान कई गरीब परिवारों के छोटे-छोटे दुकान, गुमटी और घर भी टूट गए, जिनके सहारे वे अपने परिवार का जीवन-यापन कर रहे थे। इस कार्रवाई के चलते कई परिवारों की आजीविका छिन गई और कुछ परिवार बेघर भी हो गए हैं, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि अतिक्रमण हटाने से पहले प्रभावित लोगों से समुचित चर्चा या समन्वय स्थापित करने का प्रयास नहीं किया गया और न ही उन्हें वैकल्पिक व्यवस्था के लिए पर्याप्त समय दिया गया।

दुर्घटना में बेटे की मौत से टूटे परिवार को मिली राह

■ **यूनियन बैंक बना सहारा, 24 घंटे में सौपी 2 लाख की बीमा सहायता**

राजनांदगांव/नवप्रदेश। एक दर्दनाक सड़क दुर्घटना में युवा पुत्र को खोने के बाद शोकाकुल परिवार को आर्थिक संबल प्रदान करते हुए यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया शाखा ओल्ड बसस्टैंड,कैलाश नगर राजनांदगांव ने कम समय मे कागजात की औपचारिकता पूर्ण कर संवेदनशीलता का परिचय दिया है। बैंक द्वारा प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के अंतर्गत मृतक के पिता रामकुमार साहू को बैंक खाते से हर वर्ष कटने वाली बीमा राशि का बडा लाभ मिला है ।

खपरी ढारा मार्ग में जगह-जगह गड्ढे, गिट्टियां बिखरी

■ **डोंगरगढ़ तक जाने वाले पदयात्रियों की जर्जर सड़क लेगी परीक्षा**

खैरागढ़/नवप्रदेश। नवरात्रि पर्व के दौरान शहर से होकर डोंगरगढ़ स्थित मां बम्लेश्वरी मंदिर तक पदयात्रा करने वाले पदयात्रियो की इस बार भी जर्जर सडक़ कड़ी परीक्षा लेगी । शहर से होकर कवर्धा, मप्र, लोहारा, बोड़ला, थान खम्हरिया, गंडई, धमधा, रायपूर, साल्हेवारा, बैहर सहित कई इलाको के पदयात्री पदयात्रा करते है । शहर से कुम्ही खपरी मार्ग को पदयात्रा के लिए कम यातायात होने के चलते सुरक्षित माना जाता है । लेकिन खैरागढ़ से ढारा तक की सडक़ मे खपरी से भंडारपूर, ढारा की सडक़ की स्थिति ज्यादा जर्जर होने के चलते इसबार भी पदयात्रियो को मुसीबतो का सामना करना पड़ेगा । सडक़ जगह जगह से उखड़ चुकी है । लेकिन जानकारी और शिकायत के बाद भी इस पर कार्यवाही नही हो पाई । पिछले बार भी शिकायत के बाद एसडीएम टंकेश्वर साहू की अगुवाई मे लोनिवि अधिकारियो ने निरीक्षण कर इसकी मरम्मत कराई थी लेकिन उसके बाद से सडक़ की स्थिति दयनीय हो चुकी है । मार्ग मे जगह जगह गडढे, उखड़ी गिटिटयां, उधड़ चुके डामर से पदयात्री तो दूर छोटे बड़े वाहनो को भी आवाजाही मे परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है । लगातार मांग के बाद भी अधिकारियो ने समय पर इसकी मरम्मत के कोई उपाय नही किए इसके चलते अब पदयात्रियो के लिए सडक़ मुसीबत बनेगी ।

हजारो पदयात्री गुजरेंगे

चैत्र नवरात्रि के दौरान शहर से होकर खपरी भंडारपूर मार्ग का उपयोग कर डोंगरगढ़ तक हजारो पदयात्रियो का बड़ी संख्या मे रेला लगता है । दिन की बजाय रात्रि मे पदयात्रा करने वाले पदयात्रियो मे आम लोगो के साथ साथ पिछले कुछ सालो से महिलाओ, युवतियों और युवा लोगो की संख्या लगातार बढ़ी है । लेकिन खराब सडक़ मे नंगे पांव पदयात्रा के लिए प्रशासन ने समय पूर्व व्यवस्था बनाने मे कोई रूचि नही दिखाई । जिसके चलते सडक़ की उचित मरम्मत नही हो पाई । ऐसे मे खराब और जर्जर सडक़ पदयात्रियो की परीक्षा लेगी ।

वर्जन

पदयात्रियो की व्यवस्था, सुचारू पदयात्रा के लिए संबंधित विभाग को सडक़ मरम्मत कराए जाने के निर्देश दिए गए है।

पनेका में भ्रष्टाचार की सड़क: डामर उखड़ने का वीडियो वायरल, स्थानीय लोगों में आक्रोश

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में भारी भ्रष्टाचार

राजनांदगांव/नवप्रदेश। राजनांदगांव जिले के पनेका क्षेत्र में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बन रही सड़क निर्माण में गंभीर लापरवाही और भ्रष्टाचार का मामला सामने आया है। निर्माणाधीन सड़क की गुणवत्ता इतनी खराब बताई जा रही है कि डामर परत जगह-जगह से उखड़ रही है। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद भी जिम्मेदार अधिकारी मौके से नदारद हैं।

स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार, निर्माण स्थल पर न तो कोई सूचना पटल लगाया गया है और न ही कोई इंजीनियर या कर्मचारी मौजूद था। इससे कार्य की पारदर्शिता और गुणवत्ता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि यह सड़क निर्माण नहीं, बल्कि जनता के पैसों की खुली बर्बादी है।

सूचना मिलने पर पूर्व पार्षद ऋषि शास्त्री मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि यह सड़क भ्रष्टाचार का जीता-जागता उदाहरण है और संबंधित विभाग पूरी तरह लापरवाह बना हुआ है। ऋषि शास्त्री ने प्रदेश के वरिष्ठ नेता रमन सिंह और पंचायत मंत्री विजय शर्मा से मामले में तत्काल संज्ञान लेने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही दोषियों पर कार्रवाई नहीं की गई, तो राजनांदगांव आगमन के दौरान जनप्रतिनिधियों का कड़ा विरोध किया जाएगा। इस पूरे मामले ने एक बार फिर सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर सवाल खड़े कर दिए हैं, वहीं ग्रामीणों में भारी आक्रोश देखा जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि अफसरों ने सांठगांठ किया है और कार्रवाई नहीं की है।

विबी-जी-राम-जी विकसित भारत को सशक्त करने में एक अहम पहलः मिश्रा

कवर्धा/नवप्रदेश। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन पत्र सूचना कार्यालय , रायपुर द्वारा आज कवर्धा में एक दिवसीय 'वार्तालाप' (मीडिया कार्यशाला) का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य विषय 'विबी-जी-राम-जी ग्रामीण भारत का परिवर्तनकारी बदलाव' था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य नीति आयोग के उपाध्यक्ष श्री गणेश शंकर मिश्रा और विशिष्ट अतिथि के रूप में कवर्धा जिला कलेक्टर श्री गोपाल वर्मा उपस्थित रहे।मीडिया को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री गणेश शंकर मिश्रा ने इस बात पर जोर दिया कि 'विबी-जी-राम-जी' मात्र एक रोजगार देने वाली योजना नहीं है, बल्कि ग्रामीण आबादी के संपूर्ण आजीविका परिदृश्य के कायाकल्प के लिए तैयार की गई एक महत्वाकांक्षी पहल है। उन्होंने बताया कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि कृषि चक्र बाधित न हो, योजना में विशेष रूप से 60 दिनों का एक 'ब्लॉक' शामिल किया गया है, ताकि फसल कटाई के सीजन के दौरान किसान प्रभावित न हों। उन्होंने रेखांकित किया कि चूंकि भारत की 73त्न से अधिक आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है।

न्यूज गैलरी

आईसक्रीम फैक्ट्री में घुसकर मारपीट, अपराध दर्ज

महासमुंद/नवप्रदेश। बेलसोंडा स्थित आईसक्रीम फैक्ट्री में घुसकर तोड़फोड़ व मारपीट के आरोप में सिटी कोतवाली पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है। नांदगांव रोड बेलसोंडा स्थित बिसेन फूड्स कंपनी के संचालक नीरज सिंह बिसेन ने थाने में शिकायत की है कि उनकी फैक्ट्री के खिलाफकी गई शिकायत की जांच के लिये 16 मार्च को खाद्य विभाग, राजस्व विभाग व लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की संयुक्त टीम दोपहर 01 बजे पहुंची थी। टीम के पहुंचने के तत्काल बाद कुणाल चंद्राकर, सूर्या चंद्राकर, तोमेश चंद्राकर तथा अन्य बेलसोंडा व शिकारीपाली निवासी बिना प्रदर्शन की अनुमति फैक्ट्री में रॉड, डंडा व तख्ती लेकर अवैधानिक रूप से प्रवेश कर विरोध प्रदर्शन करने लगे तथा आक्रोशित होकर नारेबाजी कर गाली -गलौज, मारपीट करने लगे। जब उन लोगों को शांतिपूर्वक बात करने तथा जांच टीम को कार्रवाई करने देने का आग्रह किया तब उक्त लोगों ने गाली-गलौज करते हुए फैक्ट्री में कार्यरत मजदूर लक्की साहू और राजेंद्र कहार के साथ मारपीट की। जिससे लक्की साहू के गले और राजेंद्र कहार के हाथ व पेट में चोट आई है। प्रदर्शनकारियों ने फैक्ट्री परिसर में मौजूद आयशर फ्रीजर वेन को नुकसान पहुंचाया। साथ ही उन गाड़ियों के चार्जर तथा उसमें रखे हुए मोबाइल चार्जर चोरी कर ले गए। उक्त लोगों के प्रदर्शन के कारण जांच टीम द्वारा समय पर कार्रवाई भी नहीं की जा सकी। पुलिस ने मामले में आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की धारा 115(2), 296, 3(5), 324(2), 332, 351(3) के तहत अपराध कायम किया गया है। ग्रामीणों ने कहा-सीसीटीवी फुटेज की जांच हो। इधर, मामला दर्ज होने के बाद बेलसोंडा में ग्रामीणों की बैठक हुई, जिसमें फैक्ट्री संचालक द्वारा लगाए गए आरोपों को मयप्रमाण प्रस्तुत करने कहा गया।

गौड ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष शरद भृगु को विधायक धर्मजीत सिंह ने दी बधाई

भाटापारा/नवप्रदेश। श्री आदि गौड़ ब्राह्मण महासभा भाटापारा के अध्यक्ष चुने जाने पर शरद भृगु को विधायक तखतपुर धर्मजीत सिंह ने बधाई एवं शुभकामना दी है। एक सौजन्य मुलाकात के दौरान हुई भेट में विधायक धर्म जीत सिंह ने शरद भृगु का हौसला बढ़ाते हुए अपने समाज श्री आदि गौड़ ब्राह्मण महासभा की सेवा करने का आशीर्वाद दिया वही उन्होंने आश्वस्त किया कि जब भी किसी प्रकार की उनकी जरूरत होगी कोई सेवा की जरूरत होगी,वे हमेशा तत्पर रहेंगे,इस दौरान विधायक ने शरद भृगु को स्मृति चिन्ह भेंट किया। विधायक धर्मजीत से मिले आशीर्वाद पर शरद भृगु ने उनके प्रति कृतज्ञता जाहिर करते हुए उनका आभार व्यक्त किया।

विशाल निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित, 85 लोगों को मिला लाभ

धरसीवां / कूंरा/ नवप्रदेश। नगरपंचायत कूंरा में साहू समाज एवं नगरपंचायत अध्यक्ष गोविंद साहू के नेतृत्व में साहू समाज भवन में बुधवार 18 मार्च को अंजोर मेला अंतर्गत विशाल नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन संपन्न किया गया । शिविर में आंख की बहुचर्चित एम जी एम अस्पताल रायपुर की डाक्टरों की टीम पहुंचकर निशुल्क सेवाएं दिए । उक्त शिविर में कुल 85 लोग लाभान्वित हुए , जिनमें 46 लोगों का आंख जांच कर तुरंत निशुल्क चश्मा डाक्टरों द्वारा दिया गया तो वहीं कूंरा नगर के 8 महिलाएं एवं 12 पुरुषों को आंख आपरेशन हेतु एम जी एम अस्पताल रायपुर ले जाया गया । नगर अध्यक्ष कूंरा गोविंद साहू ने एम जी एम अस्पताल के डाक्टरों को धन्यवाद ज्ञापित किया है कि समय समय पर जिन्होंने कूंरा नगर में निशुल्क नेत्र शिविर लगाकर नगर के कम से कम 500 से अधिक लोगों का नेत्र परीक्षण कर आंख का नया रोशनी दे चुका है और सभी सफल है । कार्यक्रम को सफल बनाने अध्यक्ष गोविंद साहू , पार्षद प्रतिनिधि मोहन प्रजापति , हेमिन बाई साहू , धनसाय साहू , हरिराम साहू , राजकुमार साहू सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे ।

सुशील शर्मा चुनावी दौरे में असम रवाना

भाटापारा/नवप्रदेश। प्रदेश कांग्रेस प्रतिनिधि एवं पूर्व कृषि मंडी अध्यक्ष सुशील शर्मा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर असम रवाना हुए जहां वे कांग्रेस प्रत्याशीयों के समर्थन में चुनाव प्रचार करेंगे। जिला कांग्रेस सचिव सचिंद्र शर्मा ने बताया कि सुशील शर्मा असम के दरंग जिला में चुनाव प्रचार कर अपने गृह नगर 8 अप्रेल को वापस लौटेंगे । इसके पूर्व भी वे गत महीने आसाम दौरे पर गए थे।

पेंशनर्स समाज का धरना प्रदर्शन आज

भाटापारा/नवप्रदेश। छत्तीसगढ़ पेंशनर्स समाज तहसील शाखा भाटापारा द्वारा पेंशनरों के लंबित मांगों के समर्थन में आज 20 मार्च को दोपहर 1:00 बजे से 4:00 बजे तक जनपद पंचायत परिसर में एकदिवसीय धरना प्रदर्शन किया जाएगा। संघ के अध्यक्ष समीर कुमार डे ने सभी सदस्यों से धरना स्थल कार्यक्रम में उपस्थित होने की अपील की है।

शीतला शक्ति पीठ सिहावा में आस्था के 1035 दीप जगमगा रहे

नगरी/नवप्रदेश। चैत्र नवरात्रि के पावन पर्व पर माता शीतला का दरबार एक बार फिर भक्ति, संस्कृति और उल्लास से सराबोर रहा।नवरात्रि के प्रथम दिवस शीतला शक्ति पीठ सिहावा में आस्था के दीप प्रज्वलित करने वालों की भीड़ लगी रही है।प्रमुख घट स्थापना उपरांत ज्योति धारियो ने क्रमवार अपनी आस्था के दीप मां शीतला का दर्शन व विधि विधान से पूजा अर्चना ,संकल्प लेकर शुभ मुहूर्त दोपहर 3 बजे से मनोकामना ज्योति प्रज्वलित की।इस वर्ष चैत्र नवरात्रि में 1023 ज्योति जगमगा रहे है।जिसमें घी के117 व तेल के 918 ज्योति शामिल है घट स्थापना के लिये आचार्य नारायण प्रसाद पाठक ने ज्योति धारियो को संकल्प दिलायी।उन्होंने कहा कि नवरात्रि में आदि शक्ति की उपासना से मनुष्य का जीवन कल्याण कारी हो जाता है।शीतला शक्ति पीठ के अध्यक्ष कैलाश पवार ने बताया

कि शीतला माता हर कष्ट को हरती है।सिर से पुष्प गिराकर आशीर्वाद देती है माता का उदभव स्वंभू होने से पुरे क्षेत्र में माता के दरबार का विशेष महत्व है श्रद्धालुओं के अगाध आस्था माता के प्रति होने से इस मंदिर में दिन प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिये आते है व अपनी मनोरथ के लिये याचनाये करते है चैत्र नवरात्रि को हर्षोल्लास पूर्वक मनाने के लिये व्यापक तैयारी की गई है रंग बिरंगी रोशनी से पूरा मन्दिर परिसर जगमगा रहा है।तृतीय दिवस से अष्टमी तक रोजाना भोजन प्रसादी का वितरण किया जाएगा।

चैत्र नवरात्र: देवी मंदिरों में जले आस्था के ज्योत

महासमुंद। हिन्दू नववर्ष व चैत्र नवरात्र आज से शुरू हो गया। आज अबूझ

मुहुर्त में कुलदेवी मां महामाया मंदिर में पुजारी सहित अन्य श्रद्धालुओं की उपस्थिति नें मुख्य ज्योत प्रज्वलित की गई। बाद अन्य सभी मनोकामना ज्योति प्रज्वलित की गई। यहाँ सुबह से ही माता दर्शन के लिए भक्तों का तांता लगा रहा । इसके अलावा जिले के प्रमुख देवी स्थलों बेमचा खल्लारी, बिरकोनी , भीमखोज खल्लारी, बागबाहरा चंडी, शारदा, रामेश्वरी, बमलेश्वरी और चंपई मंदिरों में भी सुबह से ही श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था।

चैत्र नवरात्रि की शुरुआत, मंदिरों में कलश स्थापना, भक्तों ने जलाए आस्था के ज्योत

गरियाबंद/नवप्रदेश। आस्था, श्रद्धा और शक्ति के पावन पर्व चैत्र नवरात्र का शुभारंभ होते ही गरियाबंद शहर का वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो उठा है। मेन रोड स्थित शिव दुर्गा मंदिर (शीतला मंदिर) में विधि-विधान के साथ घट स्थापना कर माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर मंदिर परिसर में अखंड ज्योत प्रज्वलित की गई, जो पूरे नौ दिनों तक निरंतर जलती रहेगी और देवी शक्ति की उपस्थिति का प्रतीक मानी जाती है। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में कलश स्थापना की और माता के जयकारों से वातावरण गूंज उठा। भक्तों ने माँ दुर्गा एवं शीतला माता से सुख-समृद्धि, शांति और आरोग्यता की कामना की।

नवरात्रि के शुभारंभ पर मंदिर में भव्य भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्यों के साथ नन्हे बालक-बालिकाओं ने मधुर भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। ढोल-मंजीरे और शंखध्वनि के बीच गूंजते जय माता दी के जयकारों ने पूरे क्षेत्र को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया।

प्रसाद वितरण और श्रद्धालुओं की आस्था

पूजन के पश्चात मंदिर समिति द्वारा श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण किया गया। मंदिर परिसर में दिनभर दर्शन के लिए भक्तों का तांता लगा रहा। श्रद्धालुओं ने माँ के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित कर परिवार की खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर वर्षा तिवारी ने कहा, चैत्र नवरात्र शक्ति, साधना और आत्मशुद्धि का पर्व है। इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की आराधना से हमें सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। अखंड ज्योत और घट स्थापना माँ की कृपा को आमंत्रित करते हैं। सभी श्रद्धालुओं को इस पावन अवसर पर भक्ति और संयम के साथ माँ की उपासना करनी चाहिए।

मंदिर समिति के अनुसार, पूरे नौ दिनों तक विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे, जिनमें–नवरात्रि का समापन राम नवमी के दिन भव्य हवन, महाआरती और विशाल भंडारे के साथ किया जाएगा।श्रद्धालुओं से अपील मंदिर समिति ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में मंदिर पहुंचकर माता के दर्शन करें और धार्मिक आयोजनों में भाग लें। भक्तों की सुविधा के लिए जल एवं सेवा व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है। गरियाबंद का शिव दुर्गा मंदिर इन दिनों भक्ति, आस्था और उत्साह का केंद्र बना हुआ है। माता के जयकारों और भजन-कीर्तन से गूंजता मंदिर परिसर हर श्रद्धालु को आध्यात्मिक अनुभूति करा रहा है। जय माता दी÷ के उद्घोष के साथ पूरा शहर नवरात्रि की भक्ति में सराबोर नजर आ रहा है।

अखंड ज्योत और घट स्थापना का महत्व

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नवरात्रि में अखंड ज्योत प्रज्वलित करना माँ दुर्गा की कृपा और शक्ति का प्रतीक है। यह घर-परिवार में सकारात्मक ऊर्जा, शांति और समृद्धि लाने का संदेश देता है। वहीं घट स्थापना को देवी के आगमन का प्रतीक माना जाता है, जिससे वातावरण में पवित्रता और आध्यात्मिकता का संचार होता है।

सरकारी दस्तावेज जलाने के गंभीर मामले में पुलिस की भूमिका संदिग्ध

■ आरोपियों को बचाने का आरोप

नवापारा राजिम/नवप्रदेश। गोबरा नवापारा थाना क्षेत्र में कानून–व्यवस्था पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाते हुए एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जिसमें पुलिस प्रशासन की निष्पक्षता पर सीधा संदेह ग्रामवासियों द्वारा व्यक्त किया जा रहा है। आरोप है कि ग्राम पंचायत कुर्रा के सरकारी दस्तावेजों को जानबूझकर आग के हवाले कर साक्ष्य मिटाने जैसे संगीन अपराध में संलिप्त व्यक्तियों पर कार्रवाई करने के बजाय पुलिस उन्हें संरक्षण प्रदान कर रही है।

जानकारी के अनुसार, यह कृत्य न केवल सरकारी अभिलेखों के विध्वंस का मामला है, बल्कि यह भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत दंडनीय अपराध की श्रेणी में आता है। इसके बावजूद आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित नहीं की गई है, जो पुलिस की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करता है।

स्थानीय ग्रामीणों एवं जनप्रतिनिधियों ने आरोप लगाया है कि पुलिस की निष्क्रियता और कथित मिलीभगत के कारण आरोपियों के हौसले बुलंद हैं। यह स्थिति न्याय व्यवस्था की विश्वसनीयता को प्रभावित कर रही है तथा आमजन में आक्रोश और असंतोष का माहौल बना हुआ है।

पहले बुलाया फिर बैरंग लौटाया : विवेचक बलराम ध्रुव ने बुधवार सुबह 8 बजे कुछ ग्रामवासियों को यह कहकर थाने बुलाया कि दो संदिग्ध डमेश साहू (सरपंच पति) एवं एक अन्य को थाने लाया गया है। गिरफ्तारी के दस्तावेज में दो गवाहों की आवश्यकता है आप लोग आकर दस्तखत कर देवें। ग्रामीणजन जब थाने पहुंचे तब पुलिस के समक्ष ही समझौता कर मामले को रफा दफा करने का दबाव बनाया परन्तु ग्रामवासी किसी भी प्रकार से समझौता नहीं करने और कार्यवाही करने की बात पर अड़े रहे।

मानस मंदिर में धूमधाम से मनाया गया हिंदू नववर्ष

■ यज्ञ–पूजन के साथ हुआ पंचांग और कलश पूजन

छुरा / नवप्रदेश। नगर में स्थित मानस मंदिर प्रांगण में हिंदू नववर्ष के पावन अवसर पर श्रद्धा और भक्ति के साथ विविध धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विधिवत यज्ञ-हवन, पंचांग पूजन एवं कलश पूजन संपन्न कराया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हुई, जिसमें यज्ञेश महराज ने यज्ञ पूजन कराया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने आहुति देकर नववर्ष के मंगलमय होने की कामना की। इसके पश्चात पंचांग पूजन कर नए वर्ष के शुभ मुहूर्त, तिथि एवं ग्रह-नक्षत्रों की जानकारी दी गई।

कलश पूजन के साथ वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो गया। मंदिर परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और एक-दूसरे को हिंदू नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर नगर के गणमान्य नागरिक, भक्तगण एवं धर्मप्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर समाज में सुख, समृद्धि और शांति की कामना की। तत्पश्चात मानस मंदिर से बजरंग चौक तक शोभायात्रा निकालकर बजरंग चौक में भगवान बजरंगबली की पूजा की गई फिर वह सुबह यात्रा निकालकर मां शीतला मंदिर में पहुंचकर माता जी की पूजन अर्चन कर पुनः मानस मंदिर प्रांगण में पहुंची।

अंडर ट्रायल रिव्यू कमेटी ने जिला जेल का किया निरीक्षण

■ व्यवस्थाओं का लिया जायजा

महासमुंद/नवप्रदेश। अंडर ट्रायल रिव्यू कमेटी ने आज बेमचा स्थित जिला जेल का निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं का विस्तृत जायजा लिया। यह निरीक्षण छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के निर्देश एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के मार्गदर्शन में किया गया।

निरीक्षण के दौरान कमेटी की अध्यक्ष एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती अनिता डहरिया, पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार तथा मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट व प्राधिकरण की प्रभारी सचिव सुश्री चेतना ठाकुर मौजूद रहीं। उन्होंने जेल में बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं की बारीकी से समीक्षा की।

कमेटी ने जेल परिसर में स्थापित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्ष, बैरकों की स्थिति, नए बैरकों के निर्माण, मुलाकात कक्ष, विधिक सहायता कक्ष, पेयजल व्यवस्था, शौचालयों की स्थिति, भोजन की गुणवत्ता और बंदियों को दिए जा रहे वस्त्रों की स्थिति का निरीक्षण किया। साथ ही बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही प्राथमिक चिकित्सा सुविधाओं की भी जांच की गई।

नगरी के छात्र नोमेश का आईआईएम रायपुर कार्यशाला में चयन

नगरी/नवप्रदेश। जिलाधीश महोदय जिला धमतरी अविनाश मिश्रा के निर्देशन में शासकीय सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी में प्राचार्य डॉ. मनदीप खालसा के मार्गदर्शन एवं प्रो.कौशल नायक प्लेसमेंट प्रभारी के संयोजन में भारतीय उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए, भारतीय प्रबंध संस्थान–आईआईएम और सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा आयोजित छः दिवसीय कार्यशाला में महाविद्यालय के विद्यार्थी नोमेश का चयन हुआ। यह कार्यक्रम उन नवोन्मेषी विचारों वाले उद्यमियों के लिए था जो अपने विचार को एक सफल व्यवसाय में बदलना चाहते हैं। नोमेश एमएस–सी वनस्पति शास्त्र चतुर्थ सेमेस्टर का छात्र है। समस्त प्रतिभागियों में एकमात्र नोमेश ही विद्यार्थी रहा । छात्र नोमेश ने आईआइएम भारतीय प्रबंधन संस्थान रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर महाविद्यालय का मान बढ़ाया है। कार्यशाला में देशभर के सफल उद्यमियों के बीच, नोमेश ने अपने 'इथनोमेडिसिन' और 'हर्बल मेडिसिन' पर आधारित स्टार्टअप मॉडल को प्रस्तुत किया।

भटगांव पुलिस ने मादक पदार्थ के साथ दो आरोपियों को दबोचा

■ आरोपी से 06 किलो गांजा और मोटर जब्त

भटगांव/नवप्रदेश। नगर भटगांव मे एक बार फिर भटगांव थाना प्रभारी शिव कुमार धारी ने अवैध गांजा के खिलाफ कार्रवाई की है। जहां थाना प्रभारी शिव कुमार धारी के नेतृत्व में मुखबिर से सूचना मिला कि दो व्यक्ति बिना नंबर वाले मोटरसाइकिल में मादक पदार्थ लेकर भटगांव की ओर आ रही है कि सूचना पर घेराबंदी कर रोका गया जिसे पूछने पर अपना नाम रंजू साहू ग्राम बलगी कोरबा तथा दूसरा व्यक्ति लक्ष्मण दास मानिकपुरी ग्राम नवापारा कटघोरा का रहने वाला बताया जिसे विधिवत नोटिस देकर तलाशी पंचनामा तैयार कर तलाशी लिया गया, जो मोटरसाइकिल के ऊपर में रखें लाल रंग की बैग एवं डिक्की को तलाशी लेने पर बैग एवं डिक्की मे,प्लास्टिक झिल्ली से भरा मादक पदार्थ (गांजा)को बरामद कर आरोपी 1 रंजू साहू पिता बाबूलाल साहू उम्र 36 साल साकीन बलगी शांतिनगर थाना बाकी मोगरा जिला कोरबा एवं दूसरा आरोपी लक्ष्मण दास मानिकपुरी पिता कालिदास उम्र 36 साल साकिन नवागांव थाना कटघोरा जिला कोरबा के कब्जे से कुल 06 किलो मादक पदार्थ गांजा पकड़ा जिसकी कीमत 30 हजार रूपये तथा मोटरसाइकिल यूनिकॉर्न कीमती 40 हजार रु जुमला कीमती 70 हजार को मुताबिक जब्ती पत्रक समक्ष गवाह के जप्त कर आरोपी के विरुद्ध धारा 20 (बी) एनडीपीएस एक्ट के तहत विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया जिसे न्यायालय द्वारा न्यायिक रिमांड में भेजा गया। इन सभी कार्यवाही में थाना प्रभारी शिव कुमार धारी सउनि बलीराम निराला प्र.आर.श्रवण बरिहा आर. खेलावन बघेल,राहुल खूंटे अमित चौहान लक्ष्मीकांत तान्जय एवं समस्त थाना स्टाफ विशेष योगदान रहा।

पेज 1 का शेष...

जमीनी स्तर पर केंद्रीय बलों...

बन जाते हैं। सीएपीएफ कैडर अधिकारियों के साथ यह भेदभाव सही नहीं है। बता दें कि छत्तीसगढ़ में सीआरपीएफ, आईटीबीपी, बीएसएफ, एसएसबी और सीआईएसएफ के जवान और अफसर बड़ी संख्या में तैनात हैं। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (5 सीएपीएफ) के संदर्भ में एक गंभीर सच्चाई यही है कि जो मैदान में लड़ रहा है, वही ठहर गया है और जो नीति बना रहा है, वह मैदान में नहीं है।

क्या है मसला?

सीएपीएफ में मुख्य विवाद कैडर अधिकारियों के देरी से होने वाले प्रमोशन और आईपीएस अधिकारियों के डेपुटेशन से जुड़ा हुआ है। मसला लंबे समय से चल रहा है, लेकिन मार्च 2026 से यह फिर से गर्मा गया है। सीएपीएफ अधिकारियों के इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाने वाले अलायंस ऑफ ऑल एक्स-पैरा-मिलिट्री फोर्सेज असोसिएशन के अध्यक्ष और सीआरपीएफ से रिटायर्ड एडीजी एच. आर. सिंह का कहना है कि करीब 13 सालों की लंबी कानूनी लड़ाई के बाद 23 मई 2025 को सुप्रीम कोर्ट से हमारे फेवर में फैसला आया। इसके बावजूद सरकार ने रिव्यू पिटीशन दायर कर दी। जिसे चीफ जस्टिस की पीठ ने 28 अक्टूबर, 2025 को निराधार मानते हुए खारिज कर दिया। फिर भी गृह मंत्रालय ने निर्धारित छह महीने की अवधि में निर्णय को लागू करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया।

सीएपीएफ एसोसिएशन ने दायर की अवमानना याचिका : परिणामस्वरूप, सीएपीएफ अधिकारियों को अवमानना याचिका दायर करनी पड़ी। जिसकी सुनवाई 10 फरवरी और 10 मार्च 2026 को हुई। अंतिम सुनवाई के दिन अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने एक हलफनामा प्रस्तुत कर बताया कि सरकार वैधानिक हस्तक्षेप पर विचार कर रही है। यह स्पष्ट संकेत देता है कि सरकार 23 मई, 2025 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को लागू करने से बचना चाहती है। अब अगली सुनवाई की तिथि 18 मार्च 2026 से बदलकर 1 अप्रैल 2026 कर दी गई है। साथ ही यह भी कि मंत्रिमंडल ने सीएपीएफ (General Administration & Regulation) बिल 2026 को स्वीकृति दे दी है। जिसे वर्तमान संसद के बजट सत्र में प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को निष्प्रभावी करने की योजना बना रही है। जो की सही नहीं है।

छत्तीसगढ़ में अब धर्मांतरण ...

उपरांत मात्र जिला मजिस्ट्रेट को सूचना देना प्रावधानित है। छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंत्र्य अधिनियम 1968 में जबरन धर्मांतरण को एक संज्ञेय एवं जमानतीय अपराध बनाया गया है। जबरन धर्मांतरण के लिए साधारण दण्ड का प्रावधान है।

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति, सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति एवं समय बीतने के साथ समाज में प्रौद्योगिकी तथा संचार के साधनों के विकास के कारण एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तन के लिए बल प्रयोग, लालच, कपटपूर्ण रीति को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के लिए प्रचलित छत्तीसगढ़ धर्म स्वातन्त्र्य अधिनियम 1968 के प्रावधान वर्तमान परिदृश्य में अपर्याप्त हो जाने से एक व्यापक कानून बनाना आवश्यक हो गया है।

महिला ने निगम अफसर...

दिया था। इसी झांसे में अफसर आ गए और उन्होंने अपनी बेटी की शादी के लिए बनाए गहनों को महिला को दे दिया। शिकायत के बाद महिला और उसके 3 अन्य साथियों को पुलिस ने पकड़ा है।

आरोपी छात्र को हाईकोर्ट ने...

उसका बता दिया। अधिवक्ता ने कोर्ट को बताया कि याचिकाकर्ता के पास से सचेत कब्जा साबित करने वाला कोई ठोस सबूत नहीं है। अधिवक्ता ने कोर्ट को बताया, याचिकाकर्ता 12वीं का स्टूडेंट है और उसकी परीक्षाएं इसी महीने शुरू होने वाली हैं। राज्य शासन की ओर से पैरवी करते हुए महाधिवक्ता कार्यालय के लॉ अफसरों ने जमानत का विरोध करते हुए कहा, अभी आरोप-पत्र दाखिल नहीं हुआ।

सीएम हिमंता 7वीं बार...

नेतृत्व जो जिम्मेदारी देगा, उसे निभाऊंगा।

प्रतीक को कांग्रेस ने मार्घेरिटा सीट से उम्मीदवार बनाया था, जहां से उनके पिता 4 बार विधायक रह चुके हैं। असम की 126 सदस्यीय विधानसभा के लिए 9 अप्रैल को मतदान होगा। 4 मई को मतगणना होगी। बीजेपी 126 में से 89 पर चुनाव लड़ेगी। बाकी 37 में से असम गण परिषद (एजीपी) को 26, बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) को 11 सीटें दी गई हैं।

मरीज को अस्पताल ...

बड़ा सवाल यही है कि आखिर कब तक ग्रामीणों को अपनी जान जोखिम में डालकर इलाज के लिए संघर्ष करना पड़ेगा? क्या यह सिस्टम की नाकामी है या जिम्मेदारों की लापरवाही? और आखिर कब बदलेगी इन दूरस्थ गांवों की तस्वीर?

दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएं अभी भी दूर : यह घटना न सिर्फ स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली को उजागर करती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि आज भी दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएं कितनी दूर हैं। एक ओर सरकार मुफ्त इलाज और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के बड़े-बड़े दावे करती है, वहीं दूसरी ओर जमीनी सच्चाई कुछ और ही तस्वीर बयां कर रही है।

शेयर बाजार में 22...

बिकवाली रही। इससे पहले 4 जून 2024 को सेंसेक्स 5.74% गिरा था।

जियोपॉलिटिकल तनाव और जंग जैसी स्थिति में महंगाई बढ़ने का खतरा रहता है। इससे कंपनियों का मुनाफा कम हो सकता है। ऐसे में निवेशक उनके शेयर बेचना शुरू कर देते हैं और इसे सुरक्षित जगह निवेश करते हैं। इससे बाजार में गिरावट आती है।

क्रूड की कीमतें 6% बढ़कर 114 डॉलर प्रति बैरल के पार

अमेरिका और इजराइल की ईरान के साथ जारी जंग के कारण कच्चे तेल की कीमतों में भारी उछाल आया है।

धर्म स्वतंत्रता बिल: यह विधेयक आदिवासियों की मूल जड़ का महाकाव्य है: भावना

कवर्धा/नवप्रदेश। आज विधानसभा में छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंर्त्य विधेयक, 2026 की चर्चा में भाग लेते हुए पंडरिया विधायक ने अपने ओजस्वी भाषण से इसकी गंभीरता और आदिवासी समाज उनकी सभ्यता, संस्कृति और महत्वपूर्ण समस्याओं को विस्तार से रखा। इस दौरान उन्होंने इस विधेयक का समर्थन करते हुए इसे आदिवासियों की मूल जड़ का महाकाव्य बताया। उन्होंने इस विधेयक से जुड़े अपने सुझाव भी साझा किये साथ ही पंडरिया विधानसभा में उनके द्वारा 400 से अधिक आदिवासी लोगों की घर वापसी के दौरान उनके समक्ष आई चुनौतियों, विषयों एवं अपने निजी अनुभव भी सदन के समक्ष रखा।

भावना बोहरा ने चर्चा के दौरान कहा कि छत्तीसगढ़ धर्म स्वातंर्त्य विधेयक, 2026 पर चर्चा कोई सामान्य प्रशासनिक पहल नहीं है। इस ऐतिहासिक और युग-परिवर्तक कदम का वास्तविक श्रेय हमारे संवेदनशील और माटी से जुड़े मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के उस इस्पाती संकल्प को जाता है, जो हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के महान विजन से ऊर्जा प्राप्त करता है। यह डबल इंजन सरकार का वह 'ब्रह्मास्त्र' है, जो हमारी जड़ों को खोखला करने वाली दीमकों का समूल नाश करेगा। यह विधेयक मात्र कागजों पर उकेरा गया एक कानूनी मसौदा नहीं है। यह उन विदेशी ताकतों के खिलाफ भारत के सांस्कृतिक स्वाभिमान का शंखनाद है जो हमारी गरीबी का सौदा हमारी आस्था से करते आए हैं।

उन्होंने कहा कि जब भी इस प्रदेश में धर्म रक्षा और धर्मांतरण के विरुद्ध

प्रतिरोध का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसका पहला पन्ना श्रद्धेय कुमार दिलीप सिंह जूदेव जी के नाम से ही शुरू होगा। उन्होंने पंडरिया विधानसभा अंतर्गत 400 आदिवासी समाज के लोगों की घर वापसी के लिए किये अपने प्रयासों व निजी अनुभव को साझा करते हुए कहा कि जब मैं कुल्हीडोंगरी, नेऊर और कुई-कुकदुर के घने जंगलों में जाती हूँ और अब तक 400 से अधिक अपने वनवासी भाई-बहनों के पैर पखारकर उनकी 'घर वापसी' कराती हूँ, तो उस वक्त जो आँसू उनकी आँखों से गिरते हैं, वे किसी 'धर्म परिवर्तन' के आँसू नहीं होते। वे अपने पुरखों की जड़ों से दोबारा जुड़ने के आँसू होते हैं। जब मैंने 165 आदिवासी परिवारों के पैर धोए, तो मैंने महसूस किया कि उनका धर्मांतरण कभी 'हृदय परिवर्तन' से नहीं हुआ था उनका धर्मांतरण बीमारी, लाचारी और संसाधनों के अभाव का क्रूरतम शोषण था। एक पेड़ की हरी-भरी डाली को काटकर किसी दूसरे पेड़ पर चिपका देना धर्मांतरण है, लेकिन उस कटी हुई डाली को वापस उसकी मूल जड़ों से जोड़ देना 'घर वापसी' है। यह विधेयक हमारी उसी मूल जड़ की रक्षा का महाकाव्य है।

भावना बोहरा ने विधेयक से जुड़े महत्वपूर्ण प्रावधानों पर कहा कि आज धर्मांतरण केवल गाँव के चौपालों पर नहीं हो रहा है; यह बंद कमरों में, सोशल मीडिया पर, फर्जी वेबसाइट्स और 'डिजिटल माध्यमों' (ष्ठद्बद्दद्बह्लड्डद्य स्र्द्गस्रद्बड्ड) के जरिए हमारे युवाओं का ब्रेनवॉश करके हो रहा है। धारा 2 (च) और धारा 3 में डिजिटल माध्यमों को अपराध की श्रेणी में लाना इस विधेयक की सबसे बड़ी जीत है। उन्होंने विधेयक में धारा 14 का उल्लेख करते हुए कहा कि 1968 के कानून में 'घर वापसी' को विधिक संरक्षण प्राप्त नहीं था। इस नए विधेयक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि कोई व्यक्ति अपने 'पैतृक धर्म या आस्था' में वापस लौटता है, तो उसे धर्मांतरण नहीं माना जाएगा।

टीम प्रहरी अभियान: 20 दुकानदारों पर कार्रवाई, मालवीय मार्ग अतिक्रमण मुक्त

रायपुर/नवप्रदेश। राजधानी रायपुर में यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे ÷टीम प्रहरी÷ अभियान के तहत मालवीय मार्ग को अतिक्रमण मुक्त किया गया। अभियान के दौरान सड़क पर कब्जा जमाए ठेले-गुमटियों को हटाते हुए सख्त कार्रवाई की गई। पुलिस कमिश्नर डॉ. संजीव शुक्ला और कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह के निर्देश पर नगर निगम व यातायात पुलिस की संयुक्त टीम ने यह कार्रवाई की। अभियान में एएसपी यातायात विवेक शुक्ला, नगर निगम अधिकारियों सहित जोन

क्रमांक-4 की टीम मौजूद रही। कार्रवाई के दौरान करीब 10 ठेलों और गुमटियों को हटाया गया, वहीं सड़क पर रखे कपड़े सहित अन्य सामान जब्त किए गए। इसके अलावा सड़क पर अतिक्रमण करने वाले लगभग 20 दुकानदारों पर करीब 39 हजार रुपये का ई-चालान भी किया गया। अभियान के दौरान दुकानदारों को स्पष्ट चेतावनी दी गई कि वे सड़क पर कब्जा न करें, अन्यथा आगे और सख्त कार्रवाई की जाएगी। नगर निगम और यातायात पुलिस ने कहा कि इस तरह के अभियान लगातार जारी रहेंगे।

प्रशासन का कहना है कि इस कार्रवाई से बाजार क्षेत्र में यातायात व्यवस्था में सुधार हुआ है और आम लोगों को जाम की समस्या से राहत मिल रही है।

सिहावा-नगरी क्षेत्र में कथित अफीम खेती को लेकर सियासी बयानबाजी तेज, जांच की मांग उठी

नगरी/नवप्रदेश। धमतरी जिले के सिहावा-नगरी क्षेत्र में कथित अफीम खेती को लेकर इन दिनों चर्चाओं का बाजार गर्म है। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री Bhupesh Baghel के हालिया बयान के बाद यह मुद्दा अचानक सुर्खियों में आ गया है, जिससे क्षेत्र में तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं।

स्थानीय स्तर पर कुछ लोगों के बीच यह चर्चा है कि क्षेत्र में अवैध रूप से अफीम की खेती किए जाने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि इन दावों की अब तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। कुछ लोग यह भी दावा कर रहे हैं कि सब्जी की खेती की आड़ में अवैध फसल उगाई गई थी, जिसे कथित रूप से जांच की आशंका के चलते नष्ट कर दिया गया। हालांकि इस तरह की चर्चाओं की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो पाई है।

फिलहाल, इस पूरे मामले में प्रशासन की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि या बयान सामने नहीं आया है। ऐसे में स्थानीय नागरिकों की नजरें अब प्रशासन की संभावित जांच एवं आगामी कार्रवाई पर टिकी हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि तथ्यात्मक स्थिति स्पष्ट करने के लिए निष्पक्ष जांच आवश्यक है, जिससे अफवाहों पर विराम लगाया जा सके और वास्तविक स्थिति सामने आ सके।

मामले पर जनप्रतिनिधियों की भी अलग-अलग प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। पूर्व विधायक लक्ष्मी ध्रुव ने बयान का समर्थन करते हुए कहा कि क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए ऐसी आशंकाओं से इनकार नहीं किया जा सकता।

वहीं जनपद सदस्य प्रमोद कुंजाम ने कहा कि यदि इस तरह की कोई गतिविधि सामने आती है तो दोषियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए तथा पूरे मामले की उच्च स्तरीय जांच कराई जानी चाहिए।

दूसरी ओर, भाजपा जिला अध्यक्ष प्रकाश बैस ने इन आरोपों को निराधार बताते हुए कहा कि सिहावा-नगरी क्षेत्र के किसान मुख्य रूप से धान एवं सब्जी की खेती कर रहे हैं और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।आज हमारे क्षेत्र धान में नगरी दुबाराज के नाम से प्रसिद्ध है

उन्होंने इस प्रकार के बयानों को भ्रामक करार दिया। नगरी क्षेत्र के किसानों को बदनाम किया जा रहा है।

कार्यालय नगर पंचायत दोरनापाल जिला - सुकमा (छ.ग.)

क्र./2241/लो.नि.वि./2025-26 दोरनापाल, दिनांक 18/03/2026

// मैनुअल पद्धति से निविदा आमंत्रण सूचना//

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य हेतु मैनुअल पद्धति से द्वितीय निविदा आमंत्रित की जाती है -

क्र.	कार्य का नाम	लागत राशि (लाख में)	धरोहर राशि	निविदा हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि
01	वार्ड क्र. 14 में ईन्टर लॉक कांक्रीट ब्लॉक कार्य सेवालाल मंदिर के पास	9.82	7365	06/04/2026
02	वार्ड क्र. 04 में ईन्टर लॉक कांक्रीट ब्लॉक कार्य कृष्ण मंदिर के पास	9.88	7410	
03	नाली में कव्हर प्लेट निर्माण वार्ड क्र . 02	5.48	4110	
04	वार्ड क्र . 12 में स्थित नगर पंचायत कार्यालय भवन का रेनोवेशन कार्य	7.00	5250	
05	आर.सी.सी. पुलिया निर्माण कार्य कामा पेद्दागुड़ा में वार्ड क्र. 15	8.00	6000	
06	वार्ड क्र. 13 में स्थित सांस्कृतिक भवन रेनोवेशन कार्य	9.92	7440	

टीप - उपरोक्त कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। निविदा प्रपत्र प्राप्त करने हेतु प्रत्येक कार्य के लिए पृथक-पृथक 100.00 रू. आवेदन शुल्क आवेदन पत्र के साथ जमा करनी होगी। आवेदन के साथ सम्पूर्ण दस्तावेज लगाना अनिवार्य है। दस्तावेज के अभाव में निविदा प्रपत्र प्रदाय नही किया जावेगा। साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाइट www.uad.cg.gov.in से भी डाउनलोड की जा सकती है। शासकीय अवकाश होनें पर दूसरे दिन कार्य की जावेगी। (निकाय में पूर्व भाग लिए गए निर्माण कार्य (सी.सी. सड़क/आर.सी.सी. नाली या अन्य अप्रारंभ या अपूर्ण की स्थिति में ठेकेदार को भाग लेने का अधिकार नही होगा।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत दोरनापाल, जिला - सुकमा (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर, (जोन क्र. - 4)

प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
Email ID - rmczone4@gmail.com

ईश्तहार

नामंतरण प्र.क्र. 29458 दिनांक 19.03.2026
वार्ड का नाम- 44 - स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन / भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई. डी. RPR739C00185 जो की निगम अभिलेख श्री/ श्रीमती PRAKASH SHARMA, MOHAN LAL SHARMA पिता / पति श्री/ श्रीमती ..... के नाम से दर्ज है जिसको श्री/श्रीमती प्रकाशचंद शर्मा पिता स्व. नथमल शर्मा, आशा शर्मा, योगिता शर्मा, बबीता शर्मा तीनों पति / पिता स्व. मोहनलाल शर्मा, पिता /पति श्री/श्रीमती N/A ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / शपथ पत्र, टैक्स रशीद, सहमति पत्र, परिचय पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज / वंशानुक्रम / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति / संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा / प्रस्तुत करे । निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी । जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा ।

" सूचना जारी करे "
श्रीमति दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर, (जोन क्र. - 4)

प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
Email ID - rmczone4@gmail.com

ईश्तहार

नामंतरण प्र.क्र. 29459 दिनांक 19.03.2026
वार्ड का नाम- 44 - स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन / भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई. डी. RPR739C0185A जो की निगम अभिलेख श्री/ श्रीमती NATHMAL SHARMA पिता / पति श्री/ श्रीमती ..... के नाम से दर्ज है जिसको श्री/श्रीमती सूरजबाई शर्मा, प्रकाशचंद शर्मा, रामेश्वर शर्मा तीनो पिता स्व. नथमल शर्मा एवं आशा शर्मा, योगिता शर्मा, बबीता शर्मा तीनों पति / पिता स्व. मोहनलाल शर्मा, संजूबाला मिश्रा, धीरेन्द्र कुमार शर्मा दोनो पिता स्व. चैनराज पिता /पति श्री/श्रीमती N/A ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / शपथ पत्र, टैक्स रशीद, सहमति पत्र, परिचय पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज / वंशानुक्रम / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति / संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा / प्रस्तुत करे । निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी । जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा ।

" सूचना जारी करे "
श्रीमति दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र.202602100700090 /अ-06अ/वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है आवेदक धनेश साहू पिता स्व. देवेन्द्र कुमार साहू निवासी बोरसी दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम-बोरसी, प.ह.नं. 39 स्थित भूमि खसरा 213/74 रकबा 0.006 हे. भूमि जो कि दानेश्वरी ध.प. देवेन्द्र कुमार साहू के नाम संयुक्त रूप से दर्ज है। उक्त आवेदित भूमि वर्तमान मे राजस्व अभिलेख में आवेदक की माता दानेश्वरी ध.प. देवेन्द्र कुमार साहू के नाम से दर्ज है जो कि त्रुटिपूर्ण है। ऋष्ा पुस्तिका कं. पी-1138679 में सम्मिलित नाम जा.बा. धनेश साहू, ना.बा. पुष्पांजली, ना.बा. चित्रलेखा सभी पिता स्व. देवेन्द्र कुमार साहू व आवेदक के चाचा ब्रम्हानंद साहू नाम से संयुक्त रूप से ऋष्ा पुस्तिका में दर्ज है जो कि सही च सत्य है। वर्तमान में सहखातेदार धनेश साहू, पुष्पांजली, चित्रलेखा बालिग हो चुके है। जिससे सुधार करते हुये सहखातेदारगण धनेश साहू, पुष्पांजली, चित्रलेखा तीनों पिता स्व. देवेन्द्र कुमार साहू एवं ब्रम्हानंद साहू का नाम दर्ज कर व ऋष्ा पुस्तिका में दर्ज नाबालिग शब्द को विलोपित किये जाने बाबत् आवेदन पत्र संबंधित दस्तावेजों को संलग्न कर इस ज्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 20.03.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 20.02.2026 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग-01 जिला दुर्ग (छ.ग.)

व्यक्तिगत-सूचना

क्रं.क्यू./वा.अ.त./2026

प्रति, साजेदा परवीन पति- शेख अब्दुल रहमान जाति- मुसलमान पता- फरीद नगर सुपेला भिलाई, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.)

विषयः- केता फज़राना परवीन पति शकिल खान जाति- मुसलमान निवासी फरीद नगर सुपेला भिलाई तह0 व जिला दुर्ग (छ.ग.)

विषयांतर्गत लेख है कि इस न्यायालय के रा.प्र.क्रमांक 202602104700004/अ-6 वर्ष 2025-2026 आवेदिका फज़राना परवीन पति शकिल खान उम्र-32 वर्ष जाति मुसलमान निवासी मकान नंबर 184, वार्ड नंबर 08, फरीद नगर सुपेला भिलाई तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा स्थित भूमि मौजा कचान्दुर प.ह.नं. 12 रा.नि.मं. जेवरा सिरसा तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. में स्थित भूमि खसरा नंबर 438/9 रकबा 0.1600 हेक्टेयर भूमि को विक्रेता साजेदा परवीन पति शेख अब्दुल रहमान से रजिष्टर्ड बैनामा के माध्यम से दिनांक 26.04.2024 को कय किया। उक्त आवेदित भूमि को केता आवेदिका के नाम पर प्रमाणीकरण किये जाने आवेदन न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया है। आपकी उपस्थिति हेतु नियत है।

अतएव इस संबंध में नियत पेशी दिनांक 27.03.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होना सुनिश्चित करे। अनुपस्थिति में आपके विरूद्ध एकपक्षीय कार्यवाही किया जावेगा।

मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
दुर्ग-01 (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार पाटन जिला दुर्ग (छ.ग.)

मामले की श्रेणी-राजस्व

ईश्तहार

मा.क्रं. 202507104500022/अ-6/2025-26

पक्षकारों का विवरण आवेदक पक्षकार सूरज सिंह ठाकुर
अनावेदक पक्षकार - सुधीर ठाकुर आ सागर सिंह साधना कल्पना भारती वंदना पम्मी सिंह आ पंचम सिंह

एतद द्वारा सर्व साधारण एवं ग्राम पाहंदा प.ह.न. 02 तहसील पाटन, जिला दुर्ग के आम जनता को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक सूरज सिंह ठाकुर पिता/ पति/विभाग भागीरथी सिंह ठाकुर पता निवासी खोखोपारा, पंकज गार्डन के पास हनुमान नगर पुरानी बस्ती रायपुर ने आवेदन प्रस्तुत किया है कि आवेदक के पिता एवं सुधीर सिंह ठाकुर, श्रीमती साधना ठाकुर, श्रीमती कल्पना ठाकुर, श्रीमती भारती ठाकुर, श्रीमती वंदना ठाकुर, सभी पिता स्वक सागर सिंह ठाकुर एवं आवेदक के पिता भागीरथी सिंह ठाकुर पिता रनमत सिंह ठाकुर एवं दरियाब सिंह ठाकुर पिता रनमत सिंह एवं विकास, प्रकाश, हुतु उर्फ रितेश्वर, प्रमोद, पम्मी ठाकुर सभी पिता पंचम सिंह ठाकुर के संयुक्त हक व स्वामित्व की भूमि ग्राम पाहंदा प.ह.न. 00002 तहसील पाटन जिला दुर्ग में स्थित है जिसका खसरा नं. 427, 449, 445, 228, 305, 571, 1058 तथा 423 रकबा क्रमशः 0.36, 0.71, 0.50, 0.12, 037, 0.04 0.09, तथा 0.100 है। यह कि उपरोक्त वर्णित सह श्रीमिस्वामियों में से भागीरथी सिंह ठाकुर आ0 रनमत सिंह ठाकुर, की मृत्यु दिनांक 9.4.2021 को हो चुकी है तथा दरियाव सिंह आ. रनमत सिंह को मृत्यु दिनांक 20.08.2012 का हो गई है। इस प्रकार विकास सिंह ठाकुर आ0 पंचम सिंह ठाकुर की मृत्यु दिनांक 27.10.2011 को हो गई है। यह कि भागीरथी सिंह ठाकुर के विधिक वारिसान आवेदक दीपक सिंह ठाकुर सुरज सिंह ठाकुर, मीरा ठाकुर, रागिनी ठाकुर, तथा निशा ठाकुर है। इसी प्रकार दरियाव सिंह ठाकुर के विडिंक वा रिशान, गायत्री ठाकुर, रिकी उर्फडगेश्वर, पिंकी ठाकुर है इसी प्रकार विकास आ. पंचम सिंह ठाकुर के विधिक वारिसान रीता ठाकुर, करण ठाकुर, मंयूरी ठाकुर, मनु ठाकुर, छोटी ठाकुर है। अतः माननीय महोदय जी से सविनय निवेदन है कि ग्राम पाहंदा तह. पाटन जिला दुर्ग स्थित उपरोक्त खसरा एवं रकबा में मृत सह खातेदारों का नाम विलोपित कर उनके विधिक वारिसानों के नाम नामांतरण दर्ज किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत आधार पर न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन है। अतः उपरोक्तानुसार कार्यवाही में जिस किसी व्यक्ति/संस्था को किसी प्रकार का कोई दावा/आपत्ति हो तो सुनवाई हेतु नियत तिथि 07.04.2026 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से उपस्थित होकर अपनी लिखित आपत्ति इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात् प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार का विचार नहीं किया जावेगा। यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 16.03.2026 को जारी किया जाता है।

मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार पाटन

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार अण्डा सर्कल जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र. 202511101200040 /अ-06/ वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि रा.प्र. कं 202511101200040/अ-6/वर्ष 2025-26 आवेदक राजेन्द्र देशमुख आ. स्व. सुखदेव देशमुख निवासी ग्राम जंजगिरी, तहसील व जिला दुर्ग, छ.ग. के द्वारा कास्तकार ग्राम-भानपुरी प.ह.नं. 36 रा.नि.म. अण्डा, तहसील व जिला दुर्ग स्थित खसरा नंबर 894 रकबा 1.3300 हे. भूमि संयुक्त खाते में आवेदक व अन्य सहखातेदार के नाम पर राजस्य अभिलेख में दर्ज हैं। उक्त भूमि के सहखातेदार श्रीमती बेदू बाई देशमुख पति स्व. सुखदेव देशमुख का मृत्यु दिनांक 15.12.2023 को हो जाने पर मृतिका सहखातेदार के नाम को राजस्व अभिलेख से विलोपित कर शेष खातेदारों का नाम यथावत रखे जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत दिनांक 08.12.2025 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 18.11.2025 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
अण्डा जिला दुर्ग (छ.ग.)

नाम परिवर्तन/सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैं श्रीमती लता टांक पति पंकज टांक, उम्र-43 वर्ष, निवासी-म.नं.-329, वार्ड नं.-18, कोटनी, नगपुरा, तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.) यह कि, मेरे आधार कार्ड, परिचय पत्र में मेरा नाम लता बाई ठाकुर पति लीलम कुमार ठाकुर दर्ज है। मेरे पति लीलम कुमार ठाकुर की मृत्यु पश्चात मैंने दूसरा विवाह पंकज पुरूषोत्तम टांक पिता पुरूषोत्तम टांक से कर लिया है। यह कि, मैंने अपने पूर्व नाम लता बाई ठाकुर पति लीलम ठाकुर को त्यागकर विवाह पश्चात मैंने अपना नाम परिवर्तित कर लता टांक पति पंकज टांक कर लिया है भविष्य में मैं अपने समस्त दस्तावेजों में अपना नया नाम (लता टांक पति पंकज टांक) दर्ज कराना चाहती हूं एवं भविष्य में अब मुझे नया नाम (लता टांक पति पंकज टांक) के नाम से जाना पहचाना पुकारा व पढ़ा लिखा जावें। तदानुसार सूचना जाने ।

शपथकर्ती
श्रीमती लता टांक पति पंकज टांक
निवासी-म.नं.-329, वार्ड नं. 18, कोटनी, नगपुरा,
तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर जिला दुर्ग (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र. 202508101000045 /अ-06/वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय का रा.प्र.कं. 202508101000045/ अ-6/ वर्ष 2025-26 में आवेदिका/आवेदक अरुण कुमार पाण्डेय आ. स्व. पी.एल. पाण्डेय निवासी सेक्टर-01 भिलाई नगर तह. व जिला दुर्ग द्वारा ग्राम कोहका प.ह.न. 45 रा.नि.मं. कोहका व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नं. 1888 रकबा 0.040 हे. है। जो भूमिस्वामी स्व. श्रीमती दयावती पाण्डेय पति पी.एल. पाण्डेय के नाम पर दर्ज है। जिसमें भूमिस्वामी दयावती पाण्डेय पति पी.एल. पाण्डेय की मृत्यु दिनांक 11.07.2024 को फौत हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानो का नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त भूमि फौती नामांतरण किए जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 29.03.2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या आने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदक पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 30.01.2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन मुहर के साथ जारी किया गया है।

मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाईनगर (छ.ग.)

आम-सूचना

यह कि मैं अधिकृत अधिवक्ता जयराम भागवानी (जिला न्यायालय दुर्ग) महिन्द्रा रूरल हाउसिंग फायनेंस लिमि. (छ.ग.) से प्राप्त अधिकार एवं निर्देशानुसार यह सूचना प्रकाशित करता/करती हूँ कि मेरे पक्षकार अजय कुमार देवांगन पिता श्री रामनरेश देवांगन निवासी शीतला नगर दुर्ग (छ0ग0) द्वारा दिये गये अधिकार उपरान्त विक्रेता यश चोपडा आ. भीखमचंद जैन पता मालवीय नगर दुर्ग आ मु तरफ से श्रीमती मीनाक्षी जैन पति यशचोपडा सा. मालवीय नगर दुर्ग एवं क्रेता हेमलाल सिन्हा उम्र 9 वर्ष व वल्द वली सत्यनारायण आ. रामलाल सिन्हा सा. दुर्ग (छ.ग.) खसरा नं. 421/5 का टुकडा रकबा 700 वर्गफीट रजिस्ट्री दिनांक 13/03/1996 ग्रन्थ के 10482 पृष्ठ कं0 33-38 दस्तावेज क. 8950 उप पंजीयक दुर्ग की मूल रजिस्ट्री कहीं गुम हो गया है उक्त मूल रजिस्ट्री स्टाम्प का कोई दुरूपयोग ना करे अतएव आम जनता जो कि उक्त जमीन / मकान के संबंध में किसी प्रकार का स्वत्व: स्वामित्व रखता हो तो इस सूचना के प्रकाशन के 7 दिनों के भीतर मेरे कार्यालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा अवधि अवसर पश्चात् किसी प्रकार की दावा आपत्ति शून्य एवं निष्प्रभावी होगा। सूचनार्थ एवं पालनार्थ प्रकाशित ।

जयराम भागवानी
अधिवक्ता-जिला न्यायालय दुर्ग
पता प्लाट नं. 20 पेट्रोल पंप के बाजू
न्यू आदर्श नगर दुर्ग (छ.ग.)
मो. 9302838684

नाम परिवर्तन/सूचना

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं फरहीन शेख (FARHEEN SHEIKH) पति श्री शेख अमीन (SHEIKH AMIN) उम्र 34 वर्ष, पता- केलाबाड़ी दुर्ग, तह. व जिला दुर्ग (छ.ग) स्थायी निवासी-प्लाट नं. 139/बी, नूर विला, बारगांव रोड, ब्लु डायमंड स्कुल के पास, योगेन्द्र नगर, कातोलरोड, नागपुर (महाराष्ट्र) की हूं। मैने अपना पुराना नाम फरहीन तरन्नुम पिता श्री शेख इकबाल, माता का नाम नफीसा कसार को त्यागकर नया नाम फरहीन शेख पति श्री शेख अमीन (SHEIKH AMIN) माता का नाम नफीसा कौसर रख लिया है। अब मुझे भविष्य के समस्त शासकीय अशासकीय, अर्धशासकीय दस्तावेजों में नया नाम फरहीन शेख (FARHEEN SHEIKH) पति श्री शेख अमीन (SHEIKH AMIN) से जाना पहचाना व पुकारा जावे।

रोहित देवांगन
अधिवक्ता-जिला न्यायालय दुर्ग
तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. 9300602536

न्यायालय तहसीलदार एवं कार्यपालिक दण्डाधिकारी जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मनोज कुमार चेलक पिता स्व. सुकाल चेलक निवासी चिरपोटी तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा माता कमलाबाई चेलक की जन्म/मृत्यु दिनांक 29.11.2019 को हो जाने पर जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र शपथ पत्र, पार्षद प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज संलग्न कर इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 25.03.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 10.03.2026 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर
कार्यपालिक दण्डाधिकारी
जिला दुर्ग (छ.ग.)

नाम-परिवर्तन

मैं एन गुंजन रेड्डी (पुराना नाम जिसे बदला जाना है) सुपुत्र /सुपुत्री/ पत्नी एन अमृत रेड्डी निवासी वार्ड-4 शंकर चौक भीम नगर सुपेला भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग.) में अपना नाम एन गुंजन रेड्डी (पुराना नाम) से बदलकर गुंजन सोनी पति मृत्युंजय सोनी (नया नाम) रख लिया है।

शपथकर्ती
एन गुंजन रेड्डी

नाम-परिवर्तन

मैं कमली, कामनी (पुराना नाम जिसे बदला जाना है) सुपुत्र/सुपुत्री/पत्नी पलटन निवासी ग्राम-खैरी, कुटेली खुर्द उदैयपुर राजनांदगावं जिला राजनांदगावं (छ.ग.) में अपना नाम कमली, कामनी निषाद पिता पलटन (पुराना नाम) से बदलकर कामनी निषाद पति डोमन निषाद निवासी ग्राम हिरीं पो. हिरीं तहसील बोरीबुर्जुग जिला दुर्ग छ.ग. (नया नाम) रख लिया है।

शपथकर्ती
कमली, कामनी
पिता/पति पलटन
निवासी ग्राम-खैरी, कुटेली
खुर्द उदैयपुर राजनांदगावं जिला
राजनांदगावं (छ.ग.)

नाम-परिवर्तन

मैं शपथकर्ता अमित कुमार बिस्वास पिता श्री बिमल कुमार बिस्वास, उम्र 73 वर्ष, निवासी-क्वार्टर नंबर 7 ए, सड़क नंबर 23, सेक्टर 10, भिलाई, दुर्ग तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.) का निवासी हूं जो कि निम्नलिखित कथन शपथपूर्वक करता हूं :- यह कि, मै दर्शित पते पर निवास करता हूं। यह कि, मेरे नाम से जारी आधार कार्ड क्रमांक 8598 8780 8007 में मेरा नाम ए. के. बिस्वास (A.K. BISWAS) पिता बी.के. बिस्वास (B.K. BISWAS) दर्ज है। जो कि मेरे तथा मेरे पिता का सुक्ष्म नाम है। यह कि मेरे शैक्षणिक प्रमाण पत्र में मेरा नाम (AMIT KUMAR BISWAS S/O BK BISWAS) अंकित है। यह कि आयकर विभाग द्वारा जारी पेन कार्ड एवं भारत गणराज्य के पासपोर्ट में मेरा नाम अमित कुमार बिस्वास (AMIT KUMAR BISWAS) S/O श्री बिमल कुमार बिस्वास (BIMAL KUMAR BISWAS) अंकित है जो कि मेरा तथा मेरे पिता का सत्य वास्तविक व पूर्ण नाम है। यह कि मैं अपने भारत सरकार द्वारा जारी आधार कार्ड में दर्ज सुक्ष्म नाम ए.के. बिस्वास (A.K. BISWAS) पिता बी. के. बिस्वास (B.K. BISWAS) को विलोपित करवाकर मेरे पेन कार्ड एवं पासपोर्ट में दर्ज सत्य, वास्तविक व पूर्ण नाम अमित कुमार बिस्वास (AMIT KUMAR BISWAS) S/O श्री बिमल कुमार बिस्वास (BIMAL KUMAR BISWAS) को दर्ज करवाने हेतु आवश्यक दस्तावेजों के साथ यह शपथ पत्र श्रीमान सक्षम प्राधिकारी महोदय के समक्ष सादर प्रस्तुत है।

शपथकर्ता
अमित कुमार बिस्वास
पिता श्री बिमल कुमार बिस्वास
निवासी-क्वार्टर नंबर 7 ए, सड़क नंबर 23, सेक्टर 10, भिलाई
दुर्ग तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार अहिवारा जिला दुर्ग (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र.202603104000017 /वर्ष 2025-26/मौजा अहेरी प.ह.न. 02

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक रजनेश्वर ध्वज पिता रामूलाल, निवासी अहेरी, तहसील अहिवारा जिला दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा छ.ग. साहूकारी (संशोधित) लाइसेंस अधिनियम 2005 मूल अधिनियम की धारा 11 (ग) की उपधारा-1 तथा धारा 11 (ग) की उपधारा 2 के तहत नवीन साहूकारी लायसेंस प्राप्त किये जाने हेतु निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र, शपथ पत्र, चालान मूल प्रति, आधार कार्ड, पेन कार्ड सहित इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है। जो कि इस न्यायालय में प्रक्रियाधीन है।

अतएवं इस आवेदन के संबंध में विधिक आपत्तियों / दावा रखने वाला व्यक्ति / संस्था, स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से दिनांक 27.03.2026 को इस न्यायालय में लिखित आवेदन कर निवेदित कर सकते हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह ईश्तहार आज दिनांक 11.03.2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के सील-मुहर से जारी किया गया है।

तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

मामले की श्रेणी-राजस्व

ईश्तहार

संदर्भः जिला दुर्ग तहसील-दुर्ग प.ह.न. 00038 पोटियाकला ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण- आर.डी. 202526430104600056

तहसील दुर्ग के प.ह.न. 00038 के अंतर्गत ग्राम पोटियाकला के वर्तमान भूमिस्वामी नीरज कुमार ना.बा. पिता/पति डी.आर. केकती तरफ से मां जोगतीबाई पति डी.आर. केकती पता रानीतराई फदरफोड़, पंकज कुमार ना.बा. पिता/पति डी.आर. केकती तरफ से मां जोगतीबाई पति डी.आर. केकती पता के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 165/124(0.0220) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/क्रेता जगोती बाई पिता/पति डी.आर. केकती पता रानीतराई तह. डौण्डीलोहारा, पंकज कुमार पिता/पति डी.आर. केकती पता रानीतराई तह. डौण्डीलोहारा, नीरज कुमार पिता/पति डी.आर. केकती पता रानीतराई तह. डौण्डीलोहारा के नाम पर पंजीयन/फौती होने के उपरांत नामांतरण/अभिलेख दुरूस्ती/ खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 10.04.2026 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार दुर्ग पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/ संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो ईश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पुर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं/ अधिवक्ता/ आममुख्तयार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 18.03.2026 को जारी किया जाता है।

मुहर
तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

नाम-परिवर्तन

मैं शपथकर्ता शिव शंकर उम्र 39 वर्ष पिता ओंकार कुमार निवासी बाजार पारा, अरकार बालोद छ.ग. का निवासी हूं जो कि निम्नलिखित कथन शपथपूर्वक करता हूं यह कि मेरा नाम व पता उपरोक्तानुसार है। यह कि मेरे नाम से जारी आधार कार्ड नं. 9093 4661 0074 में जिसमें मेरा नाम शिव शंकर (SHIV SHANKAR) अंकित है। इसी प्रकार मेरी पुत्री के नाम से जारी आधार कार्ड नं 3585 9915 9103 में उनका नाम सिध्दि देवांगन (SIDDHI DEWANGAN) पिता शिव शंकर (SHIV SHANKAR) अंकित है। यह कि मेरे शैक्षणिक दस्तावेजों में मेरा नाम शिव शंकर (SHIV SHANKAR) अंकित है। यह कि मेरे पुत्री के जन्म प्रमाण पत्र में उसका नाम सिध्दि देवांगन (SIDDHI DEWANGAN) पिता शिव शंकर (SHIV SHANKAR) अंकित है। यह कि मेरी पुत्री के शैक्षणिक दस्तावेजों एवं दाखिला पंजी में उसका नाम (SIDDHI DEWANGAN) पिता (SHIV SHANAKR DEWANGAN) अंकित है। यह कि मेरी पुत्री का सही व वास्तविक नाम सिध्दि देवांगन (SIDDHI DEWANGAN) पिता शिव शंकर (SHIV SHANKAR) के नाम से गजट प्रकाशन करवाने इसी आधार पर मेरी पुत्री शैक्षणिक दस्तावेज, दाखिला पंजी एवं अन्य दस्तावेजों में अंकित करवाने बाबत् आवश्यक दस्तावेज श्रीमान सक्षम अधिकारी महोदय के समक्ष प्रस्तुत है।

शपथकर्ता
शिव शंकर पिता ओंकार कुमार
निवासी बाजार पारा,
अरकार जिला बालोद (छ.ग.)

नाम-परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं कि मैं संजय कुमार, पिता सुन्दर लाल जैन, निवासी, म. नं. 01, वार्ड नं. 32, सदर बाजार दुर्ग, (छ.ग.) यह शपथ करता हूं कि मैंने अपना यह पुराना नाम संजय कुमार, को त्याग कर नया नाम संजय कुमार बोथरा रख लिया हूं अत: आज से मुझे समस्त शासकीय, अर्धशासकीय व अन्य दस्तावेजों में मेरे नये नाम संजय कुमार बोथरा से ही जाना पहचाना जावे।

शपथकर्ता
संजय कुमार बोथरा
म. नं. 01 वार्ड नं. 32, सदर
बाजार, दुर्ग, (छ.ग.)

कार्यालय राजस्व निरीक्षक दुर्ग जिला-दुर्ग (छ.ग.)

-: आम-सूचना :-

विषय :- सीमांकन बाबत्।

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित है कि न्यायालय तहसीलदार दुर्ग नगर जिला दुर्ग के आदेश क्रमांक क्यू तहसील दुर्ग दिनांक 04.12.2026 के अनुसार आवेदक सीमा सिंह पिता श्री संत सिंह निवासी अम्बिकापुर द्वारा ग्राम कचांदुर पटवारी हलका नम्बर 12 तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नम्बर 781/33 रकबा 0.0221 हे. भूमि का सीमांकन दिनांक 25.03.2026 को समय 11 से 5 बजे तक स्थल पर जाना है।

अतः कोई भी व्यक्ति या संस्था उक्त ख.नं. की भूमि में प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से हित रखते हो तो अपने स्वतंत्र अर्जन के दस्तावेज नक्शा खसय ले आउट तथा बयनामा की मूल प्रतिलिपि सहित मौके पर उपस्थित होकर दावा आपत्ति पेश कर सकते है। तत्पश्चात् आपत्ति विचारणीय नहीं होगी।

मुहर
राजस्व निरीक्षक
दुर्ग-01

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक गीता जैन पति विनय कुमार जजैन निवासी 110 डी, अरिहंत सेल्स, आजाद मार्केट, कृष्णा टॉकिज रोड रिसाली भिलाई तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा ग्राम धनोरा प.ह.न.- 53 रा.नि.म. उतई तह.व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 1011/1 रकबा कमशः 0.1500 हे. भूमि भूमिस्वामी भीता जैन पति विनय कुमार जैन दर्ज है। वर्णितभूमि की ऋष्ा पुस्तिका व पंजीयन बयनामा के मूल दस्तावेज में मीता जैन पति विनय कुमार जैन दर्ज है। किन्तु वर्तमान ऑनलाइन में त्रुटीपूर्ण मीता जैन पति विजय कुमार जैन दर्ज दर्ज है। जिसे वर्णितभूमि की ऋष्ा पुस्तिका व पंजीयन बयनामा के मूल दस्तावेज एव आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेजों के आधार पर ऑनलाईन राजस्व रिकार्ड में मीता जैन पति विजय का नाम विलोपित कर सही व सत्य नाम मीता जैन पति विनय कुमार जैन के नाम दर्ज कर सुधार किये जाने हेतु न्यायालय में आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति, अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 27.03.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 17.03.2026 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर
नायब तहसीलदार
दुर्ग (छ.ग.)

नाम-परिवर्तन

मैं शपथकर्ती ओजस्विता साहू पति हृदेश कुमार साहू निवासी हरिनगर दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. की निवासी हूं जो कि निम्नलिखित कथन शपथपूर्वक करता हूं :- यह कि मेरा नाम व पता उपरोक्तानुसार है। यह कि मेरे नाम से जारी आधार कार्ड नं. 9943 9977 9755 में जिसमें मेरा ओजस्विता साहू (OJASWITA SAHU) अंकित है। इसी प्रकार मेरे पति के नाम से जारी आधार कार्ड नं. 6780 8313 3767 में उनका नाम हृदेश कुमार साहू (HRIDESH KUMAR SAHU) अंकित है। इसी प्रकार से मेरे पुत्र के नाम से जारी आधार कार्ड नं. 2273 8698 9476 में उसका नाम नैत्विक साहू (NAITVIK SAHU) अंकित है। यह कि मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में पुत्र का नाम (NAITVIK SAHU) पिता (HRIDESH KUMAR SAHU) माता का (OJASWITA SAHU) अंकित है। यह कि मेरे पुत्र का नाम नैत्विक साहू (NAITVIK SAHU) घरेलू नाम है। यह कि मेरे पुत्र के सही व वास्तविक नाम वैभव साहू (VAIBHAV SAHU) पिता हृदेश कुमार साहू (HRIDESH KUMAR SAHU) के नाम से गजट प्रकाशन करवाने इसी आधार पर मेरे पुत्र के आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र एवं अन्य दस्तावेजों में अंकित करवाने बाबत् आवश्यक दस्तावेज श्रीमान सक्षम अधिकारी महोदय के समक्ष प्रस्तुत है।

शपथकर्ती
ओजस्विता साहू
पति हृदेश कुमार साहू
निवासी हरिनगर दुर्ग
तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नजूल जांच अधिकारी दुर्ग (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र./अ-20(4)/ वर्ष 2025-26

आवेदक गगनदीप सिंह आ.स्य. सतनाम सिंह निवासी आमदी नगर हुड़को भिलाई द्वारा इस आशय का आवेदन प्रस्तुत किया है कि आमदी नगर हुडको भिलाई में स्थित भूमि खसरा नं. 1/2, 2/2 का टु. प्लाट नं. एम.आई.जी.-1/776 रकवा 150 वर्गमीटर धारकगण सुरिन्दर कौर पि. स्व. मुख्तार सिंह, लखवीर कौर पति स्व. कृपाल सिंह, राजप्रीत कौर, जगदीप कौर पिस. स्व. कृपाल सिंह, सुखविंदर कौर पति स्व. सतनाम सिंह, गगनदीप सिंह, हरप्रीत कौर पिस. स्व. सतनाम सिंह आमदी नगर हुड़को भिलाई के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। धारक द्वारा उक्त भूखण्ड को केता टीकम कुमार, हुलेश्वर कुमार पिस. महेश कुमार देशमुख निवासी परसदा तहसील व जिला बालोद के पास 68,00,000/- रूपये (अड़सठ लाख रूपये) में विक्रय करने का सौदा तय कर बतौर व्याना राशि 4,00,000/- रूपये (चार लाख रूपये) प्राप्त किया जा चुका है। आवेदक द्वारा उक्त भूखण्ड के विकय की अनुमति बावत् आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतएव एतद् द्वारा सर्व साधारण एवं आम जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था को दावा या आपत्ति हो, तो प्रकरण की सुनवाई दिनांक 25.03.2026 को या इसके पूर्व इस न्यायालय में स्वतः या किसी व्यक्ति अथवा अधिवक्ता के द्वारा जिस भू-खंड संबंधी जानकारी हो आवश्यक अभिलेख प्रस्तुत किया जावे अथवा करवाया जावे। नियत तिथि पश्चात प्राप्त आक्षेप/आपत्ति पर कोई कार्यवाही नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 09.03.2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पद मुद्रा से प्रकाशन हेतु जारी किया जाता है।

मुहर
नजूल जांच अधिकारी
दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग-01 जिला दुर्ग (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र/202602104700064 /अ-06/ वर्ष 2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री दिनेश सोनी आ. चिरंजी लाल एवं अन्य 01 निवासी ऋषभ ग्रीन सिटी पुलगांव दुर्ग के द्वारा स्थित भूमि मौजा खम्हरिया प.ह.नं. 44 रा.नि.मं. जुनवानी स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 302 रकबा 4350 वर्गफीट, 0.040 हे. भूमि को विक्रेता पीला उर्फ बाबू लाल पिता बलवा द्वारा रजिष्टर्ड बैनामा के माध्यम से दिनांक 28/02/2022 को कय किया। उक्त आवेदित भूमि को केतागणों के नाम पर प्रमाणीकरण किये जाने आवेदन न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 02.04.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 16.03.2026 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर
अतिरिक्त तहसीलदार
दुर्ग-01 (छ.ग.)

न्यायालय नजूल जांच अधिकारी दुर्ग (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र./44/अ-20(3)/ वर्ष 2025-26

आवेदक अब्दुल हमीद पिता अब्दुल वहीद, निवासी हटरीबाजार दुर्ग के आवेदन अनुसार नजूल स्थित भूमि शीट क. 45बी, भूखण्ड क. 29/2, रकबा 80 वर्गमीटर भूमि मरियम बी, अब्दुल रफीक व राबिया बेगम पिता अब्दुल वहीद के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। धारकगण में से मरियम बी. की मृत्यु दिनांक 25.12.2014 को हो चुकी है। उक्त आधार पर आवेदक द्वारा मृतक धारक का नाम विलोपित कर शेष धारकों का नाम यथावत रखने आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव एतद् द्वारा सर्व साधारण एवं आम जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था को दावा या आपत्ति हो, तो प्रकरण की सुनवाई दिनांक 08.04.2026 को या इसके पूर्व इस न्यायालय में स्वतः या किसी व्यक्ति अथवा अधिवक्ता के द्वारा जिस भू-खंड संबंधी जानकारी हो आवश्यक अभिलेख प्रस्तुत किया जावे अथवा करवाया जावे। नियत तिथि पश्चात प्राप्त आक्षेप/आपत्ति पर कोई कार्यवाही नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 18.03.2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पद मुद्रा से प्रकाशन हेतु जारी किया जाता है।

मुहर
नजूल जांच अधिकारी
दुर्ग (छ.ग.)

रायपुर रेलवे का 'ऑपरेशन क्लीन', रातभर चला सीक्रेट मिशन

■ 5 अवैध वेंडर गिरफ्तार, नकली पानी का जखीरा और क्विंटल भर माल जब्त

रायपुर/नवप्रदेश। रेलवे स्टेशन और ट्रेनों में यात्रियों की सेहत से खिलवाड़ करने वाले अवैध वेंडरों के खिलाफ रायपुर रेल मंडल ने स्ट्राइक की है। सीनियर डीसीएम अवधेश कुमार त्रिवेदी के नेतृत्व में वाणिज्य विभाग ने 'सीक्रेट अभियान' चलाकर स्टेशन पर दबिश दी। 18 घंटे तक चली इस ताबड़तोड़ छापेमारी में 5 वेंडरों को गिरफ्तार किया गया है।

किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं होगी अनियमितता: सीनियर डीसीएम

सीनियर डीसीएम अवधेश कुमार त्रिवेदी ने बताया कि यात्रियों की सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण खानपान रेलवे की पहली प्राथमिकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अवैध वेंडिंग और अनुशासनहीनता के खिलाफ यह गोपनीय अभियान आगे भी जारी रहेगा। स्टेशनों पर केवल अधिकृत वेंडरों को ही सामान बेचने की अनुमति है। बिना बुकिंग के पार्सल या लगेज ले जाने वालों पर सख्त निगरानी रखी जा रही है।

यह अभियान 17 मार्च की दोपहर 2:00 बजे शुरू हुआ और 18 मार्च की सुबह 8:00 बजे तक लगातार चला। टीम ने विशेष रूप से रात के समय गुजरने वाली ट्रेनों को टारगेट किया, जहां अक्सर अवैध वेंडरों की सक्रियता बढ़ जाती है।

अभियान के बड़े नतीजे

5 वेंडर गिरफ्तार: अवैध रूप से सामान बेच रहे 5 वेंडरों को पकड़कर आरपीएफ के हवाले किया गया। इन पर रेलवे एक्ट की धारा 144 और 147 के तहत केस दर्ज किया गया है। ट्रेनों की जांच के दौरान अनधिकृत ब्रांड की 456 रेल नीर की बोतलें मिलीं। इन्हें जब्त कर पार्सल विभाग को सौंप दिया गया है। बिना बुक सामान पर जुर्माना: चेकिंग के दौरान 2 क्विंटल ऐसा सामान पकड़ा गया जिसकी बुकिंग (लगेज बुकिंग) नहीं कराई गई थी।

न्यूज गैलरी

दुकान में घुसकर महिला से गैंगरेप की धमकी, 3 पर केस

रायपुर/नवप्रदेश। राजधानी के सिविल लाइन थाना क्षेत्र में महिला दुकानदार के साथ मारपीट और गंभीर धमकी देने का मामला सामने आया है। पुलिस ने डेयरी संचालक और उसके दो कर्मचारियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार गांधी नगर शंकर नगर सेक्टर-2 निवासी इंद्राणी साहू अपने पति के साथ अंडे की दुकान संचालित करती हैं। आरोप है कि पास की डेयरी के संचालक नावेद और उसके कर्मचारी आए दिन महिलाओं से दुर्व्यवहार करते थे। 11 मार्च की रात करीब 8 बजे आरोपी नावेद अपने कर्मचारियों फाजील और शुक्ला के साथ दुकान पहुंचा और महिला से बदतमीजी करने लगा। विरोध करने पर दोनों कर्मचारी दुकान के भीतर घुस गए और मारपीट की, जिससे महिला के कपड़े फट गए। पीड़िता का आरोप है कि आरोपियों ने उसे जान से मारने और गैंगरेप कराने की धमकी भी दी। घटना के समय उसका पति दुकान पर मौजूद नहीं था। फिलहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

3 माह का चावल साथ मिलेगा, 31 तक चावल दुकानों में पहुंचाना होगा

रायपुर/नवप्रदेश। इस साल राज्य सरकार की ओर से लगातार राशन कार्डधारियों को कई महीनों का चावल एक साथ बांटा जा रहा है। फरवरी-मार्च का चावल एक साथ बांटने के बाद अब खाद्य संचालनालय ने अप्रैल, मई व जून का चावल एक साथ बांटने का आदेश जारी किया है। राज्य के सभी कलेक्टरों और नागरिक आपूर्ति निगम के अफसरों से कहा गया है कि वे तीन माह का चावल एक साथ राशन दुकानों में हर हाल में 31 मार्च तक पहुंचा दें। 1 अप्रैल से राशन कार्ड वालों को तीन माह का चावल एक साथ बांटा जाएगा। आदेश में यह भी कहा गया है कि सभी लोगों को राशन 30 अप्रैल तक बांट दिया जाए। जिन लोगों को तय तारीख तक राशन नहीं मिल पाएगा उन पर फैसला बाद में राज्य सरकार लेगी। खाद्य संचालनालय की ओर से जारी आदेश के अनुसार प्रदेश के सभी अन्त्योदय, प्राथमिकता निराश्रित, निशक्तजन राशन कार्डधारियों को अप्रैल से जून 2026 तक का चावल एक साथ बांटा जाएगा। लेकिन एपीएल परिवारों यानी सामान्य राशन कार्ड वालों को केवल अप्रैल माह का चावल दिया जाएगा। सामान्य राशन कार्ड वालों को चावल तथा अन्य राशन सामग्री शक्कर, नमक आदि का वितरण नागरिक आपूर्ति निगम में स्टॉक की उपलब्धता के आधार पर अप्रैल से जून के दौरान अलग-अलग माह में होता रहेगा। सभी राशन दुकानदारों से सख्ती से कहा गया है कि वे अंत्योदय प्राथमिकता, निराश्रित, निशक्तजन राशन कार्ड वालों को सूचना देने के साथ ही राशन दुकानों के बाहर सूचना चस्पा करेंगे कि उन्हें तीन माह का चावल एक साथ मिलेगा।

नशे में ड्यूटी करते जीआरपी जवान का वीडियो वायरल, निलंबित

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर रेलवे स्टेशन पर ड्यूटी के दौरान शराब के नशे में पाए गए जीआरपी जवान मोहित मरकाम को निलंबित कर दिया गया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए जांच शुरू की है। जानकारी के अनुसार, जवान नशे की हालत में स्टेशन परिसर में एक ई-रिक्शा में बैठा था। इसी दौरान एक वाहन के रिवर्स होने पर ई-रिक्शा से हल्की टक्कर हो गई। इसके बाद जवान ने मौके पर मौजूद यात्रियों के साथ बदतमीजी की। वहां मौजूद लोगों ने पूरी घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर साझा कर दिया। जीआरपी आरआई रामप्रसाद पैकरा के मुताबिक, मोहित मरकाम 3 से 16 मार्च तक बिना सूचना के अनुपस्थित था और मंगलवार को ड्यूटी पर लौटा था। उसे स्टेशन ड्यूटी पर तैनात किया गया था। वीडियो सामने आने के बाद प्रारंभिक जांच में उसे दोषी पाते हुए निलंबित कर दिया गया है।

रायपुर स्टेशन पर पानी की अवैध बिक्री, पांच वेंडर गिरफ्तार

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर रेलवे स्टेशन पर अवैध पानी बिक्री और अनधिकृत वेंडरों के खिलाफरेलवे ने बड़ा अभियान चलाया। 18 घंटे तक चली कार्रवाई में 5 वेंडरों को पकड़कर रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के हवाले किया गया, जबकि 456 अवैध ब्रांड की पानी की बोतलें जब्त की गईं। रेलवे प्रशासन ने 17 मार्च दोपहर 2 बजे से 18 मार्च सुबह 8 बजे तक विशेष जांच अभियान चलाया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अवधेश कुमार त्रिवेदी के मार्गदर्शन में टीम ने स्टेशन के साथ-साथ गुजरने वाली ट्रेनों में सघन जांच की। खासतौर पर रात की ट्रेनों पर फोकस रखा गया, जहां ऐसे वेंडर अधिक सक्रिय पाए गए। कार्रवाई के दौरान पकड़े गए वेंडरों के खिलाफरेलवे एक्ट की धारा 144 और 147 के तहत केस दर्ज किया गया है। इसके अलावा करीब 2 क्विंटल बिना बुक किया गया सामान भी मिला, जिस पर 2500 रुपए का जुर्माना लगाया गया। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि यात्रियों को सुरक्षित और मानक गुणवत्ता का खानपान उपलब्ध कराने के लिए ऐसे अभियान जरूरी हैं।

नाबालिग से दुष्कर्म, आरोपी को आजीवन कारावास

रायपुर/नवप्रदेश। नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में विशेष पॉक्सो कोर्ट ने आरोपी मो. रहमत अंसारी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। प्रथम फास्ट ट्रैक विशेष न्यायाधीश अच्छेलाल काछी की अदालत ने सुनवाई पूरी होने के बाद यह फैसला दिया। विशेष लोक अभियोजक डालेश्वर प्रसाद साहू के अनुसार, पीड़िता 26 दिसंबर 2022 को रायपुर आई थी। आरोपी ने मोबाइल पर संपर्क कर उसे मिलने के लिए बुलाया और घुमाने के बहाने रेलवे स्टेशन ले गया।

रायपुर में नहीं मिल रहे कमर्शियल सिलेंडर

■ मंदिर समितियों की बढ़ी चिंता, नवरात्रि में कैसे होगा भंडारे का आयोजन

रायपुर/नवप्रदेश। गैस एजेंसियों में कमर्शियल गैस सिलेंडरों की मारामारी अभी भी बनी हुई है। होटल, रेस्टोरेंट सहित अन्य व्यावसायिक सहित विविध कार्यक्रमों में उपयोग के लिए कमर्शियल सिलेंडर नहीं दिए जा रहे हैं, जिसके कारण नवरात्रि में भंडारा कराने वाली मंदिर समितियों की चिंता बढ़ गई है। हालांकि कई मंदिर समितियां कमर्शियल सिलेंडरों की किल्लत को देखते हुए इलेक्ट्रानिक चूल्हा या लकड़ी चूल्हा से भंडारा के लिए भोजन बनाने की तैयारियों में जुट गई हैं।

घरेलू गैस सिलेंडरों की भी मारामारी, लग रही लंबी कतारें

घरेलू गैस सिलेंडर के लिए भी गैस एजेंसियों में मारामारी जारी है। बुकिंग के आधार पर ही उपभोक्ताओं को सिलेंडर दिए जा रहे हैं, लेकिन बुकिंग कराने में ही उपभोक्ताओं के पसीने छूट रहे हैं। ऑनलाइन बुकिंग नहीं होने के कारण गैस एजेंसियों के दफ्तरों में उपभोक्ताओं की लंबी कतारें लग रही हैं। ज्यादातर गैस एजेंसियों के दफ्तर में लोग खाली सिलेंडर लेकर पहुंच रहे हैं, ताकि पर्ची कटते ही वे भरा सिलेंडर ले सकें।

अभी नहीं पहुंची कमर्शियल सिलेंडरों की खेप

केंद्र सरकार और ऑयल कंपनियों के दिशा-निर्देश के तहत छत्तीसगढ़ में उपभोक्ताओं की खपत के अनुसार कमर्शियल गैस सिलेंडरों का 20 प्रतिशत होटल, रेस्टोरेंट सहित अन्य व्यवसाय तथा आम लोगों को प्रदान करने पर सहमति बनी है, लेकिन राजधानी रायपुर में संचालित गैस एजेंसियों में अब तक को भी आम उपभोक्ताओं को कमर्शियल गैस सिलेंडर प्रदाय नहीं किए गए। एजेंसियों में कार्यरत कर्मचारियों का यहीं कहना है कि उपभोक्ताओं को प्रदाय करने के लिए कमर्शियल गैस सिलेंडरों का स्टॉक नहीं पहुंचा है। स्टॉक आने पर ही वे प्रदाय कर पाएंगे।

इलेक्ट्रानिक चूल्हा या लकड़ी से बनेगा भंडारे का भोजन

चैत्र नवरात्रि गुरुवार से प्रारंभ हो रही है। नवरात्रि में अष्टमी से जगह-जगह मंदिरों में भंडारा आयोजन का सिलसिला शुरू हो जाएगा। भंडारा के लिए भोजन बनाने के लिए गैस सिलेंडरों का उपयोग किया जाता है, लेकिन इस बार सिलेंडरों की किल्लत ने समितियों की चिंता बढ़ा रखी है। कई मंदिर समितियां तो गैस सिलेंडरों की जगह इलेक्ट्रानिक चूल्हा या फिर लकड़ी चूल्हा से भोजन कराने की तैयारियों में जुट गए हैं। टिकरापारा नंदी चौक स्थित मां काली मंदिर समिति के विकास साहू ने बताया कि सिलेंडर नहीं मिलेगा, तो लकड़ी चूल्हा से भंडारा के लिए भोजन तैयार कराएंगे।

सदन में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल विधेयक-2026 पारित

आवास और अधोसंरचना विकास को मिलेगी नई गति

रायपुर/नवप्रदेश। राज्य में आवासीय और शहरी अधोसंरचना विकास को व्यापक स्वरूप देने के उद्देश्य से वित्त मंत्री ओपी चौधरी द्वारा प्रस्तुत छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल अधिनियम, 1972 (संशोधन) विधेयक 2026 को विधानसभा में ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। यह संशोधन मंडल की भूमिका को विस्तार देते हुए उसे एक आधुनिक और बहुआयामी इंफ्रास्ट्रक्चर एजेंसी के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। सदन में जानकारी देते हुए वित्त मंत्री श्री ओपी चौधरी ने बताया कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल का गठन मूलतः मध्यप्रदेश गृह निर्माण मंडल अधिनियम, 1972 के तहत किया गया था। राज्य गठन के बाद यह संस्था प्रदेश में आवासीय योजनाओं, नगरीय अधोसंरचना और किफायती आवास उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने बताया कि पिछले दो वर्षों में मंडल द्वारा लगभग 3,050 करोड़ रुपये की लागत से 78 नई परियोजनाएं शुरू की गई हैं। राज्य शासन द्वारा 735 करोड़ रुपये का ऋण भुगतान कर मंडल को ऋणमुक्त किया गया है। साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 2,000 ईडब्ल्यूएस आवासों के निर्माण को स्वीकृति मिली है। मंत्री श्री चौधरी ने बताया कि 650 करोड़ रुपये से अधिक की 6 रिडेवलपमेंट परियोजनाओं की डीपीआर तैयार हो चुकी है। नवंबर 2025 में आयोजित राज्य स्तरीय आवास मेले में 2,060 करोड़ रुपये की 56 नई परियोजनाओं का शुभारंभ किया गया, जिसमें 2,517 संपत्तियों की बुकिंग और 1,477 का आवंटन किया जा चुका है।

घर बनाने के नाम पर 1.86 करोड़ हड़पे

■ पैसे लिए लेकिन मकान की जगह खाली जमीन मिली, 26 साल बाद आरोपी पकड़ाए

रायपुर/नवप्रदेश। रायपुर में घर बनाने के नाम पर 1.86 करोड़ हड़पने वाले आरोपी 26 साल बाद पकड़ाए हैं। आरोपियों ने 186 लोगों के नाम पर 1-1 लाख रुपए का लोन पास कराया था, लेकिन जमीन पर एक भी मकान नहीं बना। जब जांच टीम मौके पर पहुंची, तो जिन जगहों पर मकान निर्माण दिखाया गया था, वहां कुछ भी नहीं मिला।

दरअसल ये मामला सरकारी आवास योजना से जुड़ा है। आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो ने गृह निर्माण सहकारी समिति के तत्कालीन अध्यक्ष थावरदास माधवानी और आवास पर्यवेक्षक बसंत कुमार साहू को गिरफ्तार किया है। जांच में ये भी खुलासा हुआ है कि जिन लोगों के नाम पर दोनों ने लोन लिया गया, वे वहां मौजूद तक नहीं थे। पूरे मामले में फर्जी दस्तावेज तैयार कर लोन निकाला गया था। मकान निर्माण के फर्जी प्रमाण पत्र भी जारी किए गए और पूरी राशि आपस में बांट ली गई। दोनों आरोपियों को कई बार नोटिस भेजा गया, लेकिव वे छिपते रहे। दरअसल, साल 1995 से 1998 के बीच शासन की आवासीय योजना के तहत जरूरतमंद लोगों को मकान बनाने के लिए लोन दिया जाना था। गृह निर्माण सहकारी समिति के तत्कालीन अध्यक्ष थावरदास माधवानी और आवास पर्यवेक्षक बसंत कुमार साहू ने अपनी समिति के 186 सदस्यों के नाम पर एक-एक लाख रुपए का लोन मंजूर करवा लिया। इस तरह दोनों ने कुल 1 करोड़ 86 लाख रुपए निकाल लिए गए।

रिकॉर्ड में रायपुरा और पंडरीकांचा क्षेत्र में मकान बनना दिखाया गया, लेकिन जांच में वहां न तो मकान मिले और न ही लाभार्थी मौजूद थे। जांच में सामने आया कि इस पूरे मामले में फर्जी दस्तावेज और नकली प्रमाण पत्रों का इस्तेमाल किया गया।

ट्रांसपोर्ट बुकिंग: प्रमुख पहुंच मार्गों पर मालवाहक वाहनों के प्रतिबंध के संदर्भ में व्यापारियों का संयुक्त निरीक्षण, देंगे सुझाव

रायपुर/नवप्रदेश। देश के सबसे बड़े व्यापारी संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वाइस चेयरमेन एवं राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड (भारत सरकार) के सदस्य श्री अमर पारवानी, छत्तीसगढ़ इकाई के चेयरमेन श्री जितेंद्र दोशी, श्री विक्रम सिंहदेव, अध्यक्ष श्री परमानंद जैन, महामंत्री श्री सुरिन्दर सिंह, कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल, कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र जग्गी, श्री राम मंधान, वासु मखीजा, श्री भरत जैन, राकेश ओचवानी, शंकर बजाज ने संयुक्त रूप से बताया कि ट्रांसपोर्ट व्यवस्था एवं ट्रैफिक समस्या के समाधान को लेकर प्रशासन एवं व्यापारिक संगठनों के बीच संवाद की प्रक्रिया निरंतर जारी है। इसी क्रम में आदरणीय पुलिस कमिश्नर डॉ. संजीव शुक्ला द्वारा व्यापारियों से बेहतर एवं व्यवहारिक सुझाव आमंत्रित किए जाने के परिप्रेक्ष्य में आज विभिन्न व्यापारी संघों के प्रतिनिधियों ने संबंधित क्षेत्रों का संयुक्त रूप से स्थल निरीक्षण (भ्रमण) किया।

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वाइस चेयरमेन एवं राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड (भारत सरकार) के सदस्य श्री अमर पारवानी ने बताया कि इस दौरान व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने स्टेशन रोड, तेलघानी नाका, भैंसथान, गुढियारी, अग्रसेन चौक, प्रभात टॉकीज, संजय गांधी चौक, नहरपारा सहित प्रमुख ट्रांसपोर्ट एवं बाजार क्षेत्रों का निरीक्षण कर ट्रैफिक व्यवस्था, माल बुकिंग, लोडिंग-अनलोडिंग एवं आवागमन की वास्तविक स्थिति का गहन अवलोकन किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन

रायपुर/नवप्रदेश। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव 2026 रायपुर नगर में भव्य रूप से मनाया जा रहा है। भगवान महावीर स्वामी का संदेश देने 12 मार्च से महोत्सव का आयोजन किया गया है, जो महावीर जयंती यानी 31 मार्च तक चलेगा। महोत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रेश शाह, महासचिव गोल्डी लूनिया, कोषाध्यक्ष विकास सेठिया, कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत बैद और सचिव आनंद जेन ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की भव्य श्रृंखला जारी है। महोत्सव समिति, समता युवा संघ और विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से महोत्सव में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इन आयोजनों में बड़ी संख्या में लोग शामिल होकर आस्था के साथ सेवा कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम में बुधवार को डीडी नगर में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें बच्चों और महिलाओं ने भगवान महावीर का संदेश देते हुए, लोगों से अपील की, कि वे शादियों में दहेज की मांग न करें, सड़क पर नाच-गाना न करें।

साथ ही शादी में सादगीपूर्ण निमंत्रण, संगीत संध्या का आयोजन नहीं करने, भोजन के दौरान 31 से ज्यादा खाद्य पदार्थों का उपयोग नहीं करने, महिला वेटर को नहीं बुलाने, नॉनवेज नहीं खाना, पशु-पक्षियों के आकार में सलाद नहीं काटने, शादी में पटाखों का उपयोग न करने का संदेश दिया गया। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव 2026 में सेवाकार्य अंतर्गत 16 से 30 मार्च तक 15 दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। इसी क्रम में डीडी नगर के श्री 1008 वासुपूज्य जैन मंदिर में बुधवार को 21 लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदाताओं ने बताया कि हमारा रक्त किसी जरूरतमंद का जीवन संवार सकता है, इससे बड़ा दान कुछ नहीं हो सकता है।

ई-सिम बदलते ही खाते से 1.30 लाख पार, युवक ठगी का शिकार

रायपुर/नवप्रदेश। राजधानी में ई-सिम को फिजिकल सिम में बदलते ही एक युवक के बैंक खातों से 1.30 लाख रुपए पार हो गए। मामले में पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफधोखाधड़ी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक सेक्टर-1 शिवानंदनगर निवासी देवाशीष नाग 17 जनवरी की शाम पुराना मोबाइल बेचकर नया फोन लेने जयस्तंभ चौक स्थित एक मोबाइल दुकान गया था। उसके मोबाइल में जियो का ई-सिम था। दुकान के कर्मचारी ने उसे एक सिम विक्रेता के पास ले जाकर ई-केवाईसी कराई और फिजिकल सिम दिलवाया।

इस दौरान बताया गया कि 24 घंटे तक सिम में ओटीपी बंद रहेगा। इसके बाद युवक ने नया मोबाइल लेकर उसी सिम का उपयोग शुरू किया।

लाल आतंक का अंत करीब: कांकेर जिले में सक्रिय है परतापुर एरिया कमेटी और कंपनी नंबर-5

डेडलाइन के 13 दिन शेष, 18 नक्सलियों की तलाश तेज

रायपुर-कांकेर। कांकेर जिले के घने जंगलों में इन दिनों सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच एक अलग ही रणनीतिक उटापटक चल रही है। यह लड़ाई गोलीबारी की नहीं, बल्कि समर्पण की है। कांकेर जिला में सक्रिय परतापुर एरिया कमेटी एवं कंपनी नंबर 05 के 18 सक्रिय नक्सलियों को आत्मसमर्पण के लिए तैयार करने में जुटा है, लेकिन लगातार प्रयासों के बावजूद अभी तक सफलता हाथ नहीं लगी है। समय तेजी से बीत रहा है और डेडलाइन के लिए अब महज 13 दिन ही शेष रह गए हैं, जिससे संबंधितों की चिंता भी बढ़ गई है। जानकारी के अनुसार, कांकेर जिले में सक्रिय परतापुर एरिया कमेटी और कंपनी नंबर 05 में 20 नक्सली है, इनमें से दो नक्सली मंगेश परचापी और उसकी पत्नी मनीषा हाल ही में आरकेबी डिवीजन की ओर निकल गए थे। दोनों नक्सली आरकेबी डिवीजन की नक्सली सदस्य हिड़मे के साथ कोहकाटोला क्षेत्र में एक लाड़ी में रुके हुए थे। इसकी जानकारी जिला मानपुर पुलिस को मिली। मानपुर के पुलिस अधीक्षक वायपी सिंह ने एक टीम रवाना किया। वहीं कांकेर पुलिस अधीक्षक निखिल राखेखा ने भी एक टीम रवाना किया था। तीनों नक्सलियों का फोर्स के आने की आहट मिलते ही नक्सली हड़ड़ाते हुए अपने हथियार और सामान छोड़कर जंगल की ओर भाग निकले। दोनो जिलों की पुलिस इन तीनों नक्सलियों का मूवमेंट अब किधर है, उसकी तलाश करने में लगी हुई है। मंगेश और मनीषा के इस तरह भाग निकलने के बाद कांकेर जिला में सक्रिय परतापुर एरिया कमेटी और कंपनी नंबर 05 के शेष 18 नक्सलियों के कांकेर और अबूझमाड़ के दुर्गम पहाड़ी इलाकों में छिपे होने की चर्चाएं चल रही है।

समर्पण के लिए पुलिस की 18 पर नजर

कांकेर जिले में सक्रिय 18 नक्सलियों परतापुर एरिया कमेटी से चंदर, रूपी, कुमारी माली, मंगलू पद्दा, राधिका, जिला मरकाम, को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से तीन अलग-अलग टीमें सक्रिय है। इनमें एक टीम जगदलपुर से, दूसरी नारायणपुर से और तीसरी स्थानीय स्तर के लोग शामिल है। यह सभी टीमें लगातार अंदरूनी जंगलों में सक्रिय हैं और संपर्क स्थापित करने की कोशिश कर रही है। यह कयास लगाए जा रहे है कि यदि एक-दो दिन में कोई सकारात्मक परिणाम नहीं मिलता है, तो सुरक्षा बल फिर से सर्च ऑपरेशन तेज कर सकते हैं।

छग में कई इलाकों में बारिश की चेतावनी

रायपुर/नवप्रदेश। प्रदेश में मौसम का मिज़ाज अचानक बदला हुआ नजर आ रहा है, जिससे लोगों को भीषण गर्मी से थोड़ी राहत मिली है। पिछले कुछ दिनों से लगातार बढ़ते तापमान के बीच अब हल्की गिरावट दर्ज की गई है, जिससे मौसम सुहावना हो गया है। मौसम विभाग ने पहले ही तापमान में कमी और मौसम बदलने के संकेत दिए थे, जो अब सच साबित होते दिख रहे हैं। मौसम विभाग के अनुसार, प्रदेश के कई जिलों में तापमान में गिरावट दर्ज की गई है। दुर्ग में अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस रहा, वहीं बलरामपुर और राजनांदगांव में 34 डिग्री, सुकमा में 33.7 डिग्री, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में 33.6 डिग्री और राजधानी रायपुर में 33.5 डिग्री तापमान रिकॉर्ड किया गया।

इंसानों के वजूद से भी पुराना है 'होर्मुज'

तेहरान। अमेरिका-इजरायल और ईरान की जंग के बीच आज किसी चीज की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है, तो वह है होर्मुज जलडमरूमध्य है। इसे स्ट्रेट ऑफहोर्मुज भी जाता है। दुनिया के सबसे प्रमुख ऊर्जा मार्गों में से एक माने जाने वाले इस संकरे समुद्री गलियारे से दुनिया का 20 फीसदी ऊर्जा व्यापार गुजरता है। फिलहाल यह जगह ईरान की ताकत और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लिए परेशानी की वजह बन गई है। लेकिन पानी की यह संकरी पट्टी आज आधुनिक दुनिया पर कैसे राज करती है, इसे जानने के लिए इतिहास की गहराई में झांकना होगा। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि इस जलडमरूमध्य की भूमिका लाखों साल पहले पृथ्वी की पपड़ी पर लिख दी गई थी। उस समय धरती पर पहला इंसान पैदा भी नहीं हुआ था। धरती की स्टडी से पता चलता है कि 6000 साल पहले फारस की खाड़ी का अस्तित्व ही नहीं था। उस समय न अरब था, न ईरान और उनके बीच से गुजरने वाला होर्मुज जलडमरूमध्य। आज का अरब प्रायद्वीप लाखों वार्ष पहले गोंडवाना नामक विशाल दक्षिणी महाद्वीप में था। आज यह इलाका बदलाव के साथ अफ्रीका में बदल चुका है। इसके उत्तर में टेथीस महासागर था, जो इसे यूरेशिया के तटों से अलग करता था। लगभग 180 मिलियन वर्ष पहले गोंडवाना में टूट शुरू हुई, जिससे भारतीय और अरब प्लेटें उत्तर की ओर बढ़ीं। लाखों सालों तक ये प्लेटें यूरेशियाई प्लेट की तरफ गति करती रहीं। इस दौरान उनके बीच टेथीस सागर संकरा होता गया। आगे बढ़ते-बढ़ते अरब प्रायद्वीप यूरेशिया से टकराया तो पृथ्वी की पपड़ी में मौजूद चट्टानें टक्कर के चलते मुड़ गईं और बड़ी-बड़ी चोटियों में बदल गई है। यह जाग्रोस पर्वत थे। एक विशाल पर्वतमाला, जो तुर्की से ईरान और फिर फारस की खाड़ी तक फैली हुई है।

न्यूज गैलरी

यूडीएफको मिलेंगी 85 से 100 सीटें : शशि थरूर

तिरुवनंतपुरम। केरल विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक माहौल गरमा गया है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और सांसद शशि थरूर ने चुनाव को लेकर बड़ा दावा किया है। उन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट की जीत का भरोसा जताया है। थरूर के मुताबिक, यूडीएफको 140 सीटों वाली विधानसभा में 85 से 100 सीटें मिल सकती हैं। उन्होंने भाजपा को केरल की राजनीति में एक मामूली खिलाड़ी बताया है। थरूर ने कहा कि मौजूदा आंकड़ों के हिसाब से मुकाबला काफी कड़ा दिख रहा है। इसका मतलब है कि हर सीट और हर वोट महत्वपूर्ण है। इसलिए हम भाजपा को नजरअंदाज नहीं कर रहे हैं और न ही इसे लेकर लापरवाह हैं। उन्होंने साफ किया कि कांग्रेस केरल में भाजपा को सरकार के लिए खतरा नहीं मानती। उन्होंने कहा, वे ज्यादा से ज्यादा बस अपना खाता खोल सकते हैं। थरूर ने यूडीएफकी जीत का भरोसा जताते हुए कहा कि 140 सीटों वाली विधानसभा में 85 से 100 सीटों का आंकड़ा अच्छा रहेगा। उन्होंने क्रिकेट का उदाहरण देते हुए कहा, ÷यूडीएफ खासकर एलडीएफको गूगली फेंक रहा है, क्योंकि वे एक मुश्किल पिच पर हैं और हम उन्हें वहां फंसा सकते हैं।

पोंडा उपचुनाव के लिए आप ने चला 'बहुजन कार्ड'

पणजी। गोवा में उपचुनाव को लेकर राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को एक बड़ा दांव खेलते हुए स्थानीय व्यवसायी गितेश नाइक को पोंडा विधानसभा सीट से उम्मीदवार घोषित कर दिया है। खास बात यह है कि गितेश ने महज एक दिन पहले ही पार्टी का दामन थामा था। इस दौरान दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की भी मौजूदगी रही। गितेश नाइक के पार्टी में शामिल होने के बाद अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ङ्ग' पर एक पोस्ट शेयर किया। उन्होंने लिखा, ÷हम बहुजन समाज के गतिशील समाजसेवी गितेश नाइक का आम आदमी पार्टी में स्वागत करते हैं। उनके आने से न केवल पोंडा, बल्कि पूरे गोवा में पार्टी को मजबूती मिलेगी।

दुलारचंद यादव हत्याकांड में अनंत सिंह को मिली बेल

पटना। मोकामा के विधायक अनंत सिंह को पटना हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है। उन्हें चर्चित दुलारचंद यादव हत्या मामले में जमानत दे दी गई है। अदालत ने सुनवाई के दौरान प्रस्तुत तथ्यों और साक्ष्यों पर विचार करते हुए यह निर्णय सुनाया। समर्थकों ने जश्न मनाते हुए कहा कि उन्हें शुरू से ही अनंत सिंह पर भरोसा था और अदालत के फैसले ने उनके विश्वास को और मजबूत किया है। गौरतलब है कि दुलारचंद यादव हत्या मामला लंबे समय से चर्चा में रहा है और इस केस में अनंत सिंह की गिरफ्तारी के बाद राजनीतिक हलकों में भी हलचल तेज हो गई थी। अब जमानत मिलने के बाद यह मामला एक बार फिर सुर्खियों में आ गया है।

भविष्य के युद्धों में ड्रोन अहम, भारत को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना होगा: राजनाथ सिंह

राष्ट्रीय रक्षा उद्योग सम्मेलन: डिफेंस इनोवेशन में बढ़ती प्रगति

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को नई दिल्ली में आयोजित 'राष्ट्रीय रक्षा उद्योग सम्मेलन' में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने भारत को ड्रोन निर्माण के क्षेत्र में एक मजबूत और आत्मनिर्भर देश बनाने पर जोर दिया। उन्होंने रूस-यूक्रेन और ईरान-इस्रायल के बीच चल रहे मौजूदा संघर्षों का जिक्र किया। राजनाथ सिंह ने कहा कि इन दोनों युद्धों ने यह साफ कर दिया है कि भविष्य की लड़ाइयों में ड्रोन और एंटी-ड्रोन तकनीक की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होने वाली है।

उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया इन युद्धों को देख रही है। इनसे हमें यह सबक मिलता है कि भारत को ड्रोन बनाने के लिए एक ऐसा ईकोसिस्टम तैयार करना होगा, जिसमें हम पूरी तरह आत्मनिर्भर हों। रक्षा मंत्री के अनुसार, भारत की रक्षा तैयारियों और अपनी रणनीतिक स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए यह बेहद जरूरी है। उन्होंने घरेलू रक्षा कंपनियों के प्रमुखों और सरकारी अधिकारियों से कहा कि हमें ड्रोन तकनीक में किसी भी दूसरे देश के भरोसे नहीं रहना चाहिए। राजनाथ सिंह ने गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की बात कही। उन्होंने स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भरता का मतलब केवल पूरा ड्रोन बनाना नहीं है, बल्कि उसके हर छोटे-बड़े पुर्जे का निर्माण भारत में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ड्रोन के सांचे, सॉफ्टवेयर, इंजन और बैटरी जैसी सभी चीजें 'मेड इन इंडिया' होनी चाहिए। उन्होंने यह भी माना कि यह काम चुनौतीपूर्ण है। इसका कारण यह है कि दुनिया के कई देश ड्रोन तो बनाते हैं, लेकिन उनके जरूरी पुर्जे किसी न किसी देश से ही आयात करते हैं। भारत को इस चुनौती को पार करना होगा। इसके अलावा, रक्षा मंत्री ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), रोबोटिक्स और ऑटोमेशन जैसी नई तकनीकों के महत्व को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि ये तकनीकें आज पूरी दुनिया में निर्माण के तरीके को बदल रही हैं। सिमुलेशन टेक्नोलॉजी भी भविष्य के लिए नए रास्ते खोल रही है। इस सम्मेलन में देश की प्रमुख रक्षा कंपनियों के बड़े अधिकारी और रक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ मौजूद रहे।

एमएसएमई सेक्टर में तेज़ वृद्धि

राजनाथ सिंह ने बताया कि 2012-13 के आसपास देश में एमएसएमई की संख्या करीब 4.67 करोड़ थी, जो अब बढ़कर लगभग 8 करोड़ हो गई है। यह वृद्धि इस क्षेत्र में मौजूद अपार संभावनाओं को दर्शाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने एमएसएमई सेक्टर को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं। 'उद्यम पोर्टल' और 'उद्यम असिस्ट पोर्टल' जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए छोटे उद्योगों को औपचारिक अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

नवाचार से मजबूत होगा रक्षा क्षेत्र

उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे प्रयासों से ही बड़े बदलाव की शुरुआत होती है। यदि उद्योग जगत, स्टार्टअप्स और सरकार मिलकर काम करें, तो भारत एक मजबूत इनोवेशन इकोसिस्टम विकसित कर सकता है और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल कर सकता है। रक्षा मंत्री ने बताया कि 58 प्रोटोटाइप को खरीद के लिए मंजूरी दी जा चुकी है, जिनकी कुल वैल्यू लगभग 3,853 करोड़ रुपए है। इसके अलावा 45 प्रोक्योरमेंट कॉन्ट्रैक्ट साइन किए गए हैं, जिनकी कीमत करीब 2,326 करोड़ रुपए है।

ईरान के हमलों से धुआं-धुआं खाड़ी देश

■ बदले की आग में धधक रहीं सऊदी-कुवैत-कतर की रिफाइनरियां

दुबई-तेहरान (ए.)

ईरान युद्ध का आज 20वां दिन है। इजरायली और अमेरिकी हमलों से बौखलाए ईरान ने अब खाड़ी देशों पर कहर बरपाना शुरू कर दिया है। इस जंग में अब खाड़ी देशों के तेल भंडार, रिफाइनरीज और अन्य एनर्जी ठिकाने सीधे ईरान के निशाने पर आ गए हैं। ईरान ने कतर, कुवैत, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के प्रमुख गैस और तेल प्रतिष्ठानों पर प्रचंड हमले किए हैं, जिससे न सिर्फ क्षेत्रीय तनाव खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है बल्कि इन देशों की रिफाइनरियां धधक रही हैं।

बड़ी बात ये है कि ईरान ने खाड़ी देशों पर ये हमले तब किए हैं, जब कुछ घंटे पहले ही उसे अमेरिका ने चेतावनी दी थी कि 'तुम्हें नरक दिखा देंगे।' दरअसल, ईरान साउथ पार्स स्थित दुनिया के सबसे बड़े अपने गैस क्षेत्र पर इजरायली हमले और पिछले 18 दिनों में चार दर्जन से ज्यादा बड़े नेताओं की हत्या किए जाने से बौखलाया हुआ है। साउथ पार्स ईरान की लगभग 70 प्रतिशत घरेलू गैस की आपूर्ति करता है। इसक एक हिस्सा, कतर के साथ साझा करता था लेकिन इजरायली हमले में इसे धुआं-धुआं कर दिया गया।

सांप के जहर मामले में एल्विश को राहत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने यूट्यूबर एल्विश यादव को बड़ी राहत देते हुए 2023 के चर्चित स्नेक वेनम मामले में उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा दर्ज एफआईआर को रद्द कर दिया है। दरअसल, नवंबर 2023 में उत्तर प्रदेश के नोएडा में कथित रेव पार्टी में सांप के जहर के इस्तेमाल के आरोपों के बाद एल्विश यादव के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। बाद में 17 मार्च 2024 को उन्हें गिरफ्तार भी किया गया। आरोप था कि पार्टियों में सांपों और उनके जहर का इस्तेमाल मनोरंजन और नशे के लिए किया जा रहा था, जो वन्यजीव संरक्षण कानून के तहत गंभीर अपराध है।

न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि NDPS एक्ट, 1985 की धारा 2(23) के तहत जिस कथित साइकोट्रॉपिक पदार्थ की बात कही गई, वह कानून की निर्धारित सूची (Schedule) में शामिल ही नहीं है। साथ ही, कोर्ट ने यह भी नोट किया कि एल्विश यादव के पास से कोई बरामदगी नहीं हुई थी और चार्जशीट में केवल यह आरोप था कि उन्होंने एक सहयोगी के जरिए ऑर्डर दिया था। इन तथ्यों को देखते हुए अदालत ने माना कि हृष्ठक्कस् एक्ट का इस्तेमाल इस मामले में कानूनी रूप से टिकाऊ नहीं है। दूसरे अहम पहलू पर, कोर्ट ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की धारा 55 का हवाला देते हुए कहा कि इस कानून के तहत अभियोजन केवल अधिकृत अधिकारी की शिकायत के आधार पर ही शुरू किया जा सकता है। पीठ ने कहा कि मौजूदा स्नढ्ढक्रइस प्रक्रिया का पालन नहीं करती, इसलिए यह विधिसम्मत नहीं मानी जा सकती।

साथ ही, अदालत ने यह भी दर्ज किया कि भारतीय दंड संहिता के तहत लगाए गए आरोप स्वतंत्र रूप से स्थापित नहीं होते, क्योंकि वे एक पहले की शिकायत का हिस्सा थे जिसे पहले ही बंद किया जा चुका है।

'ट्रंप दुनिया के सबसे ताकतवर नेता, वे किसी के दबाव में नहीं'

वॉशिंगटन। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने साफकर दिया है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप किसी दूसरे देश के इशारे पर काम नहीं करते। उन्होंने कहा कि ट्रंप दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के नेता हैं और वे केवल अमेरिका के हित को ध्यान में रखकर ही फैसले लेते हैं। लेविट का यह बयान नेशनल काउंटर टेररिज्म सेंटर के डायरेक्टर जो केंट के इस्तीफे के बाद आया है। जो केंट ने अपने पद से हटने के बाद गंभीर आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था कि अमेरिका ने इस्राइल और वहां की ताकतवर लॉबी के दबाव में आकर ईरान के साथ युद्ध शुरू किया है। केंट ने यह भी दावा किया था कि ट्रंप को कोई दूसरा देश नियंत्रित कर रहा है। इन आरोपों पर पलटवार करते हुए लेविट ने कहा कि राष्ट्रपति ने जो केंट को देश की सेवा करने का मौका दिया था। लेकिन उन्होंने झूठ से भरे एक लेटर के साथ इस्तीफा दे दिया। लेविट के अनुसार, ट्रंप दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के सेना के प्रमुख हैं और उन्हें कोई नहीं बताता कि क्या करना है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति ईरान को आतंकवाद का समर्थक नहीं मानता, वह आतंकवाद विरोधी विभाग का प्रमुख नहीं हो सकता। लेविट ने बताया कि ईरान बहुत तेजी से बैलिस्टिक मिसाइलें बना रहा था ताकि वह परमाणु बम तैयार कर सके। अमेरिकी खुफिया जानकारी के अनुसार, ईरान अमेरिकी सैनिकों और ठिकानों पर हमला करने की योजना बना रहा था। इसलिए ट्रंप ने अपनी सेना और संपत्ति की सुरक्षा के लिए ईरान पर हमले का फैसला लिया।

हम फीफा विश्व कप 2026 का नहीं अमेरिका का बहिष्कार करेंगे : ईरान

नई दिल्ली। ईरान ने फीफा विश्व कप 2026 के बहिष्कार की धमकी वापस ले ली है। लेकिन अमेरिका में मैच न खेलने के अपनी मांग पर कायम है। ईरान के फुटबॉल चीफमेहदी ताज ने कहा कि टीम टूर्नामेंट की तैयारियों को जारी रखेगी, भले ही पुरुष टीम अमेरिका में अपने मैच न खेले।

एचडीएफसी बैंक के अध्यक्ष अतनु के इस्तीफे से शेयर 9 फीसदी लुढ़के

नई दिल्ली। एचडीएफसी बैंक के अध्यक्ष अतनु चक्रवर्ती के नैतिक चिंताओं का हवाला देते हुए पद छोड़ने के बाद गुरुवार सुबह बैंक के शेयर करीब नौ फीसदी गिर गए। इस इस्तीफे के कारण देश के दूसरे सबसे बड़े ऋणदाता बैंक के बाजार पूंजीकरण में 65,176.48 करोड़ रुपये की भारी कमी आई। बैंक के शेयर अपने 52-सप्ताह के निचले स्तर पर पहुंच गए, जिससे निवेशकों में चिंता बढ़ गई। मुंबई स्टॉक एक्सचेंज पर ब्लू-चिप स्टॉक 8.41 फीसदी गिरकर 772 रुपये पर आ गया, जो इसका 52-सप्ताह का निचला स्तर है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर भी शेयर 8.66 फीसदी लुढ़ककर 770 रुपये के 52-सप्ताह के निचले स्तर पर पहुंच गया। इस गिरावट के साथ कंपनी का बाजार पूंजीकरण 12,31,666.45 करोड़ रुपये रह गया। यह शेयर बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला रहा। सुबह के कारोबार में 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 1740.34 अंक गिरकर 74,949.92 पर कारोबार कर रहा था, जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 514.85 अंक गिरकर 23,262.95 पर आ गया। यह पहली बार है कि एचडीएफसी बैंक के अंशकालिक अध्यक्ष ने कार्यकाल के बीच में पद छोड़ा है, जिससे बैंक के कामकाज को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। बैंक ने देर शाम एक फाइलिंग में बताया कि चक्रवर्ती ने 18 मार्च, 2026 को बैंक के अंशकालिक अध्यक्ष और स्वतंत्र निदेशक के पद से तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दे दिया है। बैंक ने यह भी कहा कि चक्रवर्ती का इस्तीफा पत्र 17 मार्च, 2026 का था, लेकिन बैंक को यह 18 मार्च, 2026 को दोपहर 3:17 बजे प्राप्त हुआ। चक्रवर्ती ने अपने 17 के इस्तीफे पत्र में नैतिक चिंताओं का उल्लेख किया है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर, (जोन क्र. - 4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
Email ID - rmczone4@gmail.com

ईश्तहार

नामंतरण प्र.क्र. **29506** दिनांक **19.03.2026**
वार्ड का नाम- **46 - सिविल लाईन वार्ड**

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **46** स्थित भवन / भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई. डी. **RPR333B0290B** जो की निगम अभिलेख श्री/ श्रीमती **SMT. LAXMI CHAUDHARY** पिता / पति श्री/ श्रीमती **ASHOK KUMAR CHAUDHARY** के नाम से दर्ज है जिसको श्री/श्रीमती **नेहा वर्मा** पिता /पति श्री/श्रीमती **रवि वर्मा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति / संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा / प्रस्तुत करे । निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी । जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा ।

" सूचना जारी करे "
श्रीमति दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर, (जोन क्र. - 4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
Email ID - rmczone4@gmail.com

ईश्तहार

नामंतरण प्र.क्र. **29551** दिनांक **19.03.2026**
वार्ड का नाम- **44 - स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड**

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **44** स्थित भवन / भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई. डी. **RPR739E00624** जो की निगम अभिलेख श्री/ श्रीमती **MURLI MANOHAR** पिता / पति श्री/ श्रीमती **BHIMAN DAS MAKHIJA** के नाम से दर्ज है जिसको श्री/श्रीमती **आसिफ खान** पिता /पति श्री/श्रीमती **स्व. इकबाल खान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार / **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति / संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते है, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा / प्रस्तुत करे । निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी । जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा ।

" सूचना जारी करे "
श्रीमति दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय संयुक्त संचालक एवं अधीक्षक
छत्तीसगढ़ आयुर्विज्ञान संस्थान, (सिम्स चिकित्सालय) बिलासपुर (छ.ग.)
FAX (O)-07752-237400, PHONE (O)-0752-224800, 222301, 2235500

क्रमांक /औ.भ./सं.सं.अधी./ सिम्स चिकी./2026/1126 — बिलासपुर, दिनांक 18-03-2026

// दावा आपत्ति सूचना //

सिम्स चिकित्सालय बिलासपुर (छ0ग0) की ओर से निम्नलिखित चिकित्सकीय उपकरण साम्पत्तिक प्रकृति (Proprietary Character) होने के कारण रिएजेन्ट्स / कन्ज्युमेबल क्रय करने हेतु दावा आपत्ति सूचना आमंत्रित की जा रही है। प्रपत्र एवं अन्य जानकारी महाविद्यालय के वेबसाईट www.cimsbilaspur.ac.in में अवलोकन कर प्राप्त किये जा सकते है।

S. N.	Name of Equipment	Make	Model No.	Name of Department
01	CR System Printer	DXD 100 + (DR System) with NX Workstation and Drystar 5503	Dry Star 5503	Radiodiagnosis
02	CR System Printer	DXD 300 (DR System) with NX Workstation and Drystar AXYS	Dry Star 5503	Radiodiagnosis
03	Dry View Laser Imager	GE Hangwel Medical Systems Co. Ltd. China & REVOLUTION EVO	Dry View 6950	Radiodiagnosis

दावा आपत्ति जमा करने की अंतिम तिथि 20/04/2026
स्थानः- सिम्स चिकित्सालय बिलासपुर (छ0ग0)

जी -252607284/5

संयुक्त संचालक एवं अधीक्षक
सिम्स चिकित्सालय, बिलासपुर (छ.ग.)

घने जंगलों के बीच विराजमान घुचापाली चंडी मंदिर, जंगल से मंदिर तक प्रसाद खाने आते हैं भालू, नवरात्रि में उमड़ती है भीड़

पहाड़ की चोटी पर आस्था का धाम

महासमुंद/नवप्रदेश। जिले के बागबाहरा क्षेत्र के घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच स्थित घुचापाली चंडी मंदिर आस्था, प्रकृति और रोमांच का अद्भुत संगम है। ऊंची पहाड़ी की चोटी पर विराजमान मां चंडी का यह मंदिर वर्षों से श्रद्धालुओं की गहरी आस्था का केंद्र बना हुआ है। चैत्र नवरात्र के दौरान यहां भक्ति और श्रद्धा का विशेष वातावरण देखने को मिलता है। नौ दिनों तक हजारों श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए यहां पहुंचते हैं और पूरा क्षेत्र ÷जय माता दी÷ के जयकारों से गूंज उठता है।

पहाड़ी चट्टान से चढ़कर पहुंचना पड़ता है मंदिर तक

घुचापाली गांव के समीप स्थित यह मंदिर ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। श्रद्धालुओं को माता के दर्शन के लिए पहाड़ी चट्टान से चढ़कर मंदिर तक पहुंचना पड़ता है। रास्ते में चारों ओर फैले घने जंगल, पहाड़ियों की ठंडी हवा और प्राकृतिक सौंदर्य श्रद्धालुओं को एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभव कराते हैं। मंदिर की चोटी से आसपास के गांव, पहाड़ और जंगलों का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

नवरात्र में लगता है भक्ति का मेला

चैत्र नवरात्र के नौ दिनों तक यहां विशेष पूजा-अर्चना, दुर्गा पाठ, आरती और भंडारे का आयोजन किया जाता है। ओडिशा, महाराष्ट्र के अलावा दूर-दराज के गांवों और शहरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। कई भक्त मनोकामना पूरी होने पर नारियल, चुनरी और प्रसाद चढ़ाकर माता का आशीर्वाद लेते हैं। इन दिनों मंदिर परिसर और पहाड़ी का रास्ता भक्तों से भरा रहता है और यहां मेले जैसा माहौल बन जाता है।

जंगल से अक्सर पहुंच जाते हैं भालू

घुचापाली चंडी मंदिर का इलाका घने जंगलों से घिरा हुआ है। स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार कई बार जंगल से भालुओं का दल मंदिर परिसर पहुंच जाता है। हालांकि की किसी भी समय या कम भीड़ वाले समय में देखने को मिलती हैं। ग्रामीण बताते हैं कि भालू जंगल में मिलने वाले फल-फूल के अलावा मंदिर में प्रसाद तलाश में यहां तक आ जाते हैं।

जागृत देवी के रूप में पूजी जाती हैं मां चंडी

स्थानीय लोगों की मान्यता है कि यहां विराजमान मां चंडी जागृत देवी हैं। सच्चे मन से मांगी गई मन्नत यहां जरूर पूरी होती है। इसी वजह से आसपास के गांवों के लोग किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत से पहले यहां आकर माता के दर्शन करते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

प्रशासन और मंदिर समिति की तैयारी

नवरात्र के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए मंदिर समिति और स्थानीय प्रशासन द्वारा साफ-सफाई, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए हैं। स्वयंसेवकों की टीम भी श्रद्धालुओं को मार्गदर्शन देने और व्यवस्था बनाए रखने में सक्रिय है, ताकि भक्तों को दिक्कत न हो।

छुईखदान की स्वयंभू काली माता, 400 साल पुरानी आस्था, नवरात्रि में श्रद्धालुओं की भीड़

छुईखदान नवप्रदेश। जिले के छुईखदान नगर में स्थित प्राचीन काली मंदिर आज भी श्रद्धा और आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। लगभग 350 से 400 वर्ष पुराना यह मंदिर अपने अद्भुत इतिहास और चमत्कारी मान्यताओं के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। नवरात्रि के अवसर पर यहां भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है और पूरे नगर में भक्ति का विशेष माहौल बन जाता है।

तालाब की खुदाई में प्रकट हुई काली माता: स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर की स्थापना किसी मानव द्वारा नहीं बल्कि स्वयं हुई मानी जाती है। बताया जाता है कि कई वर्ष पूर्व जब यहां तालाब की खुदाई की जा रही थी, तब काली माता की प्रतिमा भूमि के भीतर से प्रकट हुई। इस घटना को चमत्कार मानते हुए नगरवासियों ने उसी स्थान के पास एक पेड़ के नीचे माता की स्थापना कर दी। धीरे-धीरे यह स्थान मंदिर के रूप में विकसित हो गया और आज यह नगर का प्रमुख धार्मिक स्थल बन चुका है। मंदिर से जुड़ी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां स्थापित काली माता को 'स्वयंभू' माना जाता है, अर्थात उनकी उत्पत्ति किसी कारीगर द्वारा नहीं की गई बल्कि वे स्वयं प्रकट हुई हैं। इस कारण भक्तों की आस्था और भी अधिक गहरी हो जाती है और लोग अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए यहां दूर-दूर से आते हैं।

नवरात्रि में विशेष पूजा-अर्चना: नवरात्रि के दौरान मंदिर में विशेष धार्मिक आयोजन किए जाते हैं। श्रद्धालु माता को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार की ज्योतियां स्थापित करते हैं। जानकारी के अनुसार, इस नवरात्रि में 509 तेल ज्योति कलश स्थापित हुए हैं, जबकि 47 घी के दीपक भी प्रज्वलित किए गए हैं। इसके अलावा 83 शीतला तेल की ज्योतियां भी विशेष रूप से अर्पित की गई हैं। यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और भक्त इसे अत्यंत श्रद्धा के साथ निभाते हैं। नवरात्रि के नौ दिनों में मंदिर परिसर में भक्ति संगीत, जागरण और पूजा-पाठ का आयोजन होता है। नगरवासियों का मानना है कि सच्चे मन से मां काली की आराधना करने पर हर मनोकामना पूर्ण होती है। यहां आने वाले श्रद्धालु अपने जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। नवरात्रि के दौरान बढ़ती भीड़ को देखते हुए स्थानीय प्रशासन भी सुरक्षा और व्यवस्थाओं को लेकर सतर्क रहता है। मंदिर परिसर में साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विशेष इंतजाम किए जाते हैं, ताकि सभी भक्त शांतिपूर्वक दर्शन कर सकें।

मां दुर्गा की भक्ति में लीन रहेंगे श्रद्धालु महामाया मंदिर में जलेंगे आस्था के ज्योत

मुंगेली/नवप्रदेश। अंचल में चैत्र नवरात्रि की तैयारियां पूर्णता की ओर है। सभी देवी मंदिरों को साफ-सफाई पुताई कर सजाया जा रहा है। साथ ही मनोकामना ज्योति कलश रखने के लिए तैयारी की गयी है। नवरात्रि के दिन से हिन्दू नववर्ष, गुड़ीपड़वा व झूलेलाल का जन्म दिन भी मनाया जाता है। जिसके लिए समाज के लोग अपने-अपने स्तर से तैयारी प्रारंभ कर देते हैं।

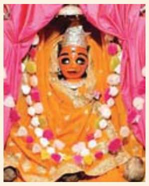

चैत्र नवरात्रि 19 मार्च गुरूवार से प्रारंभ हो रहा है। नवरात्रि की तैयारी मंदिरों मे पूर्णता की ओर है। युवा वर्ग भी हिन्दू नव वर्ष मनाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। माता के दरबारों को आकर्षक रूप से सजाया जा रहा है। अपनी मनोरथ पूर्ति के लिए लोग मंदिरों के ज्योति कलश की स्थापना करते हैं। जिसके लिए मंदिरों में अपने नाम दर्ज कराया जा रहा है। हिन्दू नववर्ष वर्ष प्रतिपदा से नवरात्र 19 मार्च गुंरूवार से प्रारंभ होगा। नवरात्रि में भक्तजन मां दुर्गा की आराधना में लीन रहेगें। नगर के ह्रदयस्थल में विराजित मॉ महामाया का दर्शन अद्भुत एवं निराली है। नाथयोगी संप्रदाय के योगियों द्वारा 355 वर्ष पूर्व राजस्थान के आबूपर्वत स्थित बोहरखेड़ी नाथ अखाड़ा से लाया गया। तत्पश्चात इसे वर्तमान स्थल पर मड़िया के रूप में स्थापित किया गया। जिसे 55 वर्ष पूर्व भवानी साव अंबिका साव द्वारा मंदिर के रूप में जीर्णोद्धार कराया गया। मंदिर के हवन कुंड एवं प्रांगण को दानदाता स्व तेजमल गोयल द्वारा निर्मित कराया गया।

सिद्धपीठ के रूप में प्रसिद्ध यह मंदिर भक्तो के अगाध-श्रद्धा का केन्द्र है। नवरात्रि के दौरान मंदिर में दुर्गा सत्तशती का निरंतर पाठ भी किया जाता है तथा ज्योति कलश प्रज्जवलित की जाती है। मंदिर में पूरे विधि विधान से देवी के नौ स्वरूपों की पूजा-अर्चना की जाती हैं। मान्यता है इन नौ दिनों तक देवी के विभिन्न रूपों की आराधना स्मरण का नियम और समयपूर्वक पालन किया जाए तो इससे न सिर्फ इच्छित फल की प्राप्ति होती है अपितु जीवन में आने वाले संकट से भी मुक्ति मिलती है। नगर के मध्य में विराजित मां महामाया मंदिर में नवरात्रि पर्व पर दर्शनार्थियों की विशेष भीड़ रहती हैं। प्राचीन मूर्ति एवं मान्यता के चलते पूरे वर्ष भर मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती हैं।

ज्योति कलश जलवाने वाले स्थानीय के अलावा अन्य जिलों सहीत विदेश के लोग भी ज्योति कलश जलवाते है नगर के मुख्य महामाया के अलावा महामाया मंदिर दाऊपारा, सोनारपारा स्थित महामाया मंदिर, दुर्गा मंदिर, मल्हापारा स्थित महामाया मंदिर, खरीपार्रा स्थित काली मंदिर, पानी टंकी स्थित मां अंगार मोती माता मंदिर एवं पंडरिया रोड स्थित शक्तिमाई मंदिर, करही स्थित दुर्गा मंदिर, हथनी कला अष्टभुजी दुर्गा मंदिर, लोहड़िया में महामाया मंदिर में तैयारियां चल रही है। मंदिरों के व्यवस्थापक एवं पुजारी नवरात्रि की व्यवस्था में जुटे हुए है।

नवरात्रि विशेष: मिर्रीटोला की मावली माता, जहां आस्था के साथ जुड़ी है अनोखी परंपरा

बालोद/नवप्रदेश। चैत्र नवरात्रि का पर्व आते ही देवी मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगती है, लेकिन बालोद जिले के गुरूर विकासखंड अंतर्गत ग्राम मिर्रीटोला स्थित मावली माता मंदिर अपनी अनोखी परंपरा, गहरी आस्था और सांस्कृतिक महत्व के कारण विशेष पहचान रखता है। जिला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूर स्थित यह धाम नवरात्रि के दौरान भक्तों के लिए प्रमुख आस्था केंद्र बन जाता है, जहां दूर-दराज से श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

स्वयंभू मानी जाती है माता की प्रतिमा, आस्था का प्रमुख केंद्र

ग्राम मिर्रीटोला के शांत एवं प्राकृतिक वातावरण के बीच स्थित यह मंदिर वर्षों पुराना है। स्थानीय मान्यता के अनुसार मावली माता की प्रतिमा स्वयं जमीन से प्रकट हुई थी, जिसके कारण इसे स्वयंभू माना जाता है। समय के साथ यह स्थान पूरे क्षेत्र की आस्था का केंद्र बन गया और ग्रामीणों का विश्वास है कि माता की कृपा से गांव और आसपास के क्षेत्रों में सुख-शांति और समृद्धि बनी रहती है।

अनोखी परंपरा: महिलाओं का मंदिर प्रवेश वर्जित: मावली माता मंदिर की सबसे विशेष पहचान इसकी अनूठी परंपरा है। महिलाओं का मंदिर परिसर में प्रवेश नहीं होता, वे केवल मुख्य द्वार तक पहुंचकर पूजा-अर्चना करती हैं, जबकि 12 वर्ष तक की बालिकाओं को प्रवेश की अनुमति दी जाती है। ग्रामीणों के अनुसार माता को कुंवारी देवी के रूप में पूजा जाता है, जिसके चलते यह परंपरा सदियों से चली आ रही है और आज भी पूरी श्रद्धा के साथ निभाई जा रही है।

नवरात्रि में भक्ति का अद्भुत माहौल

चैत्र और शारदीय नवरात्रि के दौरान यहां भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। मंदिर परिसर में भजन-कीर्तन, देवी जागरण और सामूहिक पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाता है। श्रद्धालु नारियल, चुनरी और प्रसाद अर्पित कर अपनी मनोकामनाएं मांगते हैं, वहीं गांव के लोग मिलकर मंदिर की सजावट और प्रसाद वितरण की व्यवस्था भी करते हैं, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहता है।

अष्टमी-नवमी के विशेष आयोजन और आमंत्रण

26 मार्च (अष्टमी) को हवन एवं महाप्रसादी वितरण तथा 27 मार्च (नवमी) को ज्योति कलश विसर्जन किया जाएगा। इस भव्य आयोजन में शामिल होने के लिए आयोजक समिति के अध्यक्ष आनंदराम साहू एवं ग्राम पटेल कीर्तन राम माला ने समस्त क्षेत्रवासियों को सादर आमंत्रित किया है।

आस्था, परंपरा और संस्कृति का जीवंत संगम

मिर्रीटोला स्थित मावली माता मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का अद्भुत संगम है। आज के आधुनिक दौर में भी यहां सदियों पुरानी मान्यताएं जीवित हैं। नवरात्रि के दौरान जब पूरा वातावरण 'जय माता दी' के जयकारों से गूंज उठता है।

ज्योति कलश स्थापना और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला

समितियों के अनुसार 19 मार्च 2026 (गुरुवार) को सुबह 10 बजे ज्योति कलश स्थापना के साथ नवरात्रि महोत्सव की शुरुआत होगी। इसके बाद विभिन्न तिथियों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें 23 मार्च को दिया के अंजोर लोक कला जस झांकी परिवार (पेंड्री, गुण्डरदेही, बालोद), 24 मार्च को सुर सुरभि पंडवानी मंडली (मड़ेली, छुरा, गरियाबंद) तथा 25 मार्च को जय मारदेव मारिया पुरन जस झांकी परिवार (पचपेड़ी, भखारा, धमतरी) अपनी प्रस्तुति देंगे।

ढाई सौ साल से दुर्ग में धार्मिक आस्था का सबसे बड़ा केंद्र चंडी मंदिर

दुर्ग (नवप्रदेश)। शहर में शिवपारा स्थित चंडी मंदिर धार्मिक आस्था का सबसे बड़ा केंद्र है। करीब ढाई सौ साल पहले मंदिर की स्थापना की गई थी। लोगों की मान्यता है कि माता के दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता। लोग अपनी मनोकामना को लेकर हर साल दोनों नवरात्र पर्व में मनोकामना जोत प्रज्वलित कराते हैं। चंडी मंदिर की अलग ही महिमा है।

चंडी मंदिर में मां चंडिका (दुर्गा) की पूजा कुंड स्वरूप में की जाती है। मान्यता है कि मां चंडी यहां मौजूद कुंड में विश्राम कर रहीं हैं। मंदिर में शहर के लोगों की आस्था किसी शक्तिपीठ से कम नहीं है। लोगों की आस्था है कि यहां मांगी गई हर मनोकामना पूरी होती है। मंदिर में नवरात्र के दौरान दर्शन के लिए लोगों की भारी भीड़ जुटती है।

आदि शक्ति मां चंडी की पूजा व दर्शन के लिए दुर्ग शहर के अलावा दूर-दूर से लोग आते हैं। मंदिर में कभी न सूखने वाला चंडिका कुंड है। यहां बारहमास जल भरा रहता है। यहां भैरव जी की प्राचीन प्रतिमा, मां दुर्गा, मां चंडी, मां अन्नपूर्णा, मां काली, लक्ष्मी और सरस्वती की प्रतिमा है। भगवान श्री गणेश की नवीनतम प्रतिमाएं भी विराजित हैं। जन आस्था का केंद्र बन चुके मंदिर को कुछ साल पहले राजस्थान से लाल पत्थर से आकर्षक स्वरूप दिया गया है। मुख्य द्वार पर नक्काशीदार द्वार बनाया गया है। प्राचीन पत्थरों से मंदिर का निर्माण किया गया था, जिसे अब नए स्वरूप में परिवर्तित कर दिया गया है। कुंड के समीप मां चंडिका के साथ दूसरी प्रतिमाएं भी स्थापित की गई है। गर्भगृह की दीवारों पर देवों की आकृति आकर्षक ढंग से उकेरी गई है।

कुछ साल पहले मंदिर परिसर की खुदाई में रिंग वेल (कुआं) व हाथी दांत के बने गहने मिले। पुरातत्व विभाग ने इसके करीब 2600 साल पुराना होने का अनुमान लगाया है। इसकी जानकारी राजपत्र में भी प्रकाशित है। पूर्व में मंदिर में बेहद प्राचीन प्रतिमाएं थी। मंदिर में सालभर श्रद्धालु माता का दर्शन करने आते हैं लेकिन चैत और क्वांर नवरात्र में बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर में करीब 50 साल से जोत कलश जलाए जा रहे है। इसकी शुरुआत 11 जोत कलश से हुई थी। बीते कुछ सालों से क्वांर नवरात्र में मंदिर में 2500 जोत कलश जल रहे थे। इस बार जोत कलश की संख्या बढ़ाई गई है।

चैत्र नवरात्रि: मां सर्वमंगला मंदिर में 9 दिनों तक भक्तों का उमड़ेगा सैलाब

कोरबा/नवप्रदेश। चैत्र नवरात्रि के साथ हिंदू नव वर्ष 19 मार्च को शुरू होगा। त्योहार में अब 1 दिन ही शेष है। ऐसे में जिले भर के देवी मंदिरों में तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। मां सर्वमंगला मंदिर में इसे लेकर तैयारियां हो चुकी है। साफसफाई, रंगरोगन, जोत कलश सजा लिए गए हैं। अलग-अलग कमरों में 9 दिनों तक मां आदिशक्ति के ज्योत जलाए जाएंगे। तैल्स ज्योति के लिए 901 रुपए और घी ज्योति 2100 सौ रुपये के रसीद काटे जा रहे है।

सर्वमंगला मंदिर के पुजारी मयंक पांडे ने बताया कि, तेल और घी के ज्योत जलने है तेल 6 हजार और घी 1500 तक ज्योत जल सकते है। ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका से भी लोग ऑनलाइन फोन कर जोत जलता रहे हैं। आज भी जो इस देश से छोड़कर बाहर निवास करते हैं उनका भी आस्था बना हुआ है ज्योत जलाने के लिए ऑनलाइन सुविधा भी प्रदान की गई है।

भक्तों की सूरक्षा पर दिया जाएगा विशेष ध्यान: मयंक मजराज ने बताया कि, नवरात्रि में भक्तों के लिए सुचारू रूप से सर्वमंगला मां के दर्शन हो सके उसके लिए सुविधा प्रदान किया जा सके उसको ध्यान में रखा जा रहा है। भंडारे, पेयजल समेत जसगीत का आयोजन किया जाएगा। वहीं नवरात्रि में सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस बल भी तैनात किए जाएंगे। उसके अलावा सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं अतिरिक्त और लगाए जाएंगे। किसी तरह कोई हादसा ना हो इसके लिए फायर सेफ्टी की भी व्यवस्था की गई है।

हजारों की संख्या दर्शन करने पहुंचते हैं श्रद्धालु: अगर बाहर से कोई दर्शन करने मंदिर आता है तो इसके लिए ट्रेन, बस और चार पहिया वाहन की भी सुविधा है जो बड़े ही आसानी से इस मंदिर में पहुंचकर दर्शन कर सकते है। शहर में मां सर्वमंगला मंदिर, मां भवानी मंदिर में जहां विविध अनुष्ठान रोजाना सुबह 4 बजे से होंगे, वहीं देवी भागवत व मानस गायन भी होगा। प्रकृति के बीच पहाड़ों पर चौतुरगढ़ पहाड़ी पर स्थित मां महिषासुर मर्दिनी का दरबार हैं जहां उमड़ेंगे श्रद्धालु।

19 मार्च को निकाली जाएगी शोभायात्रा: हिंदू नव वर्ष में शहर के दो हिंदू संगठनों द्वारा भव्य शोभायात्रा निकालने की तैयारी चल रही है। 19 मार्च को शाम 4 बजे से यह शोभायात्रा शुरू होगी। पहली शोभायात्रा कोसाबाड़ी स्थित सिद्ध विराजित मां आदि शक्ति का दरबार मड़वारानी, चौतुरगढ़, कोसगाई व मातिन में है। इन देवी दरबारों तक पहुंचना श्रद्धालुओं के लिए आसान नहीं होता है।

विभिन्न देवी-देवताओं की झांकी होगी प्रदर्शित: मां मड़वारानी के दरबार में तो वाहन से पहुंचा जा सकता है, लेकिन मातिन दाई, चौतुरगढ़ की हनुमान मंदिर से शुरू होगी तो दूसरी शोभायात्रा श्रीराम जानकी मंदिर सीतामढ़ी से। दोनों ही शोभायात्रा में भगवान राम सहित विभिन्न देवी देवताओं की झांकी प्रदर्शित की जाएगी। साथ ही आकर्षक लाइटों के महिषासुर मर्दिनी व कोसगाई दाई मंदिर तक पहुंचने सीधी पहाड़ी की चढ़ाई चढ़नी होती है। इसमें भी मातिन दाई व कोसगाई देवी दरबार तक पहुंचना काफी कठिन होता है। देवपहरी स्थित सिद्धिदात्री का दरबार भी भक्तों के लिए आस्था के साथ ही विशेष रहेगा।

नवप्रदेश संवाददाताओं की रिपोर्ट
- महासमुंद से जयदेव सिंह
- बालोद से सुप्रीत शर्मा
- मुंगेली से सुशील शुक्ला
- दुर्ग से सुमित गुप्ता
- कोरबा से ईश्वर चंद्रा
- छुईखदान से अंकित महोबिया

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा मिनल पब्लिकेशन एंड प्रोडक्शन प्रा.लि. शेड नं. 74 सेक्टर-सी, उरला इंडस्ट्रीयल एरिया से मुद्रित कर रजबंधा मैदान प्रेस काम्पलेक्स रायपुर से प्रकाशित, समाचार संपादक-संदीप दीवान, RNI NO.CHHHIN/2012/41806
(पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए उत्तरदायी) फोन : 0771-3526755, 6262188999, Gmail: navpradesh@gmail.com